www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

क्रांति की रूपरेखा

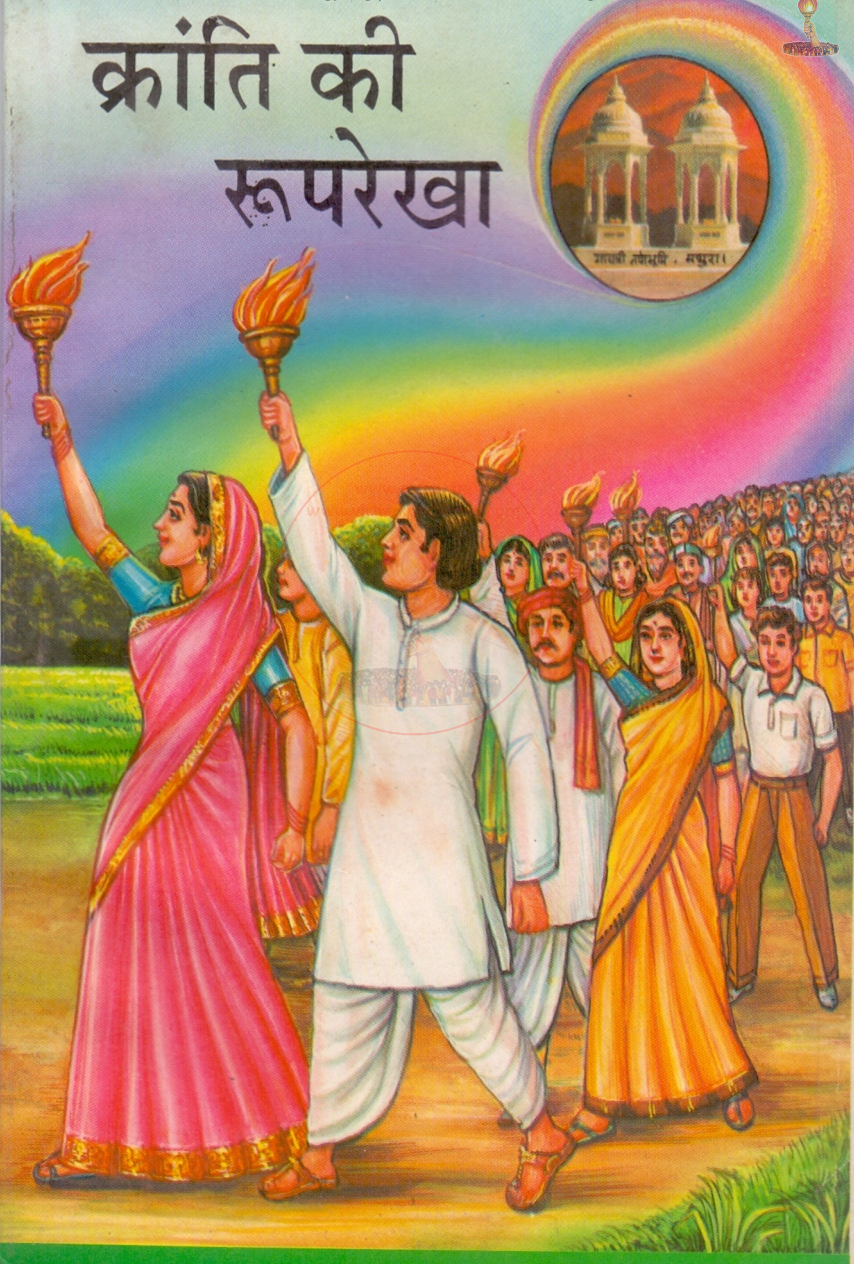

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY
SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

क्रांति की रूपरेखा

लेखक
पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा
फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९
मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९
फैक्स नं०- २५३०२००

पुनरावृत्ति सन् २०११ मूल्य : १८.०० रुपये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अनुक्रमणिका

१.	धार्मिकता में क्रांति के सबल तत्व	३
२.	युग निर्माण परिवार का पुनर्गठन	४
३.	प्रगति के लिए संघर्ष और बलिदान का साहस रखें	९
४.	महाक्रांति सुनिश्चित एवं अति निकट	११
५.	क्रांति निज के अंतराल से आरंभ होगी	१५
६.	क्रांति का सही अर्थ समझें	१९
७.	आंदोलन की आवश्यकता एवं रूपरेखा	२१
८.	आस्तिकता संवर्धन आंदोलन	२५
९.	स्वास्थ्य संवर्धन आंदोलन	३४
१०.	नारी जागरण आंदोलन	४३
११.	सत्प्रवृत्ति संवर्धन–दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन आंदोलन	५२
१२.	कुरीति उन्मूलन आंदोलन	६२
१३.	व्यसन मुक्ति आंदोलन	७२
१४.	विवाहोन्माद प्रतिरोध आंदोलन	८१
१५.	परिजन, प्रामाणिकता सिद्ध करें	९०

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धार्मिकता में क्रांति के सबल तत्व

हमें अपने विकास के लिए इस जीवन के माध्यम से ही, इसे रुपांतरित करके इसे बिल्कुल बदलकर प्रयत्न करना होगा । सामाजिक आदर्शवादी लोग, आदर्श और वास्तविकता के बीच दो व्यवस्थाओं के संघर्ष में विश्वास करते हैं, जो सारे धर्मों का सार है । आवश्यक परिवर्तन और संघर्ष का यह क्रांतिकारी क्रम चलता ही रहता है ।

स्वयं परमात्मा एक सर्वोत्तम क्रांतिकारी है । वह स्रष्टा और पालनकर्ता के साथ विनाशकर्ता भी है । सृजन और विनाश की दैवी शक्ति के परस्पर आश्रित गुण हैं । यदि एक नई और अपेक्षाकृत अच्छी व्यवस्था खड़ी होनी हो तो पुरानी व्यवस्था को तोड़ डालना होगा । हम न केवल आध्यात्मिक जगत में अपितु राजनैतिक, सामाजिक, औद्योगिक जगत में भी ऐसी रूढ़ियों से घिरे हैं जो कभी जीवित थीं, परंतु अब निर्जीव हो चुकी हैं । अब केवल शासक उपायों से काम नहीं चलेगा, इस समय आवश्यकता एक क्रांतिकारी परिवर्तन की, आमूल–चूल उथल–पुथल की है ।

सब सुधार उन आंदोलनकारी, विद्रोही और क्रांतिकारी लोगों द्वारा किए गए हैं, जो पाखण्डों के जगत के विरुद्ध युद्ध करते रहे हैं । वे नए आंदोलन शुरू करते हैं, नए धर्म विज्ञान का प्रतिपादन करते हैं, नए संविधानों की नींव डालते हैं । धर्म इस महत्वपूर्ण कार्य को अपनी महान सामर्थ्य के द्वारा सदा से करता आया है ।

वह सामाजिक आवेश जो इन महान नेताओं को बल और प्रेरणा देता है, धार्मिक उत्साह के विपरीत नहीं है, इतना ही नहीं वह तो उसका स्वाभाविक परिणाम है । सही अर्थों में चेतना अनीति, अनाचार, अन्याय सहन नहीं कर सकती । जब तक मानवता निकृष्ट, कठोर और अपरिष्कृत है उसे पिघलाया और ढाला नहीं जा सकता । ईश्वर पर विश्वास करने वालों की श्रद्धा ही वह स्थिति पैदा करती है जिसके प्रभाव से कठोर हृदय व्यक्ति पर–दुख द्रवित हो उठता है । यही भावना सदुद्देश्य पूर्ण विद्रोह, क्रांति करा सकती है, कराती रही है ।

—डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

युग निर्माण परिवार का पुनर्गठन

युग सेना का संगठन

युग निर्माण परिवार में पूज्य गुरुदेव के संपर्क, सौजन्य एवं भाव भरे आदान–प्रदान के आधार पर करोड़ों प्राणवान परिजनों का परिवार पूज्य गुरुदेव के साथ जुड़ गया । इस परिवार में यों तो अनेकों मणि–माणिक, कमल, परिजात लुके छिपे पड़े थे । अब उनमें से प्रत्येक को सजग और सक्रिय बनाने का निश्चय किया गया है । अब निष्क्रियता को सक्रियता में परिणत करने का विचार है । जो प्रतिभाएँ अब तक पूज्य गुरुदेव के विचारों के प्रति श्रद्धा रखने तक सीमित रहीं, अब उन्हें कंधे से कंधा मिलाकर चलने के लिए कहा जा रहा है । विचार क्रांति, नैतिक क्रांति और सामाजिक क्रांति के तीनों मोर्चों पर संन्नद्धता से खड़ा होना पड़ेगा । अभियान की गतिविधियाँ इन दिनों जिस क्रम से आगे बढ़ रही हैं, उसकी महान भूमिका के संबंध में संदेह की गुंजायश नहीं रहनी चाहिए ।

इन दिनों व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में विविध समस्याएँ और विभिन्न विसंगतियाँ हैं जिनका दुष्परिणाम दुःख, क्लेश, अशांति और उपद्रव के रूप में सामने आता है । इन दुष्परिणामों अथवा समस्याओं का कारण एवं दोष परिस्थितियों के मत्थे मढ़ दिया जाता है, पर वस्तुतः ऐसा है नहीं । परिस्थिति नहीं मनःस्थिति मनुष्य को समस्या ग्रस्त बनाती है । यदि दृष्टिकोण को परिष्कृत कर लिया जाए तो राह के पत्थर को भी सीढ़ी बनाया जा सकता है अन्यथा ऊपर जाने वाली सीढ़ी भी रास्ता रोकने वाली बाधा बन जाती है ।

विचार क्रांति, दृष्टिकोण परिष्कार की व्यापक प्रक्रिया का ही नाम है । दूसरे शब्दों में इसे आध्यात्मवाद को व्यवहारिक जीवन में उतारने की शैली का विस्तार भी कहा जा सकता है । अध्यात्म का अर्थ है सब परिस्थितियों का कारण अपने को समझना । यदि इतना प्रत्येक व्यक्ति करने लगे तो समस्याएँ तुरंत हल हो जाए ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विचार क्रांति का अगला चरण नैतिक क्रांति है । दृष्टिकोण परिष्कार में जहाँ सब स्थितियों के लिए स्वयं को जिम्मेदार समझा जाता है, वहीं नैतिक विकास में अपने व्यक्तित्व की गरिमा अनुभव करने तथा उसका निर्वाह करने की प्रक्रिया चल पड़ती है । हमारे विचारों में क्षुद्रता, संकीर्णता, प्रतिगामिता आती ही इसलिए हैं कि हम अपने स्वरूप को समझ नहीं पाते और परिणामस्वरूप हमारी दिशा भटक जाती है ।

व्यक्ति और समाज के बीच जो संबंध हैं उनके परिष्कृत और उज्ज्वल स्वरूप पर ही सब लोगों की सुख शांति निर्भर है । थोड़े से लोग ईमानदार हों और दूसरों की सुख सुविधाओं का ख्याल रखें, बाकी लोग छीना झपटी और लूट खसोट में लगे रहें, तो सामाजिक सुख–शांति स्वप्न ही सिद्ध होगी । इन स्थितियों के विकास के लिए अनीति अवांछनीयता को निरस्त करने का दायित्व भी नव निर्माण के दिव्य प्रयोजन में लगे परिजनों का है । व्याप्त विकृतियों को निरस्त करने के लिए ईश्वरीय सत्ता के अवतरण का यह आश्वासन 'परित्राणाय साधुनां विनाशाय च दुष्कृतां'' उन्हीं दिव्य आत्माओं द्वारा पूरा होता है जिन्हें नव निर्माण का दायित्व सौंपा गया है ।

अभी जो संगठन चल रहे हैं, उनमें पात्रता की कोई विशेष कसौटी नहीं है । यज्ञ, हवन, जप आदि में जो थोड़ा रस ले सके वे ही गायत्री परिवार के सदस्य मान लिए गए । हमारी आकांक्षा है कि जिनका दृष्टिकोण स्पष्ट है, जो युग निर्माण मिशन का स्वरूप ठीक तरह समझते हैं और सही दिशा में कुछ कदम बढ़ाने के लिए सहमत हैं, उन्हीं को साथ लेकर चला जाए, भले ही उनकी संख्या स्वल्प ही क्यों न हो । संख्या को महत्व न देकर हमें स्तर की ही गरिमा स्वीकार करनी होगी । आत्मा परमात्मा की साक्षी देकर हम लोग जिस महान उद्देश्य के लिए बढ़–चढ़ कर त्याग बलिदान करने के लिए शपथपूर्वक आगे बढ़े हैं उसके लिए स्तर बनाए रहने की परंपरा चलनी ही चाहिए ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एक कार्य जो अभी करना है :

परिजनों से सप्त सूत्रीय आंदोलनों हेतु एक प्रचंड मोर्चा खड़ा करने का आह्वान किया गया था । युग सैनिकों की इस युग सेना के संगठन का भारी उत्तरदायित्व हम अपने ही परिजनों पर सौंप रहे हैं । यह उचित न होगा कि हम प्रामाणिकता की कसौटी पर खोटे सिद्ध हों और कुछ करने का समय आए तो झूठी–सच्ची मजबूरियों का बहाना गढ़ने लगें । हमें आत्मा में यह दृढ़ विश्वास है कि यह आह्वान निष्फल नहीं जाएगा ।

मिशन के सभी संगठनों से जुड़े भाई–बहिन ''क्रांति की रूपरेखा'' पुस्तक पूर्ण मनोयोग से पढ़कर आंदोलनों में सक्रिय योगदान करने की शपथ अपनी अंतरात्मा में ग्रहण करें । आवश्यकतानुसार शपथ पत्र युग निर्माण योजना, मथुरा को पत्र डालकर मँगा लें । दो–दो भाई–बहिनों की टोलियाँ बनाकर विचारशील परिजनों से संपर्क कर, आमंत्रण देकर विचारगोष्ठी में आने का अनुरोध करें । विचार गोष्ठी में आंदोलन की आवश्यकता एवं रूपरेखा पर प्रकाश डाला जाए । अंतरात्मा की सहमति से जो परिजन युग सैनिक की भूमिका निभाना चाहें, उनकी सूची बना लें तथा अन्य सहयोगी समर्थक परिजनों की सूची अलग बना लें । युग सैनिक एवं समर्थकों को ''युग निर्माण योजना'' पत्रिका का सदस्य अवश्य बना लिया जाए, ताकि भविष्य में आंदोलन के संबंध में सभी सूचनाएँ एवं प्रेरणाएँ उन्हें मिलती रहें । यह पत्रिका आंदोलनकारियों के लिए मार्गदर्शिका का कार्य करेगी ।

युग सैनिकों की सूची के सब भाई बहिनों को सुविधानुसार एक कुंडीय यज्ञ में शपथ पत्र भरवाकर यज्ञ भगवान की साक्षी में पूज्य गुरुदेव एवं वंदनीया माताजी के समक्ष समर्पित करा दें । शपथ पत्र एकत्र कर डाक से मथुरा भिजवा दें । इस प्रकार युग सेना का संगठन बन जाएगा । युग सैनिक मिलकर एक परिजन को अपना सेनानायक चुन लें, जो रजिस्टर, पत्र, प्रचार सामग्री आदि का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

रखरखाव करे तथा आंदोलनों में प्रभाव भूमिका निभाए । समय–समय पर आवश्यक मार्गदर्शन आत्मीय अनुरोध द्वारा किया जाता रहेगा । युग सैनिकों के दायित्व शपथ पत्र के पीछे छपे हैं ।

प्रत्येक नायक को अपनी युग सेना में कम से कम २४ युग सैनिकों से शपथ पत्र भरवाने चाहिए । प्रत्येक युग सैनिक को आंदोलनों की ७७ पुस्तकों का सैट १००) रुपए भेजकर मँगाना अनिवार्य है । इन पुस्तकों को झोला पुस्तकालय के माध्यम से अपने समर्थकों को नियमित पढ़ाने का प्रयास करते रहना चाहिए ताकि सभी परिजनों को आंदोलनों की प्रेरणा साहित्य के माध्यम से मिलती रहे । साहित्य से प्रभावित होकर जो समर्थक युग सैनिक बनना चाहें उन्हें पूर्व की भाँति शपथ दिलाकर युग सैनिक के दायित्व निभाने की प्रेरणा दी जाए । ऐसे दस युग सैनिक बनाने का दायित्व निभाना ही चाहिए ।

आर्थिक व्यवस्था :

युग सेना के सैनिक प्रतिमाह अपनी आय का एक अंश स्वेच्छा से देकर तथा उदार दानी भावनाशील परिजनों से आर्थिक सहयोग लेकर युग सेना की आर्थिक व्यवस्था की जाए । आय–व्यय का हिसाब स्पष्ट रखा जाए ।

समस्त शाखाओं द्वारा तहसील स्तर पर और फिर जिला स्तर पर युग सेना का संगठन बनाया जाए । शाखा स्तर पर माह में एक बार युग सैनिकों की गोष्ठी होनी चाहिए । जिसमें सभी सैनिक अपने प्रयासों की रिपोर्ट दें तथा भावी कार्यक्रम भी तय किए जाएँ । प्रतिमाह की रिपोर्ट तहसील, जिला एवं केन्द्र को भेजी जाए । सराहनीय कार्य करने वाले सैनिकों का अभिनंदन पुष्प वर्षा कर तिलक आदि लगाकर शाखा स्तर पर किया जाए । क्षेत्र के विचारशील, समाज सेवी, साहित्यकार, पत्रकार आदि उपयुक्त व्यक्तियों की विचार गोष्ठियाँ आयोजित की जाएँ, जिसमें अपने कार्यक्रमों की जानकारी दी जाए तथा सबके विचार एवं सुझाव नाम पते सहित केंद्र को भेजे जाएँ । स्थानीय अन्य समाज सेवी संगठनों एवं संस्थाओं का सहयोग

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आंदोलनों में लिया जाए । अहं एवं सफलता के श्रेय को ताक पर रखकर उपलब्धियों पर ध्यान दिया जाए । "युग निर्माण योजना" पत्रिका के माध्यम से आंदोलनों के संबंध में जो दिशा निर्देश प्राप्त हों उन पर विचार गोष्ठी में विचार करें और उनका पालन पूर्ण श्रद्धा एवं निष्ठा से करें । आंदोलनों के संबंध में स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार संबंधित राजकीय विभागों का भी सहयोग प्राप्त किया जाए । **सभी परिजनों को केंद्र से स्पष्ट निर्देश दिए जा रहे हैं कि आंदोलन पूर्ण रूपेण अहिंसात्मक होना चाहिए । अवांछनीयता के विरुद्ध असहयोग आंदोलन को प्रमुखता दी जानी चाहिए ।**

इसे सर्वोच्च प्राथमिकता दें :

आज मानवता की सबसे बड़ी आवश्यकता संसार के भावनात्मक नवनिर्माण की है, जिससे व्यष्टि, समष्टि और सृष्टि में सत्प्रवृत्तियों का अभिवर्धन किया जा सके । इसके लिए युग ऋषि पूज्य गुरुदेव के क्रांतिकारी विचारों को लघु पुस्तिकाओं में प्रकाशित किया गया है । सप्तसूत्री आंदोलन हेतु जनमानस के परिष्कार का कार्य इन्हीं पुस्तिकाओं के माध्यम से होगा । ये पुस्तिकाएँ ही आंदोलनों के संबंध में पूज्यवर के विचारों को जन–जन तक पहुँचाने में समर्थ हैं । प्रत्येक आंदोलन पर दस पुस्तिकाओं का सैट प्रकाशित किया गया है । प्रत्येक युग सैनिक अथवा अन्य प्राणवान परिजनों का यह दायित्व है कि इन पुस्तकों के माध्यम से विचार फैलाने में अपने समय, श्रम एवं धन का सदुपयोग अवश्य करें । यह साहित्य जितना अधिक समाज में फैलेगा, संघर्ष की जटिलता उतनी ही क्षीण होती जाएगी । क्रांति यदि जन–जन के मन में प्रारंभ हो गई तो युग सैनिकों को सड़कों पर उतरने की संभावनाएँ कम होती जाएँगी । शमन और दमन में से शमन को प्राथमिकता देनी ही चाहिए । शमन अर्थात् समझाना । महाभारत का युद्ध टालने हेतु कृष्ण ने अंतिम समय तक दुर्योधन को समझा–बुझा कर मनाने का प्रयास किया जब, समझाने के समस्त मार्ग बंद हो जाएँगे तो महाभारत तो फिर होना ही है । ■

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रगति के लिए संघर्ष और बलिदान का साहस रखें

जमीन फाड़ती है, पत्थरों से टकराती है तब कहीं नदी आगे बढ़ पाती और अपने अस्तित्व की रक्षा कर पाती है । मुलायम मिट्टी के बिछौने में पड़ा हुआ बीज यदि ऊपर ढके ढेलों को ढकेलने की हिम्मत नहीं दिखलाता तो बीज से वृक्ष बनने का, एक बीज से सहस्र बीजों में परिणत होने का गौरव उसे कैसे मिल जाता ? आगे बढ़ने वाली जातियों का इतिहास मैंने बहुत ध्यानपूर्वक पढ़ा और उनकी प्रगति का आधार खोजने का प्रयत्न किया तो पाया कि उन्नति के उच्च शिखर पर उन्हें हवा का झोंका नहीं उड़ा ले गया, वरन् उसके लिए उन्हें संघर्ष के बीच बढ़ना और रास्ता बनाना पड़ा । कठिनाइयों से, कुंठाओं से लड़ना पड़ा और यह सिद्ध करना पड़ा कि बाधाओं के मुकाबले उनका साहस और संघर्ष की शक्ति चुक नहीं सकती, तब कहीं उन्हें सफलता का राज सिंहासन मिल पाया ।

सच्चे अर्थों में जीवित वही है जो अत्याचार से लड़ सकता है । अन्याय और अनीति से टकरा सकता है, रोष प्रदर्शित कर सकता है । सामने अनीति होती रहे और चुपचाप खड़े देखते रहें यह नपुंसकता का प्रमुख चिह्न है । भीरुता ग्रस्त जीवन किस काम का ? वीरतापूर्वक जीने की नीति में ही मानवीय प्रगति का आधार छिपा हुआ है । हमें दुनियां की जिन्दादिल कौम की तरह अपना वर्चस्व बनाए रखना है तो इसके अतिरिक्त कोई उपाय नहीं कि हम भीतर और बाहर की बुराइयों से लड़ने के लिए एक तत्पर सिपाही की भांति अपना प्रत्येक मोर्चा मजबूत बनाएं और आज से अभी से अनीति को मिटाने में जुट जाएं ।

आगे बढ़ने की इच्छा और नए जन्म में कोई अंतर नहीं है । अंतरात्मा कहे कि उन्नति करनी चाहिए, तो यह समझना चाहिए कि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तुम्हारी जीवनी शक्ति अदम्य और विश्वास से ओत प्रोत है अब एक ही बात शेष रहती है वह यह कि उठो और बाधाओं को पार करते हुए आगे बढ़ चलो, फिर जब तक मंजिल नहीं मिल जाती, संघर्ष का संबल छोड़ो मत, कायर और नपुंसक मत बनो, वीर और विजयी की भांति मुश्किलों से टकराते हुए आगे बढ़ते ही चले जाओ ।

साहसी व्यक्तियों को शक्ति उधार नहीं मांगनी पड़ती । उनकी अंतरात्मा ही बल प्रदान करती है । नीति के पथ पर बढ़ने वाले को ईश्वर का विश्वास और उसका अनुग्रह काफी है । ऐसा व्यक्ति जब बुराइयों को, अंध परंपराओं और सामाजिक कुंठाओं को रौंदता हुआ आगे बढ़कर चल पड़ता है तो उसका अनुसरण करने वाले अपने आप उपज पड़ते हैं । संघर्ष करने वाला यदि अनीति की दुर्बलता और लौकिक प्रलोभनों से बच जाता है तो फिर संसार की कोई भी शक्ति उसे पराजित करने में समर्थ नहीं हो सकती ।

हम अपने सामने फैले अनाचार से लड़ें, अज्ञान, अंध विश्वास और अंध परंपराओं से लड़ें, ताकत का घमंड दिखाने वाले दुश्मन से लड़ें और कोई उसको सहायता देने आता है उससे भी लड़ें पर इससे पहले आवश्यक है कि हम अपने आपसे भी लड़ें । एक बात याद रखने की यह है कि सच्चाई और ईमानदारी से प्रेरित संघर्ष ही स्थायी प्रगति का आधार है । अकेला संघर्ष ही काफी नहीं, उसमें सत्य का समन्वय भी रहेगा तो ही भीतरी शक्ति का आशीर्वाद मिलेगा ।

अन्याय एक चुनौती है और इंसान की इन्सानियत को ललकारती है । उसका उत्तर कोई क्लीव और कायर व्यक्ति नहीं दे सकता । उस बेचारे को अपने स्वार्थ, अपने प्रलोभनों से ही मुक्ति कहां ? पर जिनमें मनुष्यता शेष है वे अनीति और अन्याय के प्रतिकार के लिए जान भी देना पड़े, तो उसके लिए भी तैयार रहते हैं । मनुष्य जीवन की यही सच्ची शोभा है । निर्जीव बनने से तो मर जाना अच्छा ।

—टी. एल. वास्वानी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

महाक्रांति सुनिश्चित एवं अति निकट

मंत्रिमण्डल जब तक राज–काज ठीक चलाता रहता है तब तक ढर्रा यथावत् चलता रहता है, पर जब अव्यवस्था या अराजकता फैलती है तो फिर राष्ट्रपति शासन लागू होता है और अयोग्य शासकों को पदच्युत करके सत्ता का केन्द्रीयकरण कर लिया जाता है । इन दिनों समष्टि स्तर पर ऐसा ही कुछ होने जा रहा है । तथाकथित प्रगतिशीलता ने मनुष्य को इतना उद्धत और अहंकारी बना दिया है कि अपने निर्धारणों पर पुनर्विचार करने तक को तैयार नहीं है ।

सृष्टा की एक सुनिश्चित प्रक्रिया है कि जब–जब औचित्य व नीतिमत्ता का पराभव और अनौचित्य का विस्तार होगा तब–तब प्रबल प्रतिक्रिया के रूप में सत्ता स्वयं अवतरित होकर रहेगी और तब तक अपने प्रयास जारी रखेगी जब तक कि असंतुलन की धुरी अपना उचित स्थान ग्रहण न कर ले । इस वचनबद्धता पर विश्वास किया जाना चाहिए । अनौचित्य चिरस्थाई नहीं हो सकता उसे घड़ी के पेण्डुलम की तरह एक सीमा तक आगे बढ़ने के बाद वापस लौटना पड़ता है । यह उपक्रम न चले तो संसार का निर्धारित क्रम ही गड़बड़ा जाए । बिना पेण्डुलम की घड़ी का चक्र कैसे घूमे ?

मनुष्य इन दिनों की परिस्थितियों से चिंतित न हो सो बात नहीं है । वह कुछ करने के लिए उपाय भी सोचता है, प्रचलनों का प्रतिगामी प्रवाह इतना द्रुतगामी है कि सुधार परिष्कार का प्रयास कुछ जम ही नहीं पाता । बालू का महल प्रचंड अंधड़ के प्रवाह में यथास्थान टिके रहना तो दूर उड़कर कहीं से कहीं चला जाता है और जहां दीवार खड़ी की गई थी वहां उनके लकीर जैसे निशान भी नहीं दीख पड़ते । अब तक के सुधार–प्रयास वैसे ठोस परिणाम प्रस्तुत नहीं कर सके हैं, जैसी कि आशा अपेक्षा की गई थी । ऐसी दशा में सर्वसाधारण के मन में निराशा उत्पन्न होना स्वाभाविक है ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जो जीतता है उसी का समर्थन करने के लिए दुर्बल मन लुढ़क जाता है । पानी के तेज प्रवाह को चीरते हुए उलटी दिशा में साहसपूर्वक छरझराते हुए आगे बढ़ते जाना किन्हीं सशक्त मगरमच्छों से ही बन पड़ता है । प्रवाह से प्रतिकूल दिशा में कोई बिरले ही चल पाते हैं ।

ऐसी विकट घड़ियों में निराशा के अंधकार को चीरते हुए प्रभातकाल का ब्रह्म मुहूर्त उदय होता है । उसके पीछे–पीछे अरुणोदय की ध्वजा फहराते हुए उषाकाल चला आता है । जब प्रतिकूलता झीनी पड़ती है तो अनर्थ भी अपने कदम पीछे हटा लेता है और उसे चुनौती देने के लिए अकेला मुर्गा भी मैदान में खड़े होकर गर्दन ऊंची उठाकर, तनकर बांग लगाता देखा जाता है । कहाँ व्यापक क्षेत्र में फैला हुआ सफल अंधकार और कहाँ अकेला निहत्था मुर्गा, फिर उसके साहस के पीछे प्रभात के आगमन की सुनिश्चित संभावना ही काम करती है । यह विश्वास उसके मनोबल को सैकड़ों गुना आगे बढ़ा देता है और तीखी बांगें लगाकर सारे संपर्क क्षेत्र को नवजागरण का संदेश देता है, इन दिनों भी यही हो रहा है ।

भ्रष्ट चिंतन और दुष्ट आचरण के विरुद्ध एक प्रचण्ड विचार क्रांति का अवतरण हो रहा है । ऐसा अवतरण जिसने कि किसी समय धरती की प्यास बुझाने के लिए गंगा को स्वर्ग का आनंद छोड़कर धरती पर बहने और खेत–खेत को सींचने के लिए बाधित किया था । ऐसे अवतरण जिसमें कि अरुणोदय होते ही अंधकार के विशाल साम्राज्य को देखते–देखते तिरोहित होना पड़ता है ।

असुरता के शक्तिशाली साम्राज्य पृथ्वी के अधिकांश भाग को शिकंजे में कसे हुए थे पर उसे कुचल देने के लिए जब मनुष्यों तक ने इंकार कर दिया तो रीछ–वानरों की मंडली अपनी अदक्षता से परिचित होते हुए भी मैदान में कूदी और उसने वह कर दिखाया जिस पर सहज विश्वास भी नहीं होता । समुद्र छलांगना, पर्वत उठाना, लंका जलाना क्या एक बंदर के लिए संभव हो सकता है ? इस गुत्थी को बुद्धि न समझ सकती है, न समझा सकती है ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इस गुत्थी के समाधान में वह विश्वास ही काम दे सकता है, जिसका प्रतिपादन है कि अनाचार को एक सीमा से आगे नहीं बढ़ने दिया जा सकता ।

पराजितों की शक्ति भी समवेत होकर कभी कभी अपनी समर्थता का अद्‌भुत परिचय देती है । हारे हुए देवताओं की शक्ति सामर्थ्य को संगठित करके प्रजापति ने देवी दुर्गा की रचना की थी और उसके अदृश्य हाथों ने दृश्यमान महाबलशाली, मधुकैटभ, महिषासुर, शुंभ निशुंभ जैसे दुर्दांत दैत्यों को धरती में मिला दिया था । मनुष्य की हड्डियों से बना वज्र वृत्रासुर जैसे त्रैलोक्य विजयी को चकनाचूर कर सकता है । इस पर बुद्धि भले ही विश्वास न करे पर श्रद्धा को स्वीकार करना पड़ता है कि सत्य और न्याय साथ हों तो सावित्री जैसी महिला काल का रास्ता रोक सकती है । इतना तो भीष्म ने भी मौत से कह दिया था कि बिना उत्तरायण आए मैं तुम्हारे साथ नहीं चल सकता, मरजी हो तो निर्धारित मुहूर्त पर आ जाना तब मुझे तुम्हारे साथ चलने में आपत्ति न होगी ।

सत्य के अपराजित होने पर जिन्हें विश्वास है वे काल से भी मोर्चा लेते रह सकते हैं और यथार्थता को विजयी बनाने के लिए बुद्ध, गांधी की तरह अंतिम सांस पूरी होने तक लड़ते रह सकते हैं । श्रद्धा और विश्वास की शक्ति अजेय जो है ।

इन दिनों जिधर नजर डालकर देखते हैं अनर्थ का ही बोलबाला दीखता है । पाप की विजय दुंदुभी बज रही है । कुंभकरण का खुलता हुआ मुंह असंख्य को चबैने की तरह चबाता दीखता है । पृथ्वी को चुरा ले जाने वाले हिरण्याक्षों की कमी नहीं । इतने पर भी कोई अदृश्य शक्ति कहती है कि उसकी नियत मर्यादाओं का उल्लंघन देर तक नहीं चल सकेगा । आसमान पर कीचड़ उछालने वालों का कुकृत्य उनके चेहरे को ही कालिमा से लपेट देगा ।

बीसवीं सदी के अंतिम दिनों तक अनाचार को जीतते देखा जाता रहा है । मरते समय चींटी के पंख उग आते हैं । मरने वाले

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पतंगे दीपक की लौ बुझाने के लिए कूदते हैं पर अपनी जान गँवा बैठने के अतिरिक्त और कुछ नहीं कर पाते । कौरवों की विशालकाय सेना पांडवों के छोटे से समुदाय के सामने देर तक खड़ी नहीं रह सकी थी । आग की चिनगारी को जब विफरने का मौका आता है तो विशाल क्षेत्र में फैली वन संपदा को दावानल बनकर कुछ ही समय में भस्मसात् करके रख देती है, जब तूफान आते और घटाटोप बरसते हैं तो धरती पर दूर–दूर तक फैले तिनके, कचरे को न जाने कहाँ से उड़ाकर कहाँ पहुँचा देते हैं कि खोजने पर उनका पता नहीं चलता ।

समय चक्र परिवर्तनशील है । वह एक जैसी स्थिति में कभी रहता नहीं । बच्चा किशोर बनता है, किशोर से जवान, जवान से प्रौढ़, प्रौढ़ से जराजीर्ण बनता और मरने के बाद नया जन्म धारण कर लेता है । यह भ्रमणशील गतिचक्र कभी किसी के बूते रुका नहीं है । इन दिनों भी किसी को ऐसे मन छोटा नहीं करना चाहिए कि प्रस्तुत विपन्नताएं, विभीषिकाएं, अवांछनीयताएं, दुष्प्रवृत्तियां आगे भी इसी प्रकार जड़ जमाए बैठी रहेंगी । उनका बदलना निश्चित है । इस निश्चय में इतना और जोड़ लेना चाहिए कि महाक्रांति का समय अति निकट है । इक्कीसवीं सदी अण्डे का छिलका तोड़कर बाहर निकलने का प्रबल पुरुषार्थ कर रही है । उसे मनोरम चूजे की तरह उछलता फुदकता हम सब निश्चित रूप से देख सकेंगे ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

क्रांति निज के अंतराल से आरंभ होगी

जब हम 'क्रांति' शब्द पर विचार करते हैं तो कई बार हमें भ्रांति हो जाती है । हम यह मान बैठते हैं कि क्रांति अर्थात् सामूहिक क्रांति । क्रांति अर्थात् सामाजिक क्रांति । इस संबंध में हमारी अब तक की मान्यता यह रही है कि यह सदा सामूहिक अथवा सामाजिक हुआ करती है, किंतु तनिक गहराई में जाकर यदि चिंतन करें तो ज्ञात होगा कि तथ्य सर्वथा विपरीत है, सच्चाई बिल्कुल भिन्न है । क्रांति सर्वदा वैयक्तिक होती है । समाज में जो दिखाई पड़ता है वह तो मात्र परिवर्तन है । यह वैयक्तिक क्रांति की ही परिणति है । क्रांति सामूहिक कभी होती नहीं । सामूहिक तो मात्र बदलाव होता है ।

समाज व्यवस्था के विकास से लेकर अब तक के इतिहास का अध्ययन–अवलोकन करें, तो विदित होगा कि अब तक अगणित परिवर्तन, अगणित क्षेत्रों में संपन्न हो चुके हैं । अनुसंधान से यह भी स्पष्ट हो जाएगा कि प्रत्येक के मूल में एक मार्गदर्शक सत्ता काम करती रही है, यदि वह सत्ता न होती तो संभवतः वह परिवर्तन भी संपन्न न हो पाते । यहाँ ज्ञातव्य यह भी है कि ऐतिहासिक क्रांतियाँ तभी संभव हो पाई हैं जब अगुआई करने वाले व्यक्ति की विचारधारा समाज के लिए ग्राह्य हो अथवा समाज ने उसे स्वीकार किया हो । उदाहरण के लिए समाज–विकास संबंधी प्रकरण को लिया जा सकता है । जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के मन में विचार आया कि व्यक्ति एक दूसरे से अलग–थलग पड़े रहते हैं । इससे उन्हें अनेकानेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है । यदि उन्हें एक स्थान पर किसी प्रकार इकट्ठा किया और बसाया जा सके तो इससे न केवल एक दूसरे की विचारधारा से अवगत हो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सकेंगे, वरन् परस्पर प्रेम–सौहार्द्र को विकसित कर मिलजुलकर अपनी समस्याओं का हल भी खोज सकेंगे । बस उन्होंने अपना उक्त विचार तत्कालीन यायावरों के समक्ष रखा । उन्हें उनके विचार पसंद आए । उनके स्वयं के विचारों में उथल पुथल मची, उनका रूपांतरण हुआ और क्रांति हो गई–समाज निर्माण संबंधी क्रांति । यदि आदिमकाल में यायावर मनुष्यों के विचारों में परिवर्तन न आया होता, तो ऋषभदेव के उत्कृष्ट विचार भी समाज की स्थपना करने में सर्वथा विफल रहते । यहाँ दृष्टव्य यह है कि क्रांति जैन तीर्थंकर ने नहीं की, उन्होंने तो सिर्फ मार्गदर्शन किया, रास्ता बताया, क्रांति का प्रादुर्भाव तो सही अर्थों में हर एक व्यक्ति के अंतराल में हुआ और वही जब समग्र रूप में सामने आया, तो काया पलट हो गई, परिवर्तन एवं नवनिर्माण हो गया ।

इसी बात का समर्थन करते हुए विवेकानंद कहते हैं कि धार्मिक एवं आध्यात्मिक क्रांति भी तभी शक्य है, जब हम उसके लिए तैयार हों । इससे कम में वह संभव हो नहीं सकती । वे कहते हैं कि आज हमारी मान्यता ही उलटी हो चुकी है । हम सोचते हैं कि इस संसार में संत, सुधारक अथवा कोई ऐसे अवतारी पुरुष आएंगे, जो चमत्कारिक ढंग से दुनिया को बदलकर चले जाएंगे । उनके अनुसार आज समाज की ऐसी भौंड़ी सोच ही उसे समय की मांग के अनुरूप परिवर्तित नहीं होने देने के मूल में छिपी हुई है ।

यह सत्य है कि समय–समय पर अवतारी पुरुषों का इस धरित्री पर अवतरण होता आया है पर समय और समाज का मार्गदर्शन करना ही उनका एकमेव हेतु रहा है । समाज गलत रास्ते पर चल रहा होता है तो वे सही पथ प्रदर्शन करते हैं, किंतु इसके लिए उपकरण तो व्यक्ति को स्वयं बनाना पड़ता है, वे सिद्धांत बता देते हैं पर व्यावहारिक जीवन में उसे उतारना तो समाज के हर एक व्यक्ति को ही पड़ता है, तभी युगांतरकारी परिवर्तन संभव होता हैं । इससे कम में किसी प्रकार की क्रांति अथवा परिवर्तन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

की सहज कल्पना नहीं की जा सकती । भगवान बुद्ध ने सूत्र दिया– ''अप्प दीपो भव'' अपना दीपक आप बनो, दूसरे दीपक के प्रकाश में चलने की कोशिश मत करो, क्योंकि दूसरों का अधिक समय तक साथ न दे सकेंगे । सभी ने उनके इस मर्म को समझा और जुट पड़े अन्तस् के दीप को जलाने में प्रत्येक गृही और शरणागत शिष्यों ने प्रयत्न आरंभ किया तो धर्मचक्र प्रवर्तन हो गया, बौद्ध धर्म का विस्तार हो गया और समस्त मध्यपूर्व एशिया द्वीप इस क्रांति से अछूता न रह सका, उसकी कायापलट हो गई । भगवान महावीर ने कहा–''अहिंसा परमो धर्मः ।'' अहिंसा ही सबसे बड़ा धर्म है । लोगों ने इसे अपने जीवन में उतारना आरंभ कर दिया । बस, क्रांति हो गई, जैन धर्म का जन्म हो गया ।

मूर्धन्य मनीषी एवं दार्शनिक बर्टेण्ड रसेल अपनी पुस्तक 'रिवोल्यूशन एण्ड दि सोसायटी' में इसी बात का अनुमोदन करते हुए लिखते हैं कि क्रांति सदा व्यक्ति में घटित होती है, समाज में तो सुधार ही घट सकता है । वे आगे लिखते हैं कि जो क्रांति व्यक्ति में घटती है वह अध्यात्म कहलाती है । समाज में वह घट नहीं सकती । जो घटती है वह राजनीति होती है । स्पष्ट है, यदि हमें समाज में धार्मिक परिवर्तन लाना है तो प्रत्येक के हृदय में उस महाक्रांति को जन्म देना होगा, जो परिवर्तन के लिए अभीष्ट है ।

लियो टालस्टाय अपनी चर्चित कृति 'समाज निर्माण' के 'नव निर्माण' अध्याय में लिखते हैं कि समाज सुधार के लिए निश्चय ही संसार में संतों और महामानवों का समय समय पर जन्म होता रहता है पर वे भी व्यक्तियों द्वारा इस दिशा में प्रयास पुरुषार्थ के अभाव में ज्यादा कुछ कर नहीं पाते । हां, यदि लोगों ने पराक्रम करना स्वीकार कर प्रयत्नपूर्वक एक कदम आगे बढ़ाना अंगीकार कर लिया, तो यह संभव है कि महापुरुष अपने आत्मबल द्वारा पीछे से धक्का देकर उन्हें दो कदम और आगे बढ़ा दें, किंतु इसका शुभारंभ उन्हें स्वयं से करना होगा, यह दायित्व उन्हें स्वयं निबाहना होगा,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तभी ऐसा शक्य है । इसके अभाव में इनकी दशा उन लोगों जैसी हो जाती है जिनके सामने भोजन परोसा रखा रहता है पर हाथ पैर न चला सकने की स्थिति में भूखे रह जाते हैं । एक उदाहरण देकर वे इसे और स्पष्ट करते हैं । कहते हैं कि जिस प्रकार साइकिल चलाने संबंधी नियमोपनियम सुन, समझ और सीख लेने भर से ही साइकिल चलाना नहीं आ जाता, अपितु इसके लिए उस पर सवार होना और संतुलन बनाए रखना भी जरूरी होता है । आश्चर्य नहीं, इस क्रम में वह दो चार बार गिर पड़े और चोट खा बैठे पर यही गिर पड़ना उसे संतुलन रखना सिखा देता है । ऐसा न हो तो सवार साइकिल चलाना जिन्दगी भर कभी सीख ही नहीं सकता । चढ़ना और गिर पड़ना उसके लिए स्वाभाविक और जरूरी है, उतना ही जरूरी जितना जीवित रहने के लिए प्राणवायु ।

वे आगे लिखते हैं कि जब मैं यह कहता हूँ योगी, यती, संत आदि सभी से उपदेश लेना, तो मेरा तात्पर्य मात्र इतना होता है कि जितने साइकिल के ज्ञाता और निष्णात् हों, पूछ सबसे लेना, चलाने का मर्म प्रत्येक से समझ लेना किंतु इससे यह मत मान लेना कि साइकिल चलाना आ गया । यह तो सिद्धांत है । इसे व्यावहारिक रूप तो साइकिल पर चढ़कर ही देना होगा, तभी कोई साइकिल संचालन में कुशल बन सकता है । ठीक इसी प्रकार संतों के उपदेश सुनकर कोई संत नहीं बन सकता है । जब संत को अपने भीतर पैदा करेगा, तभी वह संत कहला सकेगा ।

वर्तमान समय में टालस्टाय की यह बात अक्षरशः लागू होती है । हम यह समझकर हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं कि प्रज्ञा का समर्थ अवतार इस पृथ्वी पर आएगा और अपनी जादू की छड़ी घुमाकर पलभर में संसार को बदलकर रख देगा । कलियुग को क्षण मात्र में सतयुग–प्रज्ञायुग में परिवर्तित कर देगा, पर यह हमारा भ्रम है । यदि किसी ऐसी समर्थ सत्ता का अवतरण हुआ भी, तो भी यंत्र हमें ही बनना पड़ेगा, हाथ–पैर हमें ही चलाने पड़ेंगे, पुरुषार्थ हमें ही करना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पड़ेगा । समग्र परिवर्तन तभी संभव हो सकेगा । विश्व की बदलती परिस्थितियों को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि उस समर्थ सत्ता का अवतरण हो चुका है और प्रचण्ड विचार प्रवाह के रूप में समस्त पृथ्वी पर वह छा चुकी है । अब इसके आगे का कार्य हमें करना है । इस सशक्त चेतना प्रवाह को अपने अंदर ग्रहण-धारण करना पड़ेगा, जो प्रत्येक के अंतस् में बुद्ध पुरुष पैदा कर सके, अवतार-चेतना को जन्म दे सके, ऋषि उत्पन्न कर सके । महाक्रांति का सूत्रपात तभी संभव है । समग्र परिवर्तन, युग परिवर्तन तभी शक्य हो सकता है, इससे कम में नहीं । ▣

क्रांति का सही अर्थ समझें

कितनी ही प्रथाएं, मान्यताएं एवं व्यवस्थाएं एक निश्चित अवधि के बाद जराजीर्ण हो जाती तथा ऐसा रूढ़ियों का रूप ग्रहण कर लेती हैं जो व्यक्ति और समाज के लिए हर दृष्टि से हानिकारक हैं, पर पुरातन के मोह अथवा स्वार्थों पर आघात पहुंचने के भय से मनुष्य उन्हें छोड़ना नहीं चाहता उनसे चिपका रहता है । फलत: एक ऐसा अवरोध पैदा होता है जो विकास प्रक्रिया का मार्ग अवरुद्ध करता है । अराजकता, अव्यवस्था तथा अवांछनीयता को ऐसी ही परिस्थितियों में आश्रय मिलता है । उनमें सुधार एवं परिवर्तन के लिए जब व्यक्तिगत विरोधात्मक प्रयत्न कारगर सिद्ध नहीं होते तो व्यापक परिवर्तन करने वाली क्रांतियों का जन्म होता है जो आंधी तूफान की भांति आती हैं तथा अपने प्रवाह में उस कचरे को बहा ले जाती हैं जिनके कारण समाज में अव्यवस्था फैल रही थी ।

प्रयास संघर्षात्मक होते हुए भी क्रांति, सृजन की एक ऐसी प्रक्रिया है जो उपयोगी मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना एवं सुनियोजन के लिए आवश्यक है । जनमानस में संव्याप्त भ्रांतियों में से एक यह है कि क्रांति परिवर्तन की हिंसात्मक पद्धति है । क्रांति का स्वरूप हिंसात्मक नहीं है जैसी कि मान्यता अधिकांश व्यक्तियों के मन में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बनी हुई है । क्रांति का अर्थ है—वैचारिक परिवर्तन की एक ऐसी प्रक्रिया जिसमें जनचेतना अनौचित्य का विरोध करने, छोड़ने तथा औचित्य को अपनाने के लिए विवश हो जाए । जो क्रांतियां आरंभ हुई अहिंसात्मक तरीके से, पर आगे चलकर हिंसात्मक रूप में बदल गयीं, वे समाज में विशेष परिवर्तन करने में सफल न हो सकीं । प्रमाण सामने हैं—विश्व की भौतिक एवं सामाजिक क्रांतियों का इतिहास विश्व की अधिकांश क्रांतियां जिन आदर्शों से प्रेरित होकर शुरू हुईं वे आगे चलकर गौण हो गए और एकमात्र सत्ता का परिवर्तन ही प्रमुख लक्ष्य रह गया । सत्ता के संकुचित लक्ष्य तक केन्द्रित हो जाने से क्रांति का अभीष्ट लक्ष्य कभी पूरा न हो सका । निरंकुश तानाशाही शासन से तात्कालिक राहत भले ही मिल गई हो पर क्रांति का समग्र उद्देश्य अपूर्ण ही बना रहा । क्रांति का अर्थ है—व्यक्ति के अंतरंग और बहिरंग का आमूलचूल परिवर्तन । एक ऐसा परिवर्तन जो मनुष्य समुदाय को परस्पर एक दूसरे के निकट लाता तथा बांधता हो । समाज की रुढ़िग्रस्त परंपराओं और कुरीतियों को समाप्त करता तथा स्वस्थ परंपराओं के प्रचलन के लिए साहस दिखाता हो । निःसंदेह क्रांति का स्वस्थ स्वरूप और महान लक्ष्य यही होना चाहिए ।

फ्रांस, इंग्लैण्ड, अमेरिका, रोम तथा रूस की प्रख्यात क्रांतियों के बावजूद यह नहीं कहा जा सकता है कि इन देशों में मानवतावादी व्यवस्था स्थापित हो गई है, असमानता की खाई पट गई है और आपसी स्नेह, सौहार्द्र की मात्रा बढ़ी है । सत्ता परिवर्तन के सीमित आवेग और आवेश तक सीमित रह जाने वाली हिंसात्मक क्रांति की पद्धति से किसी भी समस्या का स्थाई हल नहीं निकल सकता ।

यह तथ्य भली भांति हृदयंगम करना होगा कि परिवर्तन का केन्द्र बिन्दु मनुष्य है । बाह्य परिस्थितियाँ तो आंतरिक परिवर्तन के अनुरूप बनती बदलती रहती हैं । क्रांति की सफलता मनुष्य के आंतरिक परिवर्तन पर अवलंबित है । समग्र क्रांति भी मनुष्य के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भीतर ही संभव है । समाज को तो यथा स्थिति ही प्रिय है—उसकी स्वयं की व्यक्तियों से अलग कोई सत्ता नहीं है । बाह्य परिस्थितियों में परिवर्तन की बात सोचते रहने तथा मनुष्य के आंतरिक परिवर्तन की उपेक्षा करते रहने से कुछ स्थायी हल नहीं निकल सकता । मानव के भीतर बैठे हुए बंदर एवं चीते को क्या मात्र बाह्य दबावों से नियंत्रित, परिवर्तित किया जा सकता है ? क्या मनुष्य के बीच परस्पर सघन आत्मीयता विकसित किए बिना सच्चे समाजवाद की स्थापना संभव है ? हमें स्थाई परिवर्तन के लिए एक ऐसी आध्यात्मिक क्रांति का श्रीगणेश करना होगा, जो अहिंसात्मक हो, वैचारिक हो तथा जिसका लक्ष्य संपूर्ण विश्व हो न कि सीमित व्यक्तियों अथवा एक समाज का मात्र परिवर्तन हो ।

आंदोलन की आवश्यकता एवं रूपरेखा

www.vicharkrantibooks.org

पिछले हजार वर्षों से जिस अज्ञानांधकार युग में हमें रहना पड़ा है उसके फलस्वरूप हमारे चिंतन की दिशा में विकृतियों की मात्रा इतनी बढ़ गई कि प्रगति के लिए किए गए सभी प्रयत्न उल्टे पड़ते हैं । सुधार एवं प्रगति की सभी योजनाएं चारित्रिक दुर्बलता से टकराकर निष्फल हो जाती हैं । कारण की तह तक हमें जाना होगा और भावनात्मक नव निर्माण के लिए एक ऐसा प्रचंड अभियान चलाना होगा जो जनमानस को चरित्र निष्ठा, आदर्शवादिता, मानवीय सद्भावना, प्रचण्ड कर्मठता और औचित्य को अपनाने की साहसिकता से ओतप्रोत कर दें । इस आंदोलन को जितनी सफलता मिलती जाएगी उसी क्रम से प्रगति का पथ प्रशस्त होता चला जाएगा । युग निर्माण आंदोलन अगले दिनों जिस प्रचण्ड रूप से मूर्तिमान होगा, उसकी रहस्यमय भूमिका कम ही लोगों को विदित है, पर यह निश्चित है कि वह आंदोलन बहुत ही प्रखर और प्रचंड रूप से उठेगा और पूर्ण सफल होगा । सफलता का श्रेय किन व्यक्तियों एवं किन संस्थाओं को मिलेगा इससे कुछ बनता बिगड़ता नहीं, पर होना यह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

निश्चित रूप से है । इस उज्ज्वल भविष्य की कृषि को बोने उगाने एवं सींचने के लिए जिन कर्मठ भुजाओं की आवश्यकता है उनकी आज जरूरत पड़ रही है ।

आंदोलन का अंतिम चरण संघर्षात्मक होगा क्योंकि असुरता केवल अनुरोध एवं विनय से मिटने वाली नहीं है । उसके लिए पग–पग पर लड़े जाने वाले संघर्ष की आवश्यकता पड़ेगी । व्यक्तिगत तृष्णा, वासना, संकीर्णता, स्वार्थपरता, विलासिता, कामचोरी और अशिष्टता जैसी बुराइयों से आत्म सुधार एवं आत्म निर्माण के आत्म साधना स्तर पर लड़ा जाएगा । व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र एवं विश्व स्तर की विकृतियों से उसी स्तर के हथियारों से लड़ा जाएगा । समग्र परिवर्तन का उद्देश्य लेकर प्रारंभ किया गया युग निर्माण आंदोलन अब संघर्षात्मक कार्यक्रमों तक आ पहुंचा है । यह इस आंदोलन का अंतिम चरण है जिसमें समग्र परिवर्तन की सुनिश्चित संभावनाएं विद्यमान हैं । इस आंदोलन को दो भागों में विभाजित किया गया है । प्रथम सोपान में रचनात्मक आंदोलन तथा द्वितीय सोपान में संघर्षात्मक आंदोलन रखे गए हैं । इन आंदोलनों की संक्षिप्त जानकारी यहां प्रस्तुत है ।

रचनात्मक आंदोलन

(१) **आस्तिकता संवर्धन आंदोलन** : आस्तिक व्यक्ति ही सच्चा क्रांतिकारी हो सकता है । जबरन थोपा हुआ परिवर्तन स्थायी भी नहीं रहता और परिवर्तनों के प्रति जनश्रद्धा नहीं होती तो जनता में उल्लास, उमंग एवं प्रसन्नता का स्रोत सूखा ही रहता है । भारत की भूमि पर क्रांतिकारी, संत महात्मा ही हुए हैं । कोई भी जन आंदोलन धार्मिकता और आस्तिकता का संबल लिए बिना सफल हो सकेगा इसमें संदेह ही रहता है । इस आंदोलन के योद्धा आस्तिक हों, हर प्राणी में ईश्वर का आभास उन्हें होगा तो हर प्राणी की सेवा ईश्वर सेवा मानकर करेंगे । ऐसे आस्तिक योद्धा जन जन को आस्तिक बनाएं तो आस्तिकता का अमृत, प्रेम, भाईचारा, सहृदयता, दया, करुणा, सहयोग के रूप में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समाज में फैले तो अन्य आंदोलनों को चलने की आवश्यकता ही न पड़े । आस्तिकता की भावनाएँ जहाँ–जहाँ पहुंचती जाएंगी वहां समाज का कायाकल्प होता हुआ नजर आएगा ।

(२) **स्वास्थ्य संवर्धन आंदोलन :** प्रसन्नता से भरे समाज का निर्माण व्यक्तियों के शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक स्वास्थ्य पर निर्भर करता है । समग्र स्वास्थ्य संवर्धन का आंदोलन जन जन तक पहुंचाया जाए । शारीरिक स्वास्थ्य हेतु आहार–विहार, मानसिक स्वास्थ्य हेतु आचार–विचार और आत्मिक स्वास्थ्य हेतु उपासना द्वारा कषाय कल्मष विहीन पवित्रता आवश्यक है । समग्र रूप से स्वस्थ व्यक्ति ही संघर्ष में सहयोगी होते हैं । जन जन को स्वास्थ्य के नियमों की जानकारी देना । स्वस्थ रहने के तरीकों से अवगत कराना इस आंदोलन के मुख्य कार्यक्रम हैं ।

(३) **नारी जागरण आंदोलन :** समाज की आधी जनसंख्या को पददलित और अपंग बना कर पुरुष वर्ग ने कुछ खोया ही है पाया कुछ नहीं है । इस मिशन का यह आंदोलन पश्चिम के 'नारी मुक्ति आंदोलन' से भिन्न है । जहां नारी मुक्ति आंदोलन नारी को मनमाने, उच्छृंखल और अशिष्ट व्यवहार हेतु मुक्त कराता है वहां नारी जागरण आंदोलन समाज को 'नारी' की गौरव गरिमा एवं उसकी आत्मिक संपदा से अवगत कराकर उसे सम्मानित कराता है तथा उस पर लगे अनावश्यक प्रतिबंधों को हटाने की मांग करता है । साथ ही नारी को उसके कर्तव्य के प्रति भी सचेत करता है । बच्चों तथा परिवार में अच्छे संस्कार एवं परंपराएं डालना प्रगतिशील नारी द्वारा संभव है । इस देश की नारी पर से अनावश्यक प्रतिबंध हटा लिए जाएं और उसे आगे बढ़ने का पूरा अवसर प्रदान किया जाए तो समाज का कायाकल्प हो सकता है । २१वीं सदी मातृ सदी के रूप में आ रही है । इसमें नारी केवल अपनी गौरव गरिमा को ही प्राप्त नहीं करेगी वरन् बहुत ही आश्चर्यजनक उपलब्धियां प्राप्त करेगी ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

(१) **सत्प्रवृत्ति संवर्धन–दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन आंदोलन** : समाज में यदि सत्प्रवृत्तियों की हवा फैले तो दुष्प्रवृत्तियों की जड़ उखड़ जाएगी । यह आंदोलन हमें अपने आप से संघर्ष कराएगा । हमें अपनी एवं अपने स्वजनों की दुष्प्रवृत्तियों से संघर्ष करना पड़ेगा । परिवार एवं समाज में फैली मूढ़ मान्यताओं एवं दुष्प्रवृत्तियों के विरुद्ध संघर्ष करना पड़ेगा ।

(२) **कुरीति उन्मूलन आंदोलन** समाज में सभी व्यक्ति विवेक से काम लेकर अपने कार्यों का निर्धारण नहीं करते । अधिकांश व्यक्ति परंपरावादी होते हैं और प्रचलित रीति रिवाजों को बिना तर्क की कसौटी पर कसे अपनाते रहते हैं । बहुत सी कुरीतियां समाज के लिए बहुत हानिकारक भी हैं । इन कुरीतियों को जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए प्राणवान जुझारू एवं संघर्षशील व्यक्तियों की आवश्यकता होगी ।

(३) **व्यसन मुक्ति आंदोलन** : तंबाकू, शराब आदि व्यसन समाज को खोखला किए दे रहे हैं । मनुष्य को शारीरिक एवं मानसिक रूप से अस्वस्थ बनाने में इन व्यसनों की बहुत भूमिका है । पारिवारिक कलह एवं विनाश में तथा समाज में व्याप्त अपराधों के लिए व्यसन मुख्य रूप से जिम्मेदार हैं । समाज को यदि व्यसन मुक्त बनाया जा सका तो नव निर्माण का उद्देश्य पूरा होता हुआ दिखाई देगा ।

(४) **विवाहोन्माद प्रतिरोध आंदोलन** : विश्व के हर धर्म तथा हर देश में विवाह एक बिना खर्च वाला सामान्य सा कृत्य है लेकिन दुर्भाग्यवश हिन्दू समाज में इस अत्यंत महत्वपूर्ण धार्मिक संस्कार को इतनी विकृतियों से भर दिया गया है कि इस संस्कार की मूल भावनाएं बिल्कुल समाप्त हो गई हैं । दहेज जैसे पिशाच ने इस यज्ञ में हड्डियां डाल कर जो विघ्न डाला है उससे इस यज्ञ की रक्षा हेतु राम और लक्ष्मण जैसे वीर और क्रांतिकारियों की आवश्यकता होगी । खर्चीली शादियां हमें दरिद्र और बेईमान बनाती हैं ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आस्तिकता संवर्धन आंदोलन

आस्तिकता मनुष्य समाज की सुख और शांति का मूलाधार है । वह जीवन के अंतराल में प्रविष्ट होकर सही प्रेरणा, सही मार्गदर्शन देती है । व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पूर्ति से लेकर सामाजिक कर्तव्यों के पालन तक की आंतरिक शिक्षा का बोध कराने वाली भी वही है । इस बात को अब वैज्ञानिक भी मानने लगे हैं कि संसार में एक ऐसी चेतन शक्ति काम कर रही है, जो वैज्ञानिकों की पहुँच से बहुत आगे है । उसे समझना मनुष्य के कल्याण के लिए बहुत जरूरी है । अणुजगत के पीछे उसे चलाने वाली चेतन शक्ति का अवगाहन करके मनुष्य जाति अपने विकास का एक नव पथ बना सकती है । मनुष्य समाज की व्यवस्था और लोगों की दूषित मनोवृत्तियों पर नियंत्रण के लिए अंतःदर्शन और आत्म नियंत्रण की आवश्यकता की पूर्ति आस्तिकता से ही संभव है ।

'ईश्वर है'—केवल इतना मान लेना मात्र ही आस्तिकता नहीं है । ईश्वर की सत्ता में विश्वास कर लेना भी आस्तिकता नहीं है, क्योंकि आस्तिकता विश्वास नहीं अपितु एक अनुभूति है । ईश्वर है यह बौद्धिक विश्वास है । ईश्वर को अपने हृदय में अनुभव करना, उसकी सत्ता को संपूर्ण चराचर जगत में ओतप्रोत देखना और उसकी अनुभूति से रोमांचित हो उठना ही सच्ची आस्तिकता है । आस्तिक व्यक्ति जगत को ईश्वर में और ईश्वर को जगत में ओत–प्रोत देखता है । वह ईश्वर को अपने से और अपने को ईश्वर से भिन्न अनुभव नहीं करता । उसके लिए जड़ चेतनमय सारा संसार ईश्वर रूप ही होता है । वह ईश्वर के अतिरिक्त किसी भिन्न सत्ता अथवा पदार्थ का अस्तित्व ही नहीं मानता ।

आस्तिकता से धर्म प्रवृत्ति का जागरण होता है, किंतु यह आवश्यक नहीं कि जो धर्म–कर्म करता हो वह आस्तिक भी हो । अनेक लोग प्रदर्शन के लिए भी धर्म कार्य किया करते हैं । वे ईश्वर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

के प्रति अपना विश्वास, श्रद्धा तथा भक्ति को व्यक्त भी किया करते हैं, किंतु उनकी वह अभिव्यक्ति मिथ्या एवं प्रदर्शन भर ही हुआ करती है । ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार लोग आवश्यकता, परिस्थिति, शिष्टाचार अथवा स्वार्थवश किसी के प्रति भाव न होने पर भी स्नेह, प्रेम, श्रद्धा अथवा भक्ति दिखाया करते हैं । आस्तिकता से उत्पन्न धर्म में प्रदर्शन संभव नहीं। जो अणु अणु में ईश्वर की उपस्थिति अनुभव करता है, उससे प्रेम रखता है, वह मिथ्या प्रदर्शन का साहस कर ही नहीं सकता । सच्चे धार्मिक, जिनकी धार्मिकता का जन्म आस्तिकता से होता है, स्वतः धर्माचरण में प्रवृत्त रहते हैं । उन्हें प्रयत्नपूर्वक वैसा करने की आवश्यकता नहीं होती । जीव मात्र को आत्मवत् तथा संपूर्ण जगत को परमात्मा का रूप मानने वाले धर्मात्मा से असंगत, अनुचित अथवा अकरणीय कार्य होना संभव नहीं ।

एक क्षण भी बाहरी धर्म कर्म न करने वाला व्यक्ति भी यदि मनुष्यों का ठीक ठीक मूल्यांकन करता है, समाज के प्रति अपने दायित्व का पालन करता है, सब को ईश्वर का रूप मानकर ईर्ष्या द्वेष नहीं रखता, जिसका हृदय प्रेम सहानुभूति तथा संवेदना से भरा है, वह ही सच्चा धार्मिक तथा आस्तिक है । सच्ची आस्तिकता में जहाँ एक प्रेरणा होती है, वहाँ एक आकर्षण भी होता है । आस्तिकता जहाँ मनुष्य को ईश्वर की ओर प्रेरित करती है, वहाँ ईश्वरीय तत्व को भी मनुष्य की ओर आकृष्ट करती रहती है, जिससे शीघ्र ही मनुष्य तथा ईश्वर के बीच की दूरी समाप्त हो जाती है । आस्तिक भगवान के और भगवान आस्तिक के द्वार तक पहुँचने के लिए एक साथ चल पड़ते हैं । अपने उत्तरदायित्व का ध्यान रखते हुए परमात्मा आस्तिक व्यक्ति को सदा ही असत् कर्मों से बचाकर सत्कर्मों की ओर चलाया करता है । अपने अस्तित्व को परमात्मा में विलीन कर देने पर आस्तिक को जीवन की सफलता असफलता की चिंता नहीं रहती । आस्तिक भाव में उतर जाने का अर्थ है—परमात्मा की गोद में चला जाना, जहाँ केवल आनंद ही आनंद है ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सच्चा आस्तिक प्रत्येक प्राणी को अपना भाई बहन ही मानता और तदनुरूप प्रेम व्यवहार करता है । संपर्क में आने वाला जब प्रत्येक व्यक्ति अपना भाई बहन ही है, तब सच्चा आस्तिक उनसे कठोर, क्रूर अथवा छल कपटपूर्ण व्यवहार किस प्रकार कर सकता है ? वह तो सबसे प्रेमपूर्ण निश्छल व्यवहार ही करेगा । बंधु भाव से प्रेरित वह प्रत्येक की सहायता करने को हर समय तैयार रहेगा । वह किसी से स्वार्थ अथवा विश्वासघातपूर्ण व्यवहार कदापि नहीं करेगा । इस प्रकार सच्चा आस्तिक सहज ही में आत्म कल्याणकारी यज्ञ भावना का अधिकारी बन जाता है । काम, क्रोध अथवा लोभ के शत्रु तभी आक्रमण करते हैं जब मनुष्य का मन मलीन अथवा अरक्षित रहता है । आस्तिक व्यक्ति का ईश्वरीय विश्वास एवं परमात्मा की अनुभूति उसके हृदय को प्रसन्न एवं उज्ज्वल बनाने में सहायक होते हैं । उसकी भावनाओं में हर समय परमात्मा का निवास रहता है । उसके सुरक्षित हृदय पर आसुरी वृत्तियाँ आक्रमण नहीं कर पातीं ।

आस्तिकता सदाचार की जननी है । जो आस्तिक होगा, जो सब में और सब जगह भगवान की उपस्थिति देखेगा, वह कोई दुराचार करने का साहस ही न करेगा । सदा सर्वदा ऐसे ही कार्य करने और भावनाएँ रखने का प्रयत्न करेगा जो सच्चे आस्तिक, ईश्वर के अनुयायी के अनुरूप हों । ईश्वरीय निर्देश एवं आदर्श सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् के अतिरिक्त कुछ हो ही नहीं सकते । प्रेम, सहानुभूति, सहयोग, सत्य तथा सेवा भाव आस्तिक के विशेष गुण हैं । चोरी, मक्कारी, छल–कपट, ईर्ष्या–द्वेष, लोभ, मोह, काम आदि की दूषित प्रवृत्तियों से आस्तिक व्यक्ति का कोई संबंध नहीं रहता । आस्तिकता द्वारा ईश्वर से भावनात्मक संपर्क रखने वाला तो उसके अनुरूप ही अपने जीवन को उन्नत एवं उत्कृष्ट बनाने का प्रयत्न करेगा । आज संसार जिस शांति व्यवस्था तथा सहयोग भावना की आवश्यकता अनुभव कर रहा है वह आस्तिकता द्वारा सहज ही प्राप्त हो सकती है ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यदि संसार का प्रत्येक व्यक्ति पूर्ण रूप से आस्तिक होकर ईश्वरीय आदर्श पर चलने लगे तो न कोई किसी को सताए और न प्रवंचित करने का प्रयत्न करे । हर कोई अपनी सीमाओं में संतुष्ट होकर शांतिपूर्वक जीवनयापन करे । आज संसार में फैला हुआ सारा अनाचार इसी कारण है कि लोग केवल अपने स्वार्थ को देखते हैं किसी दूसरे की सुख सुविधा अथवा अधिकार सीमा का ध्यान नहीं रखते । यदि आज आस्तिकता का व्यापक प्रचार हो जाए, लोग ईश्वर को सच्ची भावना से जानने मानने और उससे डरने लगें तो कल ही सारे अपराधों का अंत हो जाए और चिरवांछित रामराज्य साकार हो उठे ।

अपने जीवन में ईश्वर की विद्यमानता देख सकना कुछ भी कठिन नहीं है । उत्कर्ष एवं आत्म गौरव को प्राप्त करने की आकांक्षा स्पष्टत: यही अंगुलि निर्देश करती है कि पशु स्तर का जीवनयापन अपर्याप्त है, अतृप्तिकर है, अवांछनीय है । इस स्थिति से आगे बढ़ा जाए, ऊँचा उठा जाए । मात्र जीवात्मा न रहकर महानात्मा, देवात्मा एवं परमात्मा बनने का सौभाग्य प्राप्त किया जाए । भटकाव के कारण यह लाभ भौतिक वस्तुएँ समेटने और दूसरों को चमत्कृत करने वाले जादुई विलास वैभव के संग्रह में इस लक्ष्य की पूर्ति सोची जाती है । बड़प्पन के ठाठ रोपे जाते हैं और उस उन्माद में कुमार्ग अपना कर प्रगति के नाम पर पतन के गर्त में गिरा जाता है । यदि यथार्थता को समझा जा सके तो यह आत्मिक आकांक्षा संपन्नता संग्रह करने के लिए, महानता संपादित करने के लिए, मार्गदर्शन करती दिखाई पड़ेगी । उत्कर्ष की उमंग के रूप में अपने भीतर हम ईश्वरीय सत्ता को दिशा निर्देश करती हुई देख सकते हैं ।

विवेक के रूप में उचित को अपनाने और अनुचित से बचने की प्रक्रिया भी ईश्वर हर घड़ी पूरी करता है । प्रत्येक सत्कर्म हमें आंतरिक संतोष देता है और प्रत्येक दुष्कर्म के प्रयास से छाती धड़कती है । अंतर्द्वन्द्व खड़ा होता है और पैर काँप जाते हैं । औचित्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

के लिए प्रोत्साहन उत्पन्न करने वाले इस अंतःप्रकाश को ईश्वरीय सत्ता की विद्यमानता के रूप में देखा जा सकता है ।

करुणा, प्रेम, दया, श्रद्धा जैसी सद्भावनाएँ असीम–आत्म संतोष प्रदान करती हैं । इन्हें चरितार्थ करने के लिए कुछ कष्ट सहना, संयम बरतना और त्याग करना पड़ता है, तो भी उससे दुख नहीं संतोष ही होता है । इसे ईश्वरीय चेतना का दिव्य शिक्षण कह सकते हैं । समर्थन शाश्वत है । चोर भी चोरी के सिद्धांत का समर्थन नहीं कर सकता, वह अपने घर चोर को नौकर रखने के लिए तैयार न होगा । यह सत्य की, ईश्वर की दिग्विजय है । हमने निरंतर ईश्वरीय वाणी की अवज्ञा और प्रेरणा की अवहेलना की है सो आदत भी वैसी बन गई है । धूल जमते–जमते दर्पण धुंधला हो गया है अन्यथा हर कोई अंतरात्मा के भीतर महानता की दिशा में बढ़ चलने की प्रेरणा के रूप में कोई भी, कभी भी जीवंत किंतु धूमिल बनाई गई चेतना का दर्शन कर सकता है ।

आस्तिकता का फलितार्थ है सर्वव्यापी परमेश्वर सत्ता का दर्शन, विराट् ब्रह्म का दिव्य साक्षात्कार करने वाले को जड़ पदार्थों का सदुपयोग और चेतन प्राणियों का सद्भाव भरा सहयोग करने के अतिरिक्त कोई रास्ता रहता ही नहीं । ईश्वर भक्त को अपना यही संसार विशालकाय शिवलिंग की तरह सुविस्तृत शालिग्राम की तरह दीखता है । गोलाकार शिवलिंग और शालिग्राम की प्रतिमाएँ विराट् ब्रह्म का स्मरण दिलाती हैं । भगवान कृष्ण ने अर्जुन को गीता सुनाते समय और माता यशोदा को मिट्टी खाने के अपराध में मुँह खोल कर दिखाते समय अपना यही विराट् रूप दिखाया है । भगवान राम ने कौशिल्या को पालने में झूलते समय और काकभुशुण्डि के उदर प्रवेश करने का अवसर देकर इसी विराट् की झाँकी कराई थी । तुलसीदास–'सियाराम मय सब जग जानी' के रूप में इसी ब्रह्म का दर्शन करते थे । श्रुवि ने ''ईशा वास्यमिदं सर्वम्'' के रूप में ईश्वर के सर्वव्यापी रूप का दिग्दर्शन कराया है । आस्तिकता की प्रेरणा इस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विराट विश्व को सींचने सँजोने की, पूजा आराधना में निरत रहने की दिशा में चल पड़ने के लिए प्रोत्साहन देती है ।

आस्तिकता की मान्यता को सुस्थिर बनाने के लिए ही पूजा उपासना के विभिन्न कर्मकाण्ड बनाए गए हैं । हम मानवी आदर्शों से भटककर पशु प्रवृत्तियों में लोटपोट रहते हैं । इसी अवांछनीय स्थिति से उबारने के लिए प्रार्थना की पुकार की जाती है । ईश्वर के साथ जीव की असीम दूरी को निकटता, घनिष्ठता में परिणत करने के लिए उपासना की जाती है । उसी की ईश्वर भक्ति सार्थक है, जो कर्मफल पर अटूट विश्वास करे और अपने जीवन को आदर्श बनाने की शपथ ग्रहण करे । आस्तिक वही है जो चरित्रनिष्ठ रहता है और लोक मंगल के लिए बढ़–चढ़ कर अनुदान प्रस्तुत करता है । ऐसी वास्तविक ईश्वर भक्ति ही अमृत, पारस और कल्पवृक्ष की तरह मनुष्य को सर्व संपन्न बनाती है और उसी आधार पर जीव को ब्रह्म, नर को नारायण, पुरुष को पुरुषोत्तम, लघु को महान और दीन दुर्बल को ऋद्धि सिद्धि संपन्न बनने का अवसर मिलता है ।

आज की परिस्थितियों में आस्तिकता एवं ईश्वर की नई प्रगतिशील व्याख्या करना अनिवार्य हो गया है । पारंपरिक शब्दावली में इनसे वही भाव निकलता है जो आप्त वचनों की दुहाई देते हुए अगणित धर्मोपदेशक कहते रहते हैं । वस्तुतः आस्तिकता ईश्वरीय अनुशासन को कूट कूट कर अपने चिंतन, चरित्र एवं व्यवहार में समाविष्ट कर लेने का नाम है । जो आस्तिक है वह भले ही मंदिरों, पूजागृहों में न जाता हो, पर यदि वह परमसत्ता का अनुशासन जीवन में उतारता है, जीवन सही ढंग से जीता है, सृष्टि को एक उद्यान मानते हुए माली की तरह उसकी सिंचाई करता है, तो वह सच्चे अर्थों में आस्तिक है । नास्तिक तो वह है, जो बाह्याडंबर कितने ही रचता हो, दीखता तो धार्मिक हो पर जीवन के किसी भी कोने से आदर्शवाद, सच्चरित्रता, उत्कृष्टता का एक अंश भी न झलकता हो ।

ईश्वर वह निराकार ब्राह्मी सत्ता है, जो सत्प्रवृत्तियों के, आदर्शों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

के, सद्गुणों के, श्रेष्ठता के समुच्चय के रूप में तथा समष्टिगत अनुशासन के रूप में हमारे चारों ओर विद्यमान है । वह सत्ता हमें दिखाई भले न दे, पर हमारे रोम–रोम में बसकर हमें प्रतिक्षण अपने अस्तित्व का आभास कराती है । यदि ईश्वर की इस रूप में हमें सतत् अनुभूति होने लगे तो हमारे जीवन के क्रियाकलाप बदल जाएँगे, हम सही अर्थों में आस्तिक कहलाने योग्य होंगे ।

घर–घर में आस्तिकता का वातावरण बनाने के लिए विभिन्न कार्यक्रम क्षेत्र में आंदोलन के रूप में तेजी से चलाए जाने हैं । इस आंदोलन में सभी भाइयों का सक्रिय सहयोग तो मिलेगा ही लेकिन इस आंदोलन की जिम्मेदारी प्रमुख रूप से बहिनों को ही सौंपी जा रही है । आस्तिकता संवर्धन आंदोलन में निम्नलिखित कार्यक्रमों को प्रांरभ करना है ।

(१) **घर मंदिर**–हर घर में देवस्थापना करा कर गायत्री साधना प्रारंभ कराने का प्रयास किया जाना चाहिए । प्रायः हर परिवार में एक देवालय होता है, उसमें पंचदेव के चित्र की स्थापना करानी है ।

(२) **मंत्र जप अथवा लेखन**–विश्व कल्याण के लिए समर्पित गायत्री मंत्र जप अथवा भगवन्नाम जप अथवा अपने संप्रदाय अथवा धर्म के मंत्र का जप करने की प्रेरणा हर किसी को देनी है । सबके उज्ज्वल भविष्य की प्रार्थना सभी को अपनी उपासना में जोड़ने का अनुरोध करना है । मंत्र लेखन का बहुत महत्व बताया गया है । यथासंभव मंत्र लेखन कराने का प्रयास करना चाहिए ।

(३) **आत्मबोध–तत्वबोध साधना**–गायत्री लघु पुस्तकमाला में 'प्रज्ञायोग की साधना' पुस्तक में आत्मबोध–तत्वबोध की साधना दी गई है । सामयिक परिस्थितियों और आवश्यकताओं को देखते हुए सर्वसाधारण के लिए ऐसी साधना का निर्धारण जरूरी था जो सर्वसुलभ, समय के अनुरूप और पुरातन लक्ष्य को प्राप्त कराने में समर्थ हो, यही है आत्मबोध–तत्वबोध साधना । इस साधना का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

व्यापक प्रचार प्रसार किया जाए । जन–जन को प्रेरित कर यह साधना करने का अनुरोध किया जाए ।

(४) **बलिवैश्व यज्ञ**–पाकशाला में तैयार भोजन की पाँच आहुतियाँ यज्ञ देव को समर्पित करने की क्रिया का व्यापक प्रचार प्रसार होना चाहिए । इस बलि वैश्व यज्ञ की क्रिया विस्तार से 'महिलाओं की गायत्री साधना' पुस्तक में दी गई है । यह छोटा सा यज्ञ विधान बहुत फलदायी है । विभिन्न संप्रदायों एवं धर्मों के व्यक्तियों को यज्ञ का वास्तविक स्वरूप समझाने हेतु 'हमारा गायत्री यज्ञ अभियान' पुस्तक उपयोगी है । यज्ञ मनुष्य के साथ अनिवार्य रूप से जुड़ा है । उन्हें भी बलिवैश्व यज्ञ का महत्व समझाया जाना चाहिए ।

(५) **ज्ञान मंदिर स्थापना**–हर परिवार में देव मंदिर के साथ साथ ज्ञान मंदिर (पुस्तकालय) का होना अनिवार्य है । पारिवारिक कष्ट, क्लेश, विपत्ति अथवा अवसाद के समय देव मंदिर में की गई प्रार्थना कर्मफल के सिद्धांतानुसार सुनी भी गई है, नहीं भी सुनी गई है, लेकिन ज्ञान मंदिर में अपने कष्ट निवारण हेतु किया गया स्वाध्याय महापुरुषों के मार्गदर्शन से शांति, साहस, धैर्य एवं सत्प्रेरणा के रूप में परिलक्षित होगा । हर घर में ज्ञान मंदिर के रूप में यथाशक्ति मूल्य की पुस्तकों का सैट स्थापित कराने का प्रयास किया जाना चाहिए ।

(६) **झोला पुस्तकाल**–हमारे हर कार्यकर्त्ता भाई बहिन को प्रज्ञा लघु पुस्तकमाला की पुस्तकें अपने झोले में रखकर संपर्क हेतु घर–घर जाना चाहिए तथा उन्हें पुस्तकें पढ़ने हेतु देने एवं वापस लेने का क्रम बनाना चाहिए । इसके लिए किसको कौन सी पुस्तक दी है एक डायरी में नोट करके रखना चाहिए । पुस्तक वापस लेने अथवा उसका मूल्य प्राप्त करने में ढिलाई नहीं बरतनी चाहिए । स्वयं भी पढ़कर झोला पुस्तकालय में रखें ।

(७) **ज्ञान रथ**–चार पहिए का पीला सुन्दर मंदिर जैसा ज्ञान रथ बनवा कर उस पर साहित्य सजाकर मुख्य बाजारों में घुमाना चाहिए । उत्सव, पर्व एवं मेलों में ज्ञान रथ चलाया जाए तथा बिक्री

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

द्वारा युग साहित्य जन–जन को उपलब्ध कराया जाए । रविवार अथवा छुट्टी के दिन ज्ञानरथ अवश्य चलाया जाए । साहित्य की बिक्री हो या न हो इसकी चिंता न करें । ज्ञान रथ स्वयं में ज्ञान यज्ञ के प्रयोजन को पूरा करता है । जब प्रतिष्ठित परिजन ज्ञानरथ चलाएँगे तो क्षेत्र में ज्ञान यज्ञ की लहर फैलेगी, एक वातावरण बनेगा ।

(८) **परिवार संस्कार मंदिर**–हर परिवार में संस्कारों का प्रचलन चलते रहना चाहिए । पुंसवन, नामकरण, अन्नप्राशन, मुंडन, विद्यारंभ, यज्ञोपवीत, दीक्षा, विवाह, वानप्रस्थ, जन्मदिन व विवाह दिन संस्कार हर परिवार में कराने का प्रयास किया जाए । परिवार में सभी व्यक्तियों के जन्मदिन, विवाह दिन, उत्सव, पर्व एवं त्यौहारों के माध्यम से यज्ञ संस्कार आदि के कार्यक्रम होते रहें तो वर्ष में लगभग १२ कार्यक्रमों के माध्यम से परिवार का वातावरण स्वर्ग समान बनाने में सहायता मिलेगी ।

(९) **यज्ञ एवं धार्मिक आयोजन**–यज्ञ एक सामूहिक धर्मानुष्ठान है । इसके माध्यम से जन जागरण कर जन साधारण में आस्तिकता का वास्तविक अर्थ समझाया जाए । विचार गोष्ठियाँ आयोजित की जाएँ । धार्मिक प्रवचन, कथा एवं सत्संग से आस्तिकता का वातावरण बनाया जाए ।

(१०) **युग साहित्य का स्वाध्याय एवं वितरण**–व्यक्ति, परिवार एवं समाज में आस्तिकता का वातावरण बनाने हेतु युग साहित्य का विशेष महत्व है । परम पूज्य गुरूदेव ने व्यक्ति में सच्ची आस्तिकता पैदा करने के लिए प्रभावशाली साहित्य का सृजन किया है । युग ऋषि के ऐसे ही विचारों को संकलित कर आस्तिकता संवर्धन सैट की पॉकेट बुक्स को बिक्री द्वारा, झोला पुस्तकालय अथवा ज्ञान मंदिर स्थापना द्वारा जन–जन तक पहुँचाया जाना अति आवश्यक है । हर परिवार में इन पुस्तकों के स्वाध्याय का क्रम प्रारंभ करना चाहिए ।

(११) **तुलसी बिरवा रोपण**–तुलसी और पीपल का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक महत्व है । अतः घर घर में तुलसी का थामला अवश्य होना चाहिए । परिजनों को अपने अलावा अन्य घरों में भी तुलसी के पौधे लगाने चाहिए । तुलसी के पौधे परिवार में स्वच्छता एवं आस्तिकता का वातावरण बनाने में बहुत उपयोगी हैं । तुलसी की रोग निवारक क्षमता सर्वविदित है ।

(१२) **भोजन, जल और स्नान**–हर व्यक्ति को यह समझाया जाए कि भोजन से पहले तीन बार गायत्री मंत्र बोल कर भोजन ग्रहण करें । जल को गंगा जल की भावना के साथ राम नाम लेकर ग्रहण करें एवं स्नान के समय गंगा जल में स्नान की भावना के साथ स्नान करें तथा स्थूल, सूक्ष्म एवं कारण तीनों शरीरों के पवित्र होने की भावना करें । ▣

स्वास्थ्य संवर्धन आंदोलन

मनुष्य की आकांक्षा अनुकूल परिस्थितियों तथा सुविधाजनक समृद्धियों के लिए रहती है । इसके लिए प्रबल पुरुषार्थ, दूरदर्शी चिंतन एवं अटूट संकल्प की आवश्यकता होती है । यह तीनों ही स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर से बन पड़ते हैं । उन्हीं के द्वारा कठिनाइयों का निराकरण और वैभव विभूतियों की उपलब्धियों का अर्जन संभव होता है । इन क्रियाकलापों को स्वस्थ शरीर ही कर पाते हैं । यदि वे रुग्णता से ग्रसित हों तो कुछ कर सकना तो दूर पीड़ा सहते, धन खर्च करते, दूसरों का सहारा ताकते, भारभूत होकर जीते और ज्यों का त्यों करके जिंदगी के दिन पूरा करते हैं । इसलिए ''पहला सुख निरोगी काया'' माना गया है । आरोग्य को ही धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष का मूल माना गया है । मनुष्य की वही पहली और प्रमुख आवश्यकता है ।

आरोग्य का अर्थ केवल स्थूल शरीर का रोग मुक्त होना ही नहीं है । सूक्ष्म शरीर की चिंतन चेतना एवं कारण शरीर की भाव मान्यता भी सीधी और सही होनी चाहिए । ऐसी परिस्थिति में ही मनुष्य कुछ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

महत्वपूर्ण पौरुष कर सकने एवं कहने लायक सफलताएँ प्राप्त कर सकने की स्थिति में होता है । इसलिए किसी महान लक्ष्य का निर्धारण करते हुए यह भी देखना पड़ता है कि अपने तीनों शरीर निरोग हैं या नहीं । इनमें से एक भी रुग्ण हो तो समझना चाहिए कि अपनी क्षमता अधूरी एवं क्षति ग्रस्त है । उस स्थिति में ऐसा कुछ बन न पड़ेगा, जिसे कहने लायक माना और कहा जा सके ।

स्थूल शरीर में ज्वर, खाँसी जैसी व्यथाएँ सूक्ष्म शरीर, मस्तिष्क में उद्विग्नता, सही चिंतन की अक्षमता विभिन्न मनोविकारों के रूप में दृष्टिगोचर होती है । कारण शरीर के रुग्ण होने पर भावना, मान्यता, विचारणा, भ्रांत स्तर की हो जाती है । इन तीनों क्षेत्रों में एक भी गड़बड़ाने लगे तो व्यक्तित्व अधूरा रह जाता है । उस स्थिति में मनुष्य अपने लिए और दूसरों के लिए भारभूत, कष्टदायकए होकर रहने लगता है । तीनों में से किसी में भी आधि व्याधि घुस गई हो तो उसके निष्कासन के लिए प्रबल प्रयत्न करें, किंतु बहुत से आलसी, प्रमादी, ऐसे भी होते हैं कि जहाँ–तहाँ से टूटी हुई गाड़ी पर ही सवारी करते हैं । ऐसे लोग लाभ कम और हानि अधिक उठाते हैं ।

शरीर की संरचना ऐसी है कि यदि आहार विहार का अन्य पशुओं जितना भी संयम, अनुशासन रखा जा सके, तो बीमार पड़ने की नौबत न आए । वस्तुत: होता यह है कि अंतरात्मा सौम्य, सात्विक प्रवृत्तियाँ अपनाने की प्रेरणा देता है और मनुष्य कुमार्ग अपनाता है । इस प्रकार भीतर दो व्यक्तित्व बन जाते हैं और वे दोनों दो साँड़ों की तरह परस्पर टकराते रहते हैं । उस मल्ल युद्ध में शरीर रूपी खेत तहस–नहस हो जाता है और अनेक रोग घेर लेते हैं । यह भीतरी कुश्ती बंद न होने तक बीमारियों का सिलसिला चलता रहता है और दवा दारू का प्रयोग कुछ काम नहीं आता ।

पुरातन काल में ऋषि प्रणीत चिकित्सा प्रणाली में तीनों शरीरों का इलाज एक साथ किया जाता था । फलत: रोगी रोग मुक्त ही नहीं होता था, वरन् समग्र व्यक्तित्व निखार लेता था । पवित्रता और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रतिभा अर्जित करता था, चिंतन को प्रज्ञा से संपन्न और दूरदर्शी विवेकवानों की तरह सोचना आरंभ करता था, जिससे मन की उद्विग्नता समाप्त होकर स्थितप्रज्ञों जैसी शांति, संतोष की मनःस्थिति रहने लगती थी । संचित कुकर्मों का गुरुजनों के सम्मुख प्रकटीकरण करता था और परिशोधन के लिए बताए हुए प्रायश्चित की प्रक्रिया संपन्न करता था । मनोनिग्रह के लिए इन्द्रिय संयम, अर्थ संयम, समय संयम और विचार संयम की चतुर्विध तपश्चर्याएँ अपनाता था । इसके अतिरिक्त प्राणायाम, न्यास, बंध, त्राटक, मुद्रा जैसे साधनों को अपनाता था । अंतःकरण की साधना के लिए समर्पण साधना के अनुसार परब्रह्म के साथ आत्मा को एकत्व की अद्वैत साधना करनी होती है । व्यक्ति विशेष की स्थिति के अनुरूप समग्र स्वास्थ्य संवर्धन के लिए और भी कितनी ही हलकी भारी साधनाएँ हैं, जिन्हें व्यक्ति के स्तर को देखते हुए बताया एवं कराया जाता है ।

स्वस्थ शरीर एवं स्वच्छ मन दोनों का एक दूसरे से घनिष्ठ संबंध है । दोनों के सही रहने पर दुर्बलता और रुग्णता से पीछा छूटता है और मनुष्य कोई कहने लायक पुरुषार्थ कर सकने में समर्थ होता है । आत्मरक्षा, स्वावलंबन, पराक्रम, प्रगति से लेकर परमार्थ साधने तक में एक भी उद्देश्य स्वस्थ शरीर रखे बिना सधता नहीं । दुर्बल और रुग्ण शरीर के विचार भी निषेधात्मक, पतनोन्मुख रहते हैं । ऐसा व्यक्ति न केवल स्वयं दुख पाता है, वरन् दूसरों को भी दुख देता है । समाज व्यवस्था की दृष्टि से पिछड़ापन एक अभिशाप है, भले ही वह शारीरिक, मानसिक, आर्थिक किसी भी स्तर का क्यों न हो ?

लोकहित की दृष्टि से जन साधारण को बलिष्ठ, निरोग बनाने के लिए परमार्थ परायणों को, सृजन शिल्पियों को निरंतर प्रयत्न करने चाहिए । यह प्रयास समय–समय पर अन्यान्य महामानवों ने भी किए हैं । समर्थ गुरु रामदास ने महाराष्ट्र के हर गाँव में महावीर मंदिर स्थापित किए थे और उनके साथ शरीर को बलिष्ठ बनाने वाली

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

व्यायामशालाओं को, मन को प्रखर बनाने वाली कथा पंरपराओं को समान महत्व दिया था । यही कारण रहा कि शिवाजी को उस क्षेत्र से सैनिकों, शस्त्रों और साधनों की प्रचुर उपलब्धि हो सकी और स्वतंत्रता संग्राम का शुभारंभ सफल संभव हो सका ।

गुरु गोविंदसिंह की एक हाथ में माला और दूसरे हाथ में भाला रखने की नीति ने प्रत्येक शिष्य (सिक्ख) को बलिष्ठ और सशस्त्र रहने का प्रावधान बताया था । प्राचीनकाल में भी–''अग्रत: चतुरो वेदा: पृष्ठत: सशरं धनु:'' की पंरपरा थी । परशुराम, विश्वामित्र, द्रोणाचार्य आदि ऋषियों ने इस स्तर की प्रखरता स्वयं कमाई और दूसरों को सिखाई थी । योग साधनाओं में शारीरिक समर्थता के लिए आसन और मन को प्रखर बनाने के लिए प्राणायामों का, अष्टांग योग का निर्धारण किया ।

रोगी की चिकित्सा एक तात्कालिक आवश्यकता है । इस दृष्टि से चिकित्सा उपचार का अपना महत्व है । अस्पतालों, चिकित्सकों की इस हेतु आवश्यकता है ही, पर बात इतने भर से कहाँ बनती है ? जाना गहराई तक पड़ेगा और निवारण उस मूलभूत कारण का करना पड़ेगा, जिससे लोग दुर्बल होते, रोगी बनते और अकाल मृत्यु के मुँह में जा घुसते हैं । आहार विहार के असंयम के कारण ही शरीर बल और मनोबल क्षीण होता चला जाता है और अंतत: चिकित्सा की आवश्यकता पड़ती है । होना यह चाहिए कि चिकित्सा उपचार से भी अधिक स्वास्थ्य संवर्धन को महत्व दिया जाए और उस क्षेत्र में बरती जाने वाली उपेक्षा एवं अवांछनीयता को दूर किया जाए । इसके बिना न दुर्बलता घटेगी, न रुग्णता मिटेगी ।

स्वास्थ्य शालाओं की आवश्यकता पाठशालाओं से किसी भी प्रकार कम नहीं है । बुद्धि को प्रखर बनाने के लिए जिस प्रकार शिक्षा की आवश्यकता समझी जाती है और उसके लिए हर किसी की इच्छा अपने को, अपनों को अधिकाधिक शिक्षावान, सुयोग्य बनाने की रहती है । ठीक उतनी ही उपयोगिता स्वास्थ्य शाला में प्रवेश पाने की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भी समझी जानी चाहिए । ज्ञानवर्धन से भी पहली आवश्यकता स्वास्थ्य संवर्धन की समझी जाए, यही उचित एवं उपयुक्त है ।

इसे दुर्भाग्य ही कहा जा सकता है कि पाठशालाओं की ओर जितना ध्यान दिया जाता है, उतना आरोग्यशालाओं की ओर नहीं । कुछ ध्यान दिया भी गया है तो औषधियों, दवाखानों और चिकित्सकों को बढ़ाने मात्र का प्रयत्न चला है । यह नहीं सोचा गया कि आरोग्य के मूलभूत नियमों का इसी प्रकार व्यतिक्रम चलता रहा तो उभरने वाली दुर्बलता टॉनिकों के सहारे दूर न की जा सकेगी । उभरती हुई रुग्णता पर इंजेक्शनों के बलबूते काबू न पाया जा सकेगा । जड़ सींचनी चाहिए । पत्रों पर छिड़काव करने से क्या बनेगा ?

स्थापना आरोग्य मंदिरों की भी होनी चाहिए । विद्या मंदिरों और उपासना देवालयों से कम महत्व उन्हें भी नहीं मिलना चाहिए । प्राचीनकाल में यह प्रबंध हर गाँव में था । भले ही पाठशाला न हो, पर व्यायामशाला अवश्य होती थी, अखाड़े बने होते थे । उस्तादों की तूती बोलती थी । जो लड़का उनमें नहीं पहुँचता था, बचकाना या मनचला, आलसी, विलासी समझा जाता था । साथी उसे तिरस्कार की दृष्टि से देखते थे । यही कारण था कि पहलवानी की प्रतिस्पर्द्धा ठनी रहती थी । त्यौहारों पर जगह–जगह दंगल नियोजित होते थे, उनमें कुश्ती ही नहीं, क्षेत्रीय परंपरा के अनुरूप अनेकों प्रकार की बल प्रदर्शन प्रतियागिताएँ भी होती थीं । कुश्ती और लाठी, गदा, तलवार आदि चलाने की शिक्षा पर उन दिनों अधिक जोर दिया गया, जिन दिनों कि शासकों की आक्रामकता और लूट–खसोट ने बेतहाशा सिर उठाया था । सामान्यतया लड़ने लड़ाने को कम, बलिष्ठ बनाने की आवश्यकता को ही अधिक महत्व दिया जाता था ।

प्राचीनकाल में आहार विहार का संयम सभी बरतते थे । आवश्यकता व्यायाम द्वारा बलिष्ठ बनने की अधिक रहती थी । इसलिए उन दिनों की आरोग्यशालाओं का नाम व्यायामशाला ही रहता था । कार्य पद्धति भी उतने ही उपक्रम तक सीमित रहती थी ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आहार, ब्रह्मचर्य आदि का तो व्यायाम प्रेमी स्वयं ही ध्यान रखे रहते थे । आज उन प्रयासों को नए सिरे से जमाने एवं बढ़ाने की आवश्यकता है । उनमें पुरातन काल जैसी व्यायाम पद्धतियों की ही प्रमुखता न रहे, बढ़ना एक कदम आगे पड़ेगा । आहार–विहार के क्षेत्र में जो विकृतियाँ घुस पड़ी हैं, निराकरण, उन्मूलन उनका भी करना पड़ेगा अन्यथा असंयमजन्य खोखले मन के रहते व्यायाम करने की किसी में इच्छा ही न उठेगी, शक्ति ही न बचेगी । थकान और तनाव से जर्जर शरीरों को अपनी लाश ढोना ही भारी पड़ता है फिर व्यायाम की इच्छा और हिम्मत किसके सहारे जगे ।

बढ़ते हुए चटोरेपन ने रसोईघर को एक प्रकार से आरोग्य अनाचार का घर बना दिया है । तलने, भूनने, मसाले की भरमार रहने की प्रक्रिया को इन दिनों पाक विद्या का गुण माना जाता है । अनाज, दाल, शाक, फल सभी के छिलके उतार फेंके जाते हैं । हल्की आँच पर उबालने भर से तो कहीं काम नहीं चलता । फलतः कोयले स्तर का आहार उदरस्थ करना पड़ता है, स्वादिष्टता के नाम पर अभक्ष्य को आवश्कयता से अधिक मात्रा में ग्रहण किया जाता है । फलतः अपच के साथ–साथ दुर्बलता और रुग्णता की जड़ें गहरी होती जाती हैं । आवश्यकता चौका क्रांति की है, जिसमें अंकुरित अन्न, छिलकों को ना फेंकना, भाप से पकाना, शाकों–ऋतु फलों–सलादों का उपयोग जैसी अनेकों बातें सिखाई और प्रचलन में लाई जानी चाहिए । यदि आहार को सही रूप में ग्रहण करने का तत्वदर्शन हृदयंगम कर लें तो स्वास्थ्य रक्षा संबंधी आधा प्रयोजन तो पूरा ही हो जाता है ।

कसे हुए भारी कपड़ों की भरमार, सौन्दर्य प्रसाधन, आभूषण जैसे सज्जा उपकरण आरोग्य की दृष्टि से कितने अहितकर हैं, यह पाठ हमें नए सिरे से पढ़ना होगा । गंदगी सहन करने की कुरुचि को स्वभाव का अंग नहीं ही बने रहने देना चाहिए । गाँवों के गली कूचों और पड़ौस के खेतों के मलमूत्र, कूड़े कचरे को उस प्रकार सड़ने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नहीं देना चाहिए जैसा कि सर्वत्र इन दिनों दृष्टिगोचर होता है । घरों की नालियाँ गलियारे को किस प्रकार गंदा करती हैं और रोग के कीटाणुओं को किस प्रकार बढ़ाती हैं, इस शिक्षण का शुभारंभ इस प्रकार करना होगा मानो हम आदिम काल से आगे बढ़कर सभ्यता के युग में प्रवेश कर रहे हों । मकानों की बनावट में धूप, हवा के लिए स्थान का न रहना सीलन और घुटन का कारण बनता है और स्वास्थ्य की बर्बादी में किसी अन्य विपत्ति से कम नहीं रहता ।

प्रज्ञा अभियान ने कितने ही योगासनों और प्राणायामों का नया निर्धारण किया है । ये सरल होते हुए भी शरीर के प्रत्येक अंग अवयव को बलिष्ठ बनाने की दृष्टि से असाधारण रूप से उपयुक्त हैं । रोगी परिचर्या–धात्री विद्या का परिचय प्रत्येक वयस्क नर नारी को होना चाहिए । प्राकृतिक चिकित्सा का निर्धारण ऐसा है जिसे अपनाकर मिट्टी पानी आदि के सहारे रोग मुक्त बना जा सकता है । आसपास उगने वाली जड़ी बूटियों के गुणों का सामान्य ज्ञान हो तो उनके सहारे भी सामान्य रोगों से छुटकारा पाने के लिए अपना इलाज आप कर लेने जैसा अभ्यास बना रह सकता है । इसके लिए जड़ी बूटी खेत और उद्यान लगाने के लिए नए सिरे से उत्साह उत्पन्न किया जा सकता है ।

क्या करें ? कैसे करें ?

(१) जनपद स्तर पर गायत्री परिवार के गणमान्य प्रतिष्ठित परिजनों को क्षेत्र के सेवाभावी भावनाशील चिकित्सकों से संपर्क कर उन्हें गाँव–गाँव विचार गोष्ठियों में ग्रामीण जनता को स्वस्थ रहने के उपाय बतलाए जाएँ । ग्रामीण परिस्थितियों में स्वास्थ्य संरक्षण एवं संवर्धन हेतु अपने आहार विहार एवं आचार विचार में क्या परिवर्तन करने चाहिए, इसकी जानकारी सभी ग्रामीण भाई बहिनों तक पहुँचानी चाहिए । ग्रामीण परिस्थितियों में पौष्टिक एवं संतुलित भोजन कैसे प्राप्त किया जा सकता है ? स्वच्छता का स्वास्थ्य में महत्व समझाया जाना चाहिए ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(२) **व्यायामशाला एवं प्रज्ञा योग केन्द्र :** गाँव–गाँव, मुहल्ले–मुहल्ले में व्यायामशालाएँ खोली जाएँ । प्रज्ञा योग के व्यायाम एवं खेलों को जन–जन तक पहुँचाया जाए । प्राचीन दण्ड–बैठक, गदा चलाना, कुश्ती लड़ना जैसे व्यायामों के स्थान पर योगासन, प्राणायाम, बंध, मुद्रा, नेति आदि का प्रचलन प्रारंभ कराया जाए । शांतिकुंज, हरिद्वार से प्रशिक्षण प्राप्त कार्यकर्ता ऐसा केन्द्र आसानी से चला सकते हैं ।

(३) **प्राकृतिक चिकित्सा :** योग्य अनुभवी चिकित्सकों के माध्यम से जन–जन को प्राकृतिक चिकित्सा की जानकारी देकर मिट्टी, पानी, धूप आदि द्वारा सरल चिकित्सा से अवगत कराया जाए । प्राकृतिक जीवन जीने की कला का प्रशिक्षण जन–जन को दिया जाए ।

(४) **वनौषधि चिकित्सा** अत्यंत सरल, निरापद एवं उपयोगी वनौषधियों का चूर्ण विभिन्न रोगों से छुटकारा पाने के लिए बहुत लाभदायक सिद्ध होता है । इसका व्यापक प्रचार किया जाए । 'जड़ी बूटियों द्वारा स्वास्थ्य संरक्षण' पुस्तक का स्वाध्याय कर कुछ ही वनौषधियों की जानकारी से बहुत से लागों को स्वास्थ्य लाभ कराया जा सकता है । हर गाँव, मुहल्ले में इस कार्य में रुचि रखने वाला एक स्वास्थ्य कार्यकर्ता इस कार्य को सफलता पूर्वक कर सकता है । वनौषधियाँ यथाशक्ति ग्रामीण क्षेत्र में उपलब्ध रहती हैं अथवा इन्हें थोड़ी जगह में फसल के रूप में उगाकर तैयार किया जा सकता है । शांतिकुंज, हरिद्वार से वनौषधियों के चूर्ण प्राप्त किए जा सकते हैं । इन्हें मँगाकर बिक्री द्वारा अथवा दानवीरों के सहयोग से मुफ्त वितरित कर जन सामान्य को लाभान्वित किया जा सकता है ।

(५) **स्वास्थ्य संवर्धन एवं पुस्तकमाला :** युग निर्माण योजना, मथुरा द्वारा स्वास्थ्य संवर्धन एवं संरक्षण हेतु स्वास्थ्य की हर समस्या पर अत्यंत उपयोगी साहित्य प्रकाशित किया गया है । सभी परिजनों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

को ये पुस्तकें अपने पास मँगाकर जन संपर्क कर व्यक्ति–व्यक्ति तक पहुँचा कर झोला पुस्तकालय द्वारा अथवा घर–घर में ज्ञान मंदिर स्थापित कर पहुँचाने का प्रयास अवश्य करना चाहिए । इस युग की यह महान सेवा है ।

(६) **मानसिक स्वास्थ्य** : मन जीवन का केन्द्र बिन्दु है । इसे स्वच्छ बनाए रखने के लिए नियमित रूप से स्वाध्याय एवं सत्संग करना चाहिए । स्वाध्याय एवं सत्संग के माध्यम से नियमित रूप से सद्विचारों की गंगोत्री मन के विकारों को धोकर उसे स्वच्छ एवं स्वस्थ करती रहती है । जिस प्रकार स्थूल शरीर को रोज साफ करना आवश्यक होता है उसी प्रकार मानसिक रूप से स्वस्थ बने रहने के लिए सद्विचारों की झाड़ू से मन की सफाई करते रहना पड़ता है । ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, काम, क्रोध, लोभ, मोह जैसे मनोविकारों को नियंत्रित करने हेतु सत्साहित्य का स्वाध्याय रामबाण औषधि है ।

(७) **आत्मिक स्वास्थ्य** : उपासना के माध्यम से हम अपने आत्मिक स्वास्थ्य को बनाए रख सकते हैं । उपासना अर्थात् देव शक्तियों का निकट सान्निध्य । उपासना से व्यक्ति आस्तिक हो जाता है । वह हर प्राणी में ईश्वर का दर्शन करता है । सबको अपना भाई समझता है । उसका हृदय प्रेम, सहानुभूति, करुणा, दया और संवेदना से भरा रहता है । ऐसी भावनाओं में गोते लगाता हुआ वह परमात्मा की गोद में चला जाता है, जहाँ केवल आनंद ही आनंद है, जो व्यक्ति आत्मिक आनंद की अनुभूति करता है उसका व्यक्तित्व पूर्ण रूप से स्वस्थ रहता है । आत्मा परमात्मा का अंश होने के कारण निर्मल एवं पवित्र होती है लेकिन वातावरण से प्राप्त कषाय कल्मष उस पर चढ़ जाते हैं जो मलीनता की पर्त बना लेते हैं । उपासना द्वारा इसकी नियमित सफाई होती रहनी चाहिए । स्वास्थ्य संवर्धन आंदोलन को सफल बनाने हेतु स्थानीय परिस्थितियों में जो भी प्रयास किए जा सकते हैं, उन्हें अवश्य आरंभ किया जाए । ■

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नारी जागरण आंदोलन

व्यक्ति और समाज की मध्यवर्ती कड़ी परिवार है । लोग व्यक्ति की समीक्षा करते हैं और समाज की आलोचना करते हैं । इन्हीं दो को सुधारने के लिए तरह तरह के प्रयत्न होते और आंदोलन चलते हैं, पर यह भुला दिया जाता है कि व्यक्ति के निर्माण का अधिकांश उत्तरदायित्व परिवार पर है और समाज की कोई स्वतंत्र सत्ता नहीं है । परिवारों के समूह का नाम ही समाज है । परिवार वह मध्यबिन्दु, न्यूक्लियस है, जिसकी धुरी पर सारा शक्ति संतुलन टिका हुआ है । यदि परिवार का महत्व समझा जाए तो फिर यह मानने में कोई कठिनाई न रहेगी कि उसका स्तर एवं वातावरण बनाने में सुसंस्कृत नारी ही प्रधान भूमिका प्रस्तुत कर सकती है । अन्य लोग तो उसके सहायक, समर्थक भर हो सकते हैं । नारी उत्कर्ष अभियान प्रकारांतर से परिवारों को स्वर्ग समतुल्य बनाने का ऐसा सृजनात्मक काम है, जिसके सत्परिणामों को सोचने भर से आँखें चमकने लगती हैं ।

पददलित नारी से किसने क्या पाया ? वह अपने पालने वालों के लिए गले का पत्थर बनकर रह गई । कैदी भी जेल में कुछ करते हैं, पर जेलर से लेखा जोखा माँगने पर स्पष्टतः स्वीकार करेंगे कि यह घाटे का व्यवसाय है । कैदी जो कमाते हैं, उससे कई गुना खर्च उनके ऊपर बैठता है । प्रतिबंधित नारी भी अपने संरक्षकों के लिए किस प्रकार उपयोगी और लाभदायक सिद्ध हो सकती है ?

यदि नारी को उसके मौलिक मानवी अधिकार वापस लौटा दिए जाएँ तो उसमें नर नहीं, अनाचार ही हारेगा । इस विजय में नारी की नहीं न्याय की जीत होगी । जो लोग न्याय, औचित्य, समानता, मनुष्यता, धर्म, कर्तव्य आदि का समर्थन प्रतिपादन करते हैं और अवांछनीयता को निरस्त करना चाहते हैं, उन्हें यह कार्य अपने घर से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ही आरंभ करना चाहिए । हमारे परिवारों में प्रत्येक नारी को यह अनुभव होना चाहिए कि वे कैदी की तरह विवशतापूर्वक नहीं, इस घर में सृजन शिल्पी बनकर रह रही हैं । उसके ऊपर कर्तव्य तो लदे हैं, पर कुछ अधिकार भी हैं । कम से कम अपनी स्वास्थ्य रक्षा, शिक्षा एवं स्वावलंबन के लिए मानवोचित सुविधाएँ प्राप्त कर सकने की स्वतंत्रता उसे मिल गई है । ऐसा किया जा सके तो घर से बाहर भी उसकी आवाज में वह बल होगा, जिससे न्याय का समर्थन उचित ठहराया जा सकेगा ।

विकसित नारी अपने व्यक्तित्व को समुन्नत बनाकर राष्ट्रीय-समृद्धि के संवर्धन में कितना बड़ा योगदान दे सकती है, इसे उन देशों में जाकर आँखों से देखा या समाचारों से जाना जा सकता है, जहाँ नारी को मनुष्य मान लिया गया है और उसके अधिकार उसे सौंप दिए गए हैं । उपयोगी श्रम करके वहाँ वह राष्ट्रीय प्रगति में योगदान दे रही है, परिवार की आर्थिक समृद्धि बढ़ा रही है और परिवार को छोटा सा उद्यान बनाने और उसे सुरभित पुष्प-पल्लवों से भरा पूरा बनाने में सफल हो रही है । नर के कंधे से कंधा मिलाकर काम करने वाली नारी किसी पर भार नहीं बनती, वरन् साथियों को सहारा देकर प्रसन्न होती और प्रसन्न रखती देखी जा सकती है । हम विकसित देशों के प्रशंसक हैं, उनकी भाषा, पोशाक आदि को अपनाने में गर्व अनुभव करते हैं, फिर क्या ऐसा नहीं हो सकता कि उनके व्यवहार में आने वाली सामाजिक न्याय की नीति को भी अपनाएँ और कम से कम अपने घरों में नारी की स्थिति सुविधाजनक एवं सम्माननीय बनाने में भी पीछे न रहें ।

नारी देवत्व की मूर्तिमान प्रतिमा है । यों दोष तो सब में रहते हैं, सर्वथा निर्दोष तो परमात्मा ही है । अपने घरों की नारियों में भी दोष हो सकते हैं, पर तात्विक दृष्टि से नारी की अपनी विशेषता है-उसकी आध्यात्मिक प्रवृत्ति । बेटी, बहिन, धर्मपत्नी और माता के रूप में वह परिवार के लिए जिस प्रकार उदात्त आदर्शों से भरा पूरा जीवनयापन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करती है, उसे देखते हुए यह कहा जा सकता है कि पुरुषार्थ प्रधान नर अपनी जगह ठीक है, पर आत्मिक संपदा की दृष्टि से वह नारी से पीछे ही रहेगा । नारी को प्रजनन का उत्तरदायित्व उठाने के कारण शारीरिक दृष्टि से थोड़ा दुर्बल भले ही रहना पड़ा हो, पर आत्मिक विभूतियों की बहुलता को देखते हुए वही ईश्वरीय दिव्य अनुकंपा की अधिक अधिकारिणी बनी है । अगले दिनों द्रुतगति से बढ़ता आ रहा नवयुग निश्चित रूप से आध्यात्मिक मान्यताओं से भरा पूरा होगा । मनुष्यों का चिंतन, दृष्टिकोण भी उसी स्तर का होगा । व्यवस्थाएँ और परंपराएँ उसी ढाँचे में ढलेंगी । जन साधारण की गतिविधियाँ उसी दिशा में उन्मुख होंगी । शासनतंत्र, धर्मतंत्र, समाजतंत्र, अर्थतंत्र का सारा कलेवर उसी स्तर का पुनर्निर्मित होगा । ऐसी स्थिति में नारी को हर क्षेत्र में विशेष भूमिकाएँ निबाहनी पड़ेंगी । विशेष उत्तरदायित्व संभालने पड़ेंगे, कारण कि अध्यात्म की विभूतियाँ जन्मजात रूप से उसी को अधिक परिमाण में उपलब्ध हुई हैं ।

नारी–उत्कर्ष की आवश्यकता का प्रतिपादन करने और औचित्य सिद्ध करने के अनेक आधार हैं । उनमें से किसी को भी अपनाकर विचार किया जाए तो आवश्यक प्रतीत होगा कि समय की माँग को देखा जाए । उज्ज्वल भविष्य को ध्यान में रखा जाए तो नारी जागरण अपने समय का सबसे बड़ा काम प्रतीत होगा ।

अपने वर्ग को स्वयं ऊँचा उठाएँ : अपने वर्ग का पिछड़ापन दूर करने के लिए प्राय: सभी क्षेत्रों में भावनाशील और दूरदर्शी व्यक्ति आगे आते हैं । व्यापारी, कर्मचारी, किसान, दलाल अपने अपने वर्ग की समस्याओं को लेकर कुछ योजना बनाते हैं और रचनात्मक तथा संघर्षात्मक, जब जैसी जरूरत पड़ती है वैसे कार्यक्रम निर्धारित करते हैं । वस्तुत: अपने वर्ग का व्यक्ति ही अपने समाज को ऊँचा उठाने, आगे बढ़ाने एवं विपत्तियों से बचा सकने में ज्यादा अच्छी तरह सफल हो सकता है । वर्ग चेतना स्वाभाविक भी है । अपनी, अपने साथियों की स्थिति को अधिक अच्छी तरह समझा जा सकता है ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

संपर्क, सान्निध्य एवं एक जैसी स्थिति में रहने के कारण उनके साथ ममता होना भी स्वाभाविक है । सो उन लोगों के लिए अधिक उत्साह के साथ अधिक प्रयास और त्याग कर सकना भी सहज ही बन पड़ता है ।

महिला जागृति की आवश्यकता को पूरा करने के लिए सुयोग्य और सेवाभावी महिलाओं को आगे आना चाहिए । भारत की दशा कुछ विचित्र है । यहाँ नर नारी का संपर्क संकीर्णता की दृष्टि से देखा जाता है, उस पर नाक, भौंह सिकोड़ी जाती हैं तथा अँगुली उठाई जाती है । ऐसी दशा में पुरुषों के लिए यह कठिन पड़ता है कि वे महिला जागृति का काम अपने हाथ में लें । उसमें उन्हें सफलता कम मिलती है और झंझट बहुत पड़ते हैं । ऐसी दशा में यही मार्ग रह जाता है कि उस अभियान को आगे बढ़ाने के लिए महिलाएँ आगे आएँ । कितनी ही महिलाएँ ऐसी सौभाग्यशाली होती हैं कि उनके परिवार में उतनी संकीर्णता नहीं होती । वहाँ नारी को भी मनुष्य मानते हैं और उसके भी, घर से बाहर जाकर भी, विश्वस्त बने रहने पर भरोसा करते हैं । कितने ही उदार परिवार ऐसे हैं जो अपने घर की महिलाओं को सार्वजनिक सेवा कार्यों में समय देने से रोकते नहीं हैं । सुविधा के समय का ऐसा सदुपयोग किया जा सके तो वे उस सदिच्छा का स्वागत समर्थन करते हैं । ऐसे परिवारों की महिलाओं को अपनी शिक्षा और सुविधा का लाभ अपने पिछड़े वर्ग की सेवा के लिए, महिला जागरण के लिए देने का साहस बटोरना चाहिए । ऐसी सेवाभावी, सुयोग्य और साहसी महिलाओं के आगे आए बिना महिला जागृति की महती समस्या का समाधान किसी प्रकार न हो सकेगा । जिनके बच्चे बड़े हो गए हैं, परिवार के दूसरे लोग गृह व्यवस्था को सँभालने वाले हैं, नौकर आदि का प्रबंध है, उनके के लिए तो यह विशेष कर्तव्य हो जाता है कि वे महिला जागरण के लिए नियमित रूप से समय लगाना आरंभ कर दें । परिवार वाले कभी अनिच्छा प्रकट करते हों तो भी उन्हें अनुनय विनय करके, दुख–असंतोष

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रकट करके, तर्क और कारण समझाकर यह प्रयत्न करना चाहिए कि उन पर लगे बंधन, धीरे–धीरे सीमित होने लगें ।

जिन महिलाओं के बच्चे बड़े होकर स्वावलंबी हो गए, घर में बहू आ गई उनके लिए तो यह सेवा कार्य एक प्रकार से स्वर्ण अवसर ही है । निवृत्त–महिला–जीवन का उससे अधिक उपयोग हो ही नहीं सकता कि वे अपने पिछड़े वर्ग की सेवा के लिए अधिकाधिक अनुदान, त्याग, बलिदान प्रस्तुत करने के लिए आगे आएँ । विधवाएँ, वयस्क अविवाहिताएँ, बिना बच्चों वाली, अध्यापिकाएँ आदि महिलाएँ सहज ही इस कार्य के लिए अवकाश निकाल सकती हैं । वर्तमान परिस्थितियों में तो नारी को ही आगे आना पड़ेगा । प्रत्येक देश, प्रत्येक समाज, प्रत्येक वर्ग अपने–अपने कार्यक्षेत्र में, प्रभाव क्षेत्र में कुछ करने के लिए जुटा हुआ है । **नारी को भी अपने क्षेत्र के उत्कर्ष की बागडोर स्वयं ही संभालनी पड़ेगी ।** अपने पैरों पर खड़े होने वालों की ही सहायता दूसरे करते हैं, ईश्वर भी उन्हीं की सहायता करता है और परिस्थितियाँ भी उन्हीं के अनुकूल पड़ती हैं, जो अपनी सहायता आप करता है ।

भारत का नारी समाज संकोच, भय छोड़कर महिला उत्कर्ष के महान अभियान में सम्मिलित हो यही युग की पुकार है । त्याग बलिदान की तो उसमें कमी नहीं । पति के लिए, बच्चों के लिए उसका सारा जीवन ही त्याग बलिदान से ओत–प्रोत बीतता है । इसलिए उसे लोभ, मोह छोड़ने की बात कहने की, कष्ट सहने के लिए तैयार होने का उद्‌बोधन करने की तो आवश्यकता प्रतीत नहीं होती । यह गुण तो उसमें प्रकृति प्रदत्त और जन्मजात है । उद्‌बोधन केवल संकोच और झिझक छोड़ने का है । यदि ऐसा किया जा सका तो भारतभूमि हजारों इन्दिरा गाँधी, भण्डारनायके, गोल्डामेयर संसार को दे सकेगी । इस भूमि के रक्त में संसार के हर क्षेत्र का नेतृत्व कर सकने की शक्ति है । नारी में तो उसका और भी अधिक बाहुल्य है । आवश्यकता उसके जागरण की है ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हर नगर में कुछ महिलाएँ इस स्थिति की होती हैं कि वे चाहें तो महिला ज़ागरण के कार्य को अपने हाथ में ले सकें और आगे बढ़ा सकें । युग निर्माण शाखा के कार्यकर्ताओं को उनसे संपर्क करना चाहिए और उन्हें नव जागरण की पुण्य प्रक्रिया से परिचित कराना चाहिए । धीरे धीरे उन्हें यह साहित्य पढ़ाना चाहिए ताकि नव जागरण की आवश्यकता पूरी करने में सुयोग्य महिलाओं के योगदान का महत्व भली प्रकार समझ सकें । निम्न प्रारंभिक कदम उसी प्रयोजन के लिए उठाए जाने चाहिए ।

(१) ऐसी कुछ महिलाओं को एकत्रित होकर 'युग निर्माण महिला मंडल' का गठन करना चाहिए । ऐसे काम हमेशा मिलजुल कर संगठित रूप से ही संभव हो सकते हैं । इस संगठन की एक कार्यवाहक चुनी जानी चाहिए । दफ्तर, रजिस्टर, उसी के यहाँ रहना ठीक है ।

(२) नगर की शिक्षित महिलाओं की सूची तैयार की जाए और उनके पास जाकर तीसरे पहर अवकाश के समय नव निर्माण का साहित्य पढ़ने के लिए सहमत करना चाहिए । लाभ समझाने से वे आसानी से समझ भी जाती हैं । ज्ञान वृद्धि के साथ–साथ इसमें समय को रुचिपूर्वक काटने का मनोरंजन भी तो है । किसी प्रकार अपना साहित्य पहुँचाने और वापस लाने का प्रयत्न करना चाहिए । मासिक युग निर्माण योजना, युग शक्ति गायत्री एवं अखण्ड ज्योति तथा कथा साहित्य, जीवनियाँ महिलाओं को अधिक रुचिकर होती हैं । यह साहित्य उन्हें नियमित रूप से पढ़ने को मिलता रहे तो उनका भावनात्मक स्तर निश्चित रूप से उल्लसित होता है और थोड़े दिनों में वे भी महिला संगठन की गतिविधियों में उत्साहपूर्वक योगदान देने लगती हैं ।

(३) साप्ताहिक महिला सत्संग का प्रबंध होना चाहिए जिसमें सामूहिक रूप से भजन, कीर्तन, कथा, प्रवचन तथा शंका समाधान

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

का प्रबंध रहे । इसमें आवश्यकतानुसार वयोवृद्ध एवं प्रामाणिक पुरुष भी बुलाए जा सकते हैं । इनमें व्यक्ति और समाज की, विशेषतया महिलाओं से संबंधित, समस्याओं पर प्रकाश डाला जाना चाहिए और उसका हल बताया जाना चाहिए ।

(४) इसके अतिरिक्त उन मूढ़ताओं, अंधविश्वासों, कुरीतियों, सामाजिक विकृतियों का नंबर आता है जिनने भारतीय समाज को किस बुरी तरह पददलित किया और जिनके प्रहार से नारी जाति को कितनी भारी क्षति उठानी पड़ी, पीड़ा सहनी पड़ी । बौद्धिक, नैतिक एवं सामाजिक विकृतियों का प्रचलन अपने देश में कैसे हुआ और उनने क्या–क्या क्षति पहुँचाई तथा अब उनका समाधान, निराकरण, उन्मूलन कैसे हो सकता है—यह दार्शनिक पक्ष नारी शिक्षा योजना का अविच्छिन्न अंग माना गया है । कहना न होगा कि आज की सुशिक्षित लड़कियों को बेकार का दिमागी बोझा तो बहुत ढोना पड़ता है, पर काम में आने वाली, व्यावहारिक जीवन में उपयोगी एवं आवश्यक जानकारियों से वंचित ही रहना पड़ता है ।

(५) पुंसवन, नामकरण, मुण्डन, अन्नप्राशन जैसे संस्कार महिलाएँ परस्पर मिलजुल कर शास्त्रीय विधि से कर सकती हैं और उनके साथ जुड़ी हुई शिक्षाओं के आधार पर उस परिवार में एक नई विचारधारा एवं चिंतन शैली का प्रवाह बहाया जा सकता है ।

(६) जन्मदिन और विवाह दिन के उत्सव पर उपहार परस्पर बहुत घनिष्ठता उत्पन्न कर सकते हैं । जन्मदिन पर संगठित मंडली की महिलाएँ एक पुष्प और एक बताशा का उपहार लेकर पहुँचा करें तो उनमें पारस्परिक घनिष्ठता बढ़ती ही चली जाएगी ।

(७) नारी पर से पाशविक प्रतिबंध अविलंब हटाए जाएँ, उसे पर्दा प्रथा से मुक्त कराने के व्यावहारिक उपायों को कार्य रूप में परिणत किया जाए ।

(८) अन्याय से दुर्बल बनी नारी को समर्थ, स्वावलंबी बनाने के लिए कुछ अतिरिक्त सहायता देनी चाहिए । उसे नारी समाज

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की सेवा करने के लिए घरेलू बंधनों से थोड़ा अवकाश दिया जाए, उसे सार्वजनिक सेवा के क्षेत्र में प्रवेश करने दिया जाए । घर से बाहर निकलने में जो हजार शंका कुशंकाएँ की जाती हैं, उस ओछेपन से अपने को विरत कर लिया जाए । ऐसी प्रेरणा पुरुष वर्ग को दी जाए ।

(९) जो लोग नारी उत्कर्ष के महत्व को समझते हैं, भारत के आधे जन समाज की अपंग स्थिति को दूर करना चाहते हैं, उनके लिए प्रथम कार्य यही करने का है कि अपने घर की नारियों में उस ओर विशेष रुचि उत्पन्न करें । उन्हें योग्य बनाएँ, आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें और मार्गदर्शन एवं सहयोग करके उन्हें कार्यक्षेत्र में उतारें ।

(१०) नारी शिक्षा का प्रचलन आवश्यक है । भारतीय नारी को तीसरे प्रहर अवकाश रहता है, उस समय पर गली–गली, मुहल्ले–मुहल्ले, गाँव–गाँव महिला पाठशालाएँ चलनी चाहिए । घर–घर जाकर इसके लिए उत्साह उत्पन्न करना चाहिए और बिना पढ़ी तथा पढ़ी हुई सभी महिलाओं को उसमें सम्मिलित होने के लिए आग्रहपूर्वक अनुरोध करना चाहिए । थोड़ा प्रयत्न करने पर मुहल्लों में ऐसी पाठशालाएँ स्थापित हो सकती हैं । उन्हीं में से कोई सुशिक्षित नारी पढ़ाने, सिखाने का उत्तरदायित्व स्वयं उठा ले या कई मिलजुल कर उठा लें । **स्थान**–इन्हीं महिलाओं में से किन्हीं का घर चुन लिया जाए और वहाँ पाठशाला चालू कर दी जाए ।

युग निर्माण योजना के अंतर्गत महिला शिक्षा योजना विशिष्ट और स्वतंत्र है । उसे स्कूली शिक्षा जैसे एकांगी एवं अनावश्यक नहीं रहने दिया गया है वरन् नारी जीवन से संबंधित सभी आवश्यक विषयों का उसमें समावेश किया गया है । शरीर विज्ञान, स्वास्थ्य संरक्षण, मनोवृत्तियाँ, गुण, कर्म, स्वभाव का परिष्कार, भावनाओं का परिष्कार, घरेलू अर्थ व्यवस्था, संयुक्त परिवार की समस्याएँ और उनके समाधान, शिशुपालन, दांपत्य जीवन, समाज सेवा, आत्मिक शांति, धर्म

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विवेचना जैसे सभी विषयों का इस प्रशिक्षण में समावेश है । साथ ही गृह उद्योग का सामान्य ज्ञान एक नारी के लिए अनिवार्य है । सिलाई एक उपयोगी गृह शिल्प है । इसके अतिरिक्त कपड़े, बर्तन, फर्नीचर, पुस्तकें, मकान, चिमनी, स्टोव आदि की टूट फूट का संभालना एवं मरम्मत करना अपने आप में एक उद्योग है । बिस्कुट, शर्बत, मंजन, खुशबूदार तेल, मोमबत्ती, साबुन, मामूली रोगों का घरेलू चीजों से इलाज, चारपाई बुनना आदि छोटे मोटे दर्जनों शिल्प इसी विभाग में जोड़कर रखे गए हैं । घरेलू शाक वाटिका लगाकर कोई भी महिला अपने घर के लिए साग उगा सकती हैं । वह एक कमाई ही है । संगीत, कहानी कहना, खिलौने बनाना, घर की सुसज्जा जैसी कितनी ही कलात्मक अभिव्यक्तियाँ ऐसी हैं जिनसे नारी का उत्साह बढ़ता है । वह अपने घर में आकर्षण का केन्द्र बनती है और अपने आपको महत्वपूर्ण अनुभव करती है ।

प्रशिक्षण का मूल उद्देश्य है विचारक्रांति । जीवनोत्कर्ष के लिए आवश्यक प्रकाश का उनकी मनोभूमि में प्रवेश कराना । जीवन जीने की कला वाले पक्ष में इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए पूरी–पूरी गुंजाइश है । इन दिनों नारी जागृति की लहर है । इक्कीसवीं सदी को योगी अरविंद जैसे तत्वदर्शी 'मातृ शताब्दी' कह चुके हैं । युग निर्माण मिशन द्वारा भी भावी संभावनाओं का सही अनुमान लगाकर यह घोषित किया है कि पूरी इक्कीसवीं सदी ऐसी संभावनाओं से भरी पूरी है जिसमें नारी अपनी वर्तमान दुर्गति से उबर ही नहीं रही है, वरन् ऐसी स्थिति अपनाने भी जा रही है जिसे उन्नति के उच्च शिखर पर पहुँचना भी कहा जा सके । नारी युग के रूप में एक अद्भुत और असाधारण समय एकाएक सामने आ उपस्थित हुआ देखा जा सके ।

महिलाओं का भविष्य उज्ज्वल है । उनके आगे बढ़ने की संभावना सुनिश्चित है । समय के साथ चलते हुए जो इस प्रतिस्पर्द्धा के युग में अपने परिवार या प्रभाव क्षेत्र में महिलाओं को अग्रगमन के लिए प्रोत्साहन एवं सहयोग प्रदान करेंगे, वे प्रगतिशील समझदारों की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तरह नफे में रहेंगे । जो धीमे चलेंगे वे पिछड़ों की पंक्ति में खड़े होंगे । बनना तो उन्हें भी वही पड़ेगा जो सर्वत्र बनने जा रहा है । पश्चात्ताप इसी बात का रह जाएगा कि समय आगे बढ़ा और हम हठवादिता अपनाते हुए ''फिर कभी देखा जाएगा'' की बहानेबाजी का आश्रय लेते रहे ।

भारत संविधान में महिलाओं को तीस प्रतिशत आरक्षण मिल रहा है । यह बात पंचायती चुनाव तक ही सीमित नहीं है, अगले दिनों वे अन्य संस्थाओं में भी वैसे अधिकार प्राप्त करेंगी एवं महत्वपूर्ण जिम्मेदार पदों को संभालती दिखाई देंगी । देश की समाज व्यवस्था, अर्थ व्यवस्था और परिवारों में स्वर्गीय वातावरण बनाने में उनकी बढ़ी–चढ़ी भूमिका होगी । उनकी सहज करुणा, सहिष्णुता और सेवा भावना को जब चरितार्थ होने का अवसर मिलेगा तो समाज में उभरते अनाचार, दुर्व्यसन और विग्रह आदि को महाकाल के अवतरण के सम्मुख पैर टिकाने का अवसर नहीं मिल सकेगा । ■

सत्प्रवृत्ति संवर्धन-दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन आंदोलन

देव और असुर दोनों तत्वों से मिलकर मनुष्य बना है । उसमें ईमान भी रहता है और शैतान भी । परिस्थितियाँ इन्हें विकसित करती हैं । यदि अच्छा वातावरण मिले तो देवतत्व और ईमान विकसित होता है । सज्जनता और महानता की वृद्धि होती है । यदि बुरा वातावरण मिले तो उसका प्रभाव अंतरंग में छिपी असुरता को उभारता है और मनुष्य का चिंतन और कर्तृत्व निकृष्ट स्तर का, पतनोन्मुख बनता चला जाता है ।

इन दिनों वातावरण यह है कि उद्दण्ड अनाचारी लोग भोले भाले लोगों को आतंकित करके अपना उल्लू सीधा करते हैं । अनाचारी के आतंक व आक्रमण के डर से भले लोग प्रतिशोध की इच्छा होते हुए

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भी वैसा नहीं कर पाते और आतंक से अनाचारी तत्व न केवल प्रतिरोध की आशंका से ही निश्चिंत हो जाते हैं वरन् उन डरे हुए लोगों का मनमाना शोषण भी करते हैं ।

दूसरी ओर सत्प्रवृत्तियों का पक्ष है । वातावरण उन्हें विकसित होने में सहायता नहीं करता । परिणामस्वरूप मनुष्य न भौतिक लाभ उठा पाते हैं न सम्मान । आत्म संतोष के लिए उनके पास केवल बहुत ऊँचा तत्वज्ञान ही रह जाता है जिसे गले उतारना हर किसी के लिए सहज नहीं । ईमानदारी से काम करने पर सीमित आजीविका प्राप्त होती है, उससे संतोष, सादगी और मितव्ययिता का जीवन ही जिया जा सकता है । भ्रष्ट साधनों से आजीविका कमाने वाले शान शौकत और ठाठ–बाट का जीवन जीते हैं जबकि ईमानदार व्यक्ति को गरीबी और सादगी में ही रहना पड़ता है । ऐसे समय में ईमानदारी पर अड़े रहना एक प्रकार दुस्साहस ही कहा जाएगा । बेईमानी की सुविधाओं को त्यागकर जिसने ईमानदारी के साथ जुड़ी हुई सादगी का वरण किया उसका मनोबल और आदर्शवाद सराहा जाने योग्य ही है, पर देखा यह जाता है कि इस प्रकार के व्यक्ति सामाजिक सम्मान से वंचित रहते हैं, उन्हें उल्टा मूर्ख बनना पड़ता है और व्यंग्य, उपहास सहने पड़ते हैं । कई बार तो उनके ही अनाचारी साथी मिलजुल कर नीचा दिखाने का षड्यंत्र भी करते हैं और उसमें सफल भी हो जाते हैं ।

व्यक्तिगत दोष दुर्गुणों में अहं, क्रोध, आलस्य, अनियमितता, असंयम, अपव्यय, नशेबाजी, अभक्ष्य भक्षण, चटोरपन, कृपणता, स्वार्थ परायणता, व्यसन, मद्यपान आदि हैं । सामाजिक दोषों में बेईमानी, शेखीखोरी, रिश्वत, चोरी जुआ, शोषण, उत्पीड़न, हराम की कमाई, व्यभिचार, उच्छृंखलता, छल जैसे दुष्कर्मों की गणना की जा सकती है । कुरीतियाँ, अंध परंपराएँ, मूढ़ मान्यताएँ ऐसी हैं जिन्हें सामाजिक ही नहीं बौद्धिक विकृति भी कह सकते हैं । उनके उन्मूलन के लिए बहुत किया जाना है । स्वार्थी राजनेता, गुण्डे, अपराधी,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आसामाजिक तत्व, रिश्वतखोर व्यवसायी, कुरीतियों के पोषक, कला, और साहित्य से अनाचार उभारने वाले कलाकार, मुफ्तखोर, हरामखोर, तस्कर आदि कुकर्म पोषक वर्ग इन दिनों बढ़ता ही चला जा रहा है । इनका प्रतिरोध न किया जा सका, तो उनकी दुष्टता अनुनय विनय मात्र से रुकने वाली नहीं है । जब तक इन वर्गों को यह विदित न हो जाए कि समाज अब अनाचारों का प्रतिरोध करने लगा है, तब तक वे सहज़ मानने वाले नहीं हैं । इसलिए व्यक्ति और समाज को उनके गौरवशाली स्तर पर फिर से लाने के लिए दुष्प्रवृत्तियों के निवारण व सद्प्रवृत्तियों के संवर्धन के प्रभावशाली तथा क्रियापरक उपायों को जानने व व्यवहार में लाने की तात्कालिक आवश्यकता अनुभव की जाने लगी है । नीचे की पंक्तियों में इसी संबंध में चर्चा प्रस्तुत की जा रही है ।

(१) समाज का नेतृत्व करने वाले प्रबुद्ध लोगों का काम है कि वे ऐसा वातावरण बनाएँ, ऐसा आंदोलन चलाएँ जिसमें आदर्शवाद का अवलंबन करने वाले व्यक्तियों को कम से कम सामाजिक सम्मान का लाभ तो मिल ही सके। यों उन आदर्शवादी व्यक्तियों को निःस्पृह ही रहना चाहिए और किसी सम्मान सहयोग पुरस्कार आदि की आशा न करके अपने कर्तव्य पालन जन्य आत्म संतोष को ही पर्याप्त मान लेना चाहिए। उनके लिए यही शोभनीय है, पर समाज के कर्णधारों का उत्तरदायित्व भिन्न है। उन्हें चाहिए कि ऐसे वातावरण का सृजन करें जिसमें अवांछनीय तत्वों की हिम्मत न बढ़े प्रोत्साहन न मिले। साथ ही आदर्शवादी व्यक्ति कम से कम लोक श्रद्धा के भाजन तो बन ही सकें। उनके साहस का परिचय अधिक लोग प्राप्त करके उस मार्ग का अनुसरण करने की प्रेरणा प्राप्त करें।

(२) सत्प्रवृत्तियों को उभारने के लिए सद्भावनाओं को प्रोत्साहित और पुरस्कृत करने के लिए कुछ नहीं किया गय, जबकि होना यह चाहिये था कि जितना दुष्टता के दमन पर ध्यान दिया जाता है, कम से कम उतना ध्यान तो सज्जनता के सराहने और आदर्शवादी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सत्साहस को पुरष्कृत करने के प्रयत्न पर दिया जाता। अपराध और दण्ड यह निषेधात्मक पक्ष है। उससे भी महत्वपूर्ण पक्ष वह है जिसे विधेयात्मक करना भी उतना ही आवश्यक है जितना अनैतिकता को दंडित करना। समाज का कर्तव्य है कि अपराधियों के लिए बने दंड विधान की तरह लोक मंगल के लिए त्याग बलिदान करने वालों को पुरष्कृत करने की भी समर्थ व्यवस्था बनाकर खड़ी करें। उभय पक्षीय प्रयत्नों से ही सदाचारी संतुलन कायम रखा जा सकेगा। सरकार दुष्टों को दण्ड तो देती है, पर आदर्शवादियों को सम्मानित पुरस्कृत नहीं करती। जिस प्रकार अनाचारियों के लिए राजदंड व्यवस्था को पर्याप्त मान बैठना भूल है उसी प्रकार सत्प्रवृत्तियों में संलग्न व्यक्तियों को सम्मानित करने के लिए भी शासन पर निर्भर रहना बेकार है। इस प्रक्रिया को सामाजिक स्तर पर हाथ में लिया जाना चाहिए।

(३) अनाचार को प्रोत्साहन और सदाचार को हताश करने में लोकमत की दुर्बलता एक बहुत बड़ा कारण है। उसमें सुधार परिवर्तन होना ही चाहिए अन्यथा न अनाचार रुक सकेगा और न सदाचार स्तर के व्यक्ति प्रोत्साहित हो सकते हैं। बशर्ते कि उन्हें अपनी सत्प्रवृत्ति का लाभ, उचित समर्थन और सम्मान प्राप्त होता रहे। हमें लोकमत में इस तत्व को सजग करना चाहिए, कि अनाचारी व्यक्तियों का समर्थन और सहयोग न किया जाए। उनकी हाँ में हाँ न मिलाई जाए, उनके दोष छिपाए न जाएं। उन्हें किसी प्रकार का सामाजिक सम्मान मिलने न दिया जाए। इसमें यदि दुष्ट दुराचारियों के आक्रमण का जोखम हो तो भी उसे उठाना ही चाहिए।

सच तो यह है कि यदि मिलजुलकर असामाजिक तत्वों से मुकाबला करने की, उनका पर्दाफास करने की प्रवृत्ति चल पड़े तो उनका साहस नष्ट हो सकता है। राजदंड से ही दुष्टता पर नियंत्रण नहीं किया जा सकता, उसके लिए लोकमत का संगठित और प्रखर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

होना भी आवश्यक है। अनीति विरोधी वातावरण इसी प्रकार बनेगा और दुष्प्रवृत्तियों का विनाश इस सतर्कता द्वारा ही होगा।

इस प्रयोग को हमें अपने घरों से आरंभ करना चाहिए। जिन बच्चों की, परिजनों की गतिविधियां प्रशंसनीय हों उन्हें समुचित सहयोग, समर्थन, प्यार, सम्मान एवं पुरस्कार मिलना चाहिए। भूल करने वालों को, कुमार्ग पर चलने वालों की उपेक्षा न की जाए, भर्त्सना, ताड़ना, असहयोग आदि परिस्थिति अनुसार वह क्रम अपनाया जाए जिससे कुमार्गगामी को अपने कार्य से परिवार की नाराजगी और भर्त्सना का परिचय मिले। यह नीति परिवार के भावनात्मक विकास और व्यवस्था संतुलन में बहुत सहायक सिद्ध हो सकती है ।

(४) यह रीति नीति समाज में अपनायी जानी चाहिए । आदर्श प्रस्तुत करने वाले ऐसे अनेक व्यक्ति मिल सकते हैं जिनको गरीबी के कारण किसी ने प्रोत्साहित नहीं किया । ऐसे स्वर्गीय लोगों की जयंतियाँ मनाना, उनके चित्रों पर पुष्प चढ़ाना, उनके स्मारक स्वरूप वृक्ष लगाना, उनके जीवन वृत्तांत से सर्वसाधारण को अवगत कराना, ऐसी पद्धति है जिससे हर व्यक्ति को सन्मार्गगामी लोकसेवी बनने का प्रोत्साहन मिल सकता है ।

(५) वैयक्तिक जीवन में समाविष्ट कुत्साओं और कुण्ठाओं से जूझने के लिए हमें प्रायश्चित और आत्म–प्रताड़ना का शस्त्र काम में लाना चाहिए । आत्मशोधन के लिए ''हर दिन नया जन्म–हर रात नई मौत'' का जो मंत्र दिया गया है वह अति कारगर सिद्ध होता है । दिन भर अपने शारीरिक एवं मानसिक क्रिया–कलाप पर दृष्टि रखनी चाहिए और देखना चाहिए कि उच्चस्तर से पैर कहाँ लड़खड़ाए । ओछे विचार और कार्य दोनों ही हेय समझे जाने चाहिए और बारीकी से सारे दिन आत्म निरीक्षण करते रहना चाहिए कि कब, कहाँ, कैसे और क्या भूल हुई ? और क्यों अपना स्तर गिरा ? ऐसा लेखा जोखा नोट करते रहना चाहिए और रात को सोते समय दिन भर की भूलों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

का शारीरिक दंडों के रूप में प्रायश्चित करना चाहिए । (१) कान पकड़कर उठना बैठना, (२) अपने आपको चाँटे लगाना (३) अमुक समय तक खड़े रहना, (४) सोने की अपेक्षा उतनी देर जागते रहना, (५) भोजन में कुछ कटौती या उपवास, इस प्रकार आत्म प्रताड़नाएँ अपने को देकर और अगले दिन वैसी भूलें न करने की चेतावनी देकर यह प्रायश्चित प्रक्रिया हर रात को पूरी कर लेनी चाहिए । सबेरे उठते ही यह सोच लिया जाए कि आज का एक ही दिन का जीवन है रात को सोने के साथ आज की मृत्यु हो जाएगी । इस एक दिवसीय जीवन को सर्वोत्कृष्ट रीति से जीने की दिनचर्या प्रातः ही बना ली जाए तो निःसंदेह वह दिन अधिक श्रेष्ठता के साथ बीत सकता है । न केवल नैतिक बुराइयों से बचने और अच्छाइयों के समावेश का क्रम दिनचर्या में जुड़ा रहे वरन् निरंतर व्यस्तता, निरालस्यता, कठोर परिश्रम, कार्यों का समय विभाजन आदि का भी इस तत्परता के साथ समावेश किया जाए कि एक क्षण भी आलस्य, प्रमाद में गुजरने न पावे । व्यस्त जीवन अनायास ही अनेक दोष दुर्गुणों से बच जाता है । इस प्रकार शरीर को आलस्य असंयम से, मन को दुर्बुद्धि और दुष्प्रवृत्तियों से बचाकर रखने की सतर्कता बरती जाए तो क्रमशः जीवन क्रम में उत्कृष्टता की मात्रा बढ़ती जाती है और महानता के पथ पर द्रुतगति से बढ़ चलने में सफलता मिलती जाती है । मन से, शरीर से, उनकी बुरी आदतें छुड़ाने के लिए संघर्ष करना ऐसा पुरुषार्थ है जिसमें विजय प्राप्त करने के साथ प्रगति के प्रत्येक क्षेत्र में बढ़ चलना संभव हो जाता है ।

(६) परिवार निर्माण के लिए भी ऐसे ही संघर्ष की जरूरत पड़ती है । पत्नी व बच्चों को, बड़े और छोटों को समुचित प्यार किया जाए और उनकी सुविधा का पूरा पूरा ध्यान रखा जाए, पर साथ ही कड़ी नजर इस बात पर रखी जाए कि परिवार का कोई सदस्य कुमार्गगामी, व्यसनी, दुर्गुणी एवं अनाचारी तो नहीं बन रहा है । यह छिद्र जहाँ दिखाई पड़े वहाँ रोकने और सुधारने का भी प्रयत्न करना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चाहिए । स्नेह या सम्मान का मतलब यह नहीं कि मोहवश उन्हें उच्छृंखलता और अवांछनीयता अपनाने की खुली छूट दे दी जाए । वह प्रयत्न चाहे प्रिय लगे चाहे अप्रिय पर है आवश्यक । दुष्प्रवृत्तियों के विरुद्ध संघर्ष तो घर में भी होना चाहिए । गीता में भगवान ने क्रूरकर्मा स्वजनों से भी झगड़ पड़ने की सलाह दी है । विभीषण का भाई से असहयोग उचित ही माना गया है । यह संघर्ष यथासंभव मृदुल, सौम्य और स्नेह, सिक्त रखा जाना चाहिए, पर यदि अनिवार्य हो जाए तो असहयोग से लेकर संबंध विच्छेद की सीमा तक जाया जा सकता है । अनीति के आगे सिर झुकाने अथवा अन्याय के साथ समझौता कर लेने की अपेक्षा तो इस प्रकार की कटुता भरा मार्ग अपना लेना भी बुरा नहीं है । हर हालत में औचित्य की रक्षा की जानी चाहिए और इसके लिए किसी को अप्रसन्न करना पड़ता हो तो इस विवशता को भी साहसपूर्वक स्वीकार करना चाहिए ।

(७) रूढ़िवादिता और अनौचित्य के विरुद्ध संघर्ष बड़े बूढ़ों से भी किया जा सकता है । बड़ों का आदर करना, उनकी सुविधाओं का ध्यान रखना तथा शारीरिक सेवा करना छोटों का कर्तव्य है और इस शिष्टाचार को हर हालत में निभाया जाना चाहिए, पर उनकी अनुचित इच्छाओं तथा आज्ञाओं से सहयोग करने में साहसपूर्वक इंकार भी कर देना चाहिए । इसी कारण विरोध बंधता हो तो उसे प्रसन्नतापूर्वक सिर पर बाँध लेना चाहिए । न्याय की रक्षा के लिए इस विरोध असंतोष के लिए भी तैयार हो ही जाना चाहिए । न्याय और औचित्य से रहित आज्ञा चाहे भगवान की भी क्यों न हो कर्तव्य धर्म का तकाजा है कि उसे अस्वीकार ही कर देना चाहिए ।

(८) ऊँच-नीच, छूतछात, पर्दा, नारी प्रतिबंध जैसी प्रथाएँ मनुष्यता को कलंकित करने वाली कुरीतियाँ हैं । प्रश्न हिन्दू परंपराओं का नहीं विश्व, विवेक और मानवीय न्याय का है । किसी संप्रदाय या किसी देश में कोई अनुचित परंपरा चल पड़े इसका अर्थ यह तो नहीं होता कि वह बात उचित और न्याय संगत भी ठहरा दी जाए । निष्पक्ष

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

न्याय का तकाजा यही है कि प्रत्येक मनुष्य चाहे वह किसी भी देश जाति या लिंग से पैदा हुआ हो, मनुष्य ही गिना जाना चाहिए और उसके मूल अधिकार समान होने चाहिए । बुरा काम करने वाले को नीच और अच्छा काम करने वाले को ऊँचा माना जाए इसकी तो कोई संगति है पर किसी वंश में या जाति में जन्म लेने के कारण कोई नीच या ऊँच हो सकता है यह सर्वथा असंगत बात है ।

(९) स्त्री और पुरुष के बीच खड़ी की गई दीवार सर्वथा अन्याय युक्त है । घूँघट, पर्दा, विधवा के पुनर्विवाह आदि प्रतिबंध यदि उचित हैं तो नर–नारी दोनों पर समान रूप से लागू होने चाहिए यदि अनुचित हैं तो दोनों पर से हटने चाहिए । इसी प्रकार कन्या और पुत्र के बीच बरता जाने वाला भेदभाव किसी भी दृष्टि से न्याय संगत नहीं है । यह मूढ़ मान्यताएँ हिन्दू समाज में गहराई तक जड़ जमाए बैठी हैं, इन्हें उखाड़े बिना कोई राह नहीं । आधी जनसंख्या नारी और एक तिहाई व्यक्ति अछूत बने हुए तिरस्कृत, बहिष्कृत द्वितीय श्रेणी के नागरिक बने रहें, यह देश के लिए आत्मघाती नीति है । यों कानून ने समानता प्रदान कर दी है, पर इससे क्या बनता है ? इन मूढ़ मान्यताओं के विरुद्ध एक गृह युद्ध जैसा सामाजिक मोर्चा खड़ा करना होगा जिसमें एक ओर मूढ़ मान्यताओं के पोषक परंपरावादी होंगे, दूसरी और प्रगतिशील न्यायनिष्ठ ।

(१०) अनाचारी तत्वों के प्रति समाज में घृणा, असहयोग, विरोध प्रतिरोध एवं संघर्ष की वृत्ति उत्पन्न करनी होगी । इन दिनों कुकर्मी लोगों को व्यवहार कुशल तथा भाग्यवान माना जाता है और जिन्हें उनका उत्पीड़न सहना पड़ा उनके अतिरिक्त अन्य लोग न उनकी निंदा करते हैं न विरोध । कई बार तो उन सफलताओं और उपलब्धियों की प्रशंसा तक की जाती है, जो स्पष्टतः अनीति से उपार्जित की गई थी । दुष्प्रवृत्तियों के रोकने का कारगर उपाय यह है कि उनके विरुद्ध घोर घृणा उभरे । कोई उसकी प्रशंसा न करे, न सहयोग दे । उनसे साहसपूर्वक भिड़ा भी जाए और विरोध करने में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भी पीछे न रहा जाए । कानून से, व्यक्तिगत अथवा सामूहिक प्रतिरोध से अवांछनीय तत्वों का रास्ता बंद किया जाए । भले ही इससे अपने को झंझट या कष्ट सहना पड़े ।

एक व्यक्ति के साथ किया गया अन्याय सारे समाज के प्रति किया गया अन्याय मानना चाहिए । दूसरों को सताया जाते देखकर हर व्यक्ति के मन में वैसे ही भाव उभरने चाहिए, जैसे उसे स्वयं सताया जाता तब उभरते । हम मुसीबत में होते हैं तो यही चाहते हैं कि दूसरे लोग सहायता करने आवें । दूसरों को इस स्थिति में पड़ा देखकर भी हमारे मन में वैसे ही भाव उमड़ने चाहिए और अनाचार से लड़ने के लिए हर व्यक्ति को आक्रोश एवं शौर्य व साहस का प्रदर्शन करना चाहिए । ऐसा वातावरण बनाने में योगदान देना चाहिए जिसमें वैसी अनीति बरतना संभव न रह जाए । हर दुष्ट दुरात्मा को हर ओर से निंदा, भर्त्सना, असहयोग एवं विरोध प्रतिरोध का सामना करना पड़े, ऐसे ही प्रयास आज की बहुमुखी दुष्प्रवृत्तियों का उन्मूलन कर सकते हैं ।

युग निर्माण परिवार के हर सदस्य को युग परिवर्तन की प्रक्रिया को एक धर्म युद्ध मानकर चलने के लिए कहा गया है । पाप और अनाचार से, दुष्टता और असुरता से लड़ना इस आपत्तिकाल में हर प्रबुद्ध एवं भावनाशील व्यक्ति के लिए अनिवार्य हो गया है । अज्ञान असुर से प्रचारात्मक मोर्चे पर, अभाव दैत्य से रचनात्मक मोर्चे पर और अनाचार दानव से संघर्ष के मोर्चे पर लड़ा जाएगा तभी हर मस्तिष्क पर अधिकार किए हुए आज के हिरण्याक्ष, लोभी दृष्टिकोण का अंत किया जा सकेगा ।

नवयुग के अवतरण में लगे हुए युग निर्माण परिवार के परिजनों को सृजन सेना के सैनिक कहा जाता है । धर्मयुद्ध के तीनों मोर्चों पर उनको लड़ने के लिए कटिबद्ध रहना होता है, और जो जिस स्थिति में है उसे उसी परिस्थिति में जितना संभव हो करना होता है । अपनी सृजन सेना की अन्य लोगों द्वारा निहित स्वार्थों एवं संकीर्ण उद्देश्यों के लिए खड़े किए गए दलों से तुलना नहीं की जा सकती । हम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सर्वतोन्मुखी सृजन के हर मोर्चे पर लड़ने वाले सैनिक हैं और उस महान प्रयोजन के लिए उतना ही बड़ा त्याग, बलिदान प्रस्तुत करने की तैयारी कर रहे हैं जितना कि शत्रु के आक्रमण से देश को बचाने के लिए सुरक्षा मोर्चे पर लड़ने वाले सशस्त्र सैनिक दिखाते हैं ।

इस महान प्रयोजन की पूर्ति में पूरा समय देकर इसी कार्य में दत्त चित्त से आत्मदान करने वाले सुयोग्य एवं कर्मठ कार्यकर्ताओं की एक सुव्यवस्थित सेना खड़ी करनी पड़ेगी जो वह समीपवर्ती क्षेत्र में ही नहीं, जहाँ भी आवश्यकता हो वहाँ अड़ जाने और चढ़ जाने के लिए प्रस्तुत रहे । इसके लिए उत्सुक और इच्छुक लोगों की कमी नहीं, पर चूँकि उस प्रकार के लोगों में से अधिकांश गृहस्थ हैं, उनके पीछे पारिवारिक उत्तरदायित्व हैं । उनकी पूर्ति के लिए कुछ उस स्तर की व्यवस्था करनी पड़ेगी जैसे गोखले ने सर्वेंट आफ इण्डिया सोसायटी की, और लाजपत राय ने पीपुल्स ऑफ इंडिया सोसायटी की स्थापना करके बनाई थी । युग परिवर्तन के इन प्राचीन इतिहासों के साथ एक महायुद्ध जुड़ा हुआ है । इस बार भी उसकी पुनरावृत्ति होगी । पर यह पूर्वकालीन शस्त्र युद्धों से भिन्न होगा, यह क्षेत्रीय नहीं व्यापक होगा । इसमें विचारों के अस्त्र प्रयुक्त होंगे और घर–घर में इसका मोर्चा खुलेगा । भाई–भाई से, मित्र–मित्र से और स्वजन–स्वजन से उसकी दुष्प्रवृत्ति के विरुद्ध लड़ेगा । अपनी दुर्बलताओं से हर किसी को लड़ना पड़ेगा । परिवार को सुधारने के लिए मंत्रणाएँ, प्रेम, आग्रह यहाँ तक कि भूख हड़ताल, मौन धारण, असहयोग आदि का सहारा लेकर उन्हें सन्मार्ग अपनाने के लिए विवश करना होगा । समाज में फैली दुष्प्रवृत्तियों से असहयोग, विरोध, संघर्ष के तीनों ही उपाय काम में लाने पड़ेंगे और समयानुसार अहिंसा से लेकर हिंसा तक के आधार ग्रहण करने पड़ेंगे । इस प्रकार नैतिक, बौद्धिक और सामाजिक क्रांति के साथ जुड़ा हुआ एक अति प्रचंड एवं अति व्यापक किंतु अनोखा महाभारत लड़ा जाएगा । कहने की आवश्यकता नहीं यह द्वितीय महाभारत हमारे निष्ठावान कार्यकर्ता भाई–बहन ही लड़ेंगे । ■

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कुरीति उन्मूलन आंदोलन

हिन्दू समाज में एक बड़ा सिर दर्द सामाजिक कुरीतियों के कारण उत्पन्न हो गया है । कितनी प्रथाएँ ऐसी चल पड़ी हैं जो बहुत धन खर्च करने की माँग प्रस्तुत करती हैं । मध्यम श्रेणी का व्यक्ति ईमानदारी से उतना ही मुश्किल से कमा सकता है जिसमें उसके परिवार का गुजारा किसी प्रकार हो सकता है । इस मँहगाई के जमाने में लंबी चौड़ी बचत कर सकना सर्वसाधारण के लिए संभव नहीं । आए दिन बहुत धन खर्च कराने की माँग करने वाली कुरीतियों का भी यदि मुँह भरना है तो बेईमानी के तरीके अपनाए बिना और कोई रास्ता नहीं मिलता । एक रास्ता यह भी है के पेट पर पट्टी बाँध कर, साग सत्तू से गुजारा करते हुए, बच्चों के मुँह में जाने वाली दूध की बूँदें बचाकर कौड़ी कौड़ी धन जोड़ा जाए और इन कुरीतियों की पिशाचिनी को तृप्त किया जाए । तीसरा तरीका है कि घर के बर्तन किवाड़ बेचकर, मित्र, रिश्तेदारों से कर्ज लेकर तत्काल का काम तो चला लिया जाए, पर पीछे भारी अभाव और तिरस्कार का जीवन बिताया जाए । कर्ज का ब्याज सिर पर चढ़ कर दौड़ता रहे । सीमित आमदनी में वह चुक नहीं पाता तो जलील होना पड़ता है और परेशानी भी उठानी पड़ती है ।

यह परिस्थितियाँ मनुष्य को इस बात के लिए विवश करती हैं कि वह किसी भी प्रकार, कहीं से भी धन कमाए और जो कुरीतियाँ गले में फाँसी के फंदे की तरह जकड़ी हुई हैं उनकी आवश्यकता पूरी करे । बेईमानी करने का हुनर, चातुर्य और अवसर भी सब किसी को प्राप्त नहीं होता । कुछ लोग चाहते हुए भी वैसा नहीं कर पाते और किसी भी प्रकार आवश्यक धन नहीं जुटा पाते तो चिंता की आग में घुल–घुल कर अप्रत्यक्ष आत्महत्या करते हुए मंद गति से अकाल मृत्यु की ओर चलते रहते हैं । इतना सब कुछ होते हुए भी हमारी मानसिक दुर्बलता यह सोचने नहीं देती कि क्या यह सामाजिक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कुरीतियाँ आवश्यक ही हैं ? क्या इन्हें सुधारा और बदला नहीं जा सकता ?

(१) **वर्ण व्यवस्था का विकृत स्वरूप हटे :** ब्रह्माजी ने अपने चारों पुत्रों को चार कार्यक्रम सौंपकर उन्हें चार वर्णों में विभक्त किया है । ज्ञान, बल, धन और श्रम यह चारों ही शक्तियाँ मानव समाज के लिए आवश्यक थीं । इनकी आवश्यकता की पूर्ति के लिए वंशगत प्रयत्न चलता रहे और उसमें कुशलता तथा परिष्कृति बढ़ती रहे, इस दृष्टि से इन चार कामों को चार पुत्रों में बाँटा गया था । चारों सगे भाई–भाई थे, इसलिए उनमें ऊँच–नीच का कोई प्रश्न न था । किसी का सम्मान, महत्व और स्तर न न्यून था न अधिक । अधिक त्याग–तप करने के कारण, अपनी आंतरिक महानता प्रदर्शित करने के कारण ब्राह्मण की श्रेष्ठता तो रही पर अन्य किसी वर्ण को भी हेय या निम्नस्तर का नहीं माना गया था ।

आज स्थिति कुछ भिन्न ही है । चार वर्ण अगणित जातियों–उपजातियों में बँट गए हैं और इससे समाज में भारी अव्यवस्था एवं फूट फैली है । परस्पर एक–दूसरे को ऊँचा–नीचा समझा जाने लगा । यहाँ तक कि एक ही वर्ण के लोग अपनी उपजातियों में ऊँच–नीच की कल्पना करने लगे । यह मानवीय एकता का प्रत्यक्ष अपमान है । व्यवस्थाओं या विशेषताओं के आधार पर वर्ण जाति रहे, पर ऊँच नीच की मान्यता को स्थान न मिले । सामाजिक विकास में भारी बाधा पहुँचाने वाले इस अज्ञान को जितनी जल्दी हटा दिया जाए उतना ही अच्छा ।

(२) **उपजातियों का भेदभाव हटे :** चार वर्ण रहें पर उनके भीतर की उपजातियों की भिन्नता ऐसी न रहे जिसके कारण परस्पर रोटी बेटी का व्यवहार भी न हो सके । प्रयत्न ऐसा करना चाहिए कि उपजातियों का महत्व गोत्र जैसा स्वल्प रह जाए और एक वर्ण के विवाह शादी व अन्य आचार उस वर्ण की सभी उपजातियों में होने लगें । ब्राह्मण जाति के अंतर्गत सनाढ्य, गौड़, गौतम कान्यकुब्ज,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मालवीय, मारवाड़ी, सारस्वत, मैथिल, सरयूपारीण, श्रीमाली, पर्वतीय आदि अनेक उपजातियाँ हैं । यदि इनमें परस्पर विवाह शादी होने लगें तो इससे उपयुक्त वर कन्या, खोजने में बहुत सुविधा रहेगी । अनेक रूढ़ियाँ मिटेंगी और दहेज जैसी हत्यारी प्रथाओं का देखते–देखते अंत हो जाएगा । इस दिशा में साहसपूर्ण कदम उठाए जाने चाहिए ।

(३) नर नारी का भेदभाव समाप्त हो : जातियों के बीच बरती जाने वाली ऊँच–नीच की तरह पुरुष और स्त्री के बीच रहने वाली ऊँच–नीच की भावना निंदनीय है । ईश्वर के दाहिने बाँए अंगों की तरह नर नारी की रचना हुई है । दोनों का स्तर और अधिकार समान हैं । इसलिए सामाजिक न्याय और नागरिक व पारिवारिक अधिकार भी दोनों के समान होने चाहिए । प्राचीनकाल में था भी ऐसा ही । तब नारी भी नर के समान ही प्रबुद्ध और विकसित होती थी । नई पीढ़ियों की श्रेष्ठता कायम रखने तथा सामाजिक उत्कृष्टता बनाए रखने में उसका पुरुष के समान ही योगदान था ।

पुत्र और पुत्रियों के बीच बरते जाने वाले भेदभाव को समाप्त करना चाहिए । दोनों को समान स्नेह, सुविधा और सम्मान मिले । पिछले दिनों जो अनीति नारी के साथ बरती गई है, उसे दासी और पतित की निंदनीय स्थिति दी गई है, उसका प्रायश्चित यही हो सकता है कि नारी की शिक्षा और उसे स्वावलंबी बन सकने जितनी योग्यता प्राप्त करने का अधिकाधिक अवसर प्रदान किया जाए । सामाजिक न्याय के अनुसार नारी को शिक्षा और स्वावलंबन की दिशा में विशेष सुविधा मिलनी चाहिए ताकि उनका पिछड़ापन अपेक्षाकृत जल्दी ही प्रगति में बदल सके ।

(४) पर्दा प्रथा : हमारे अपने देश में कभी भी प्रचलित नहीं रही है । प्राचीनकाल में स्त्रियाँ सभी क्षेत्रों में काम करती थीं और उन्हें विद्याध्ययन, योग्यता अभिवर्धन और अपनी प्रतिभा से समाज को लाभ पहुँचाने की खुली छूट थी, उन्हें कहीं किसी प्रतिबंध में नहीं रहना पड़ता था । इस घातक परंपरा को समूल नष्ट करने के लिए

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

किसी स्त्री से घूँघट खुलवा देना या पर्दा न करने के लिए तैयार कर देना भर पर्याप्त नहीं है । वस्तुतः इसके लिए तो महिलाओं में आत्म विश्वास जागृत करने के व्यावहारिक प्रयास करने चाहिए ताकि वे स्वयं को आश्रिता, संरक्षिता तथा अबला नहीं वरन् समर्थ स्वावलंबी और परिस्थितियों की चुनौती स्वीकार कर सकने वाली अनुभव करने लगे ।

इन दिनों प्रचलित परिवार व्यवस्था में तो नारी नर के कंधों पर बोझ और मस्तिष्क पर तनाव ही अधिक बनी रहती है । पुरुष के समान ही समर्थ होने के आत्मविश्वास से संपन्न, पर्दे की हीनता ग्रंथि और अपराध भावना जैसी कुण्ठा से मुक्त होकर नारी जब परिवार को संभालेगी तो समाज पर भी इसका आश्चर्यजनक प्रभाव पड़ेगा । पर्दा प्रथा उस समय चली जब यवन लोग बहू–बेटियों पर कुदृष्टि डालते और उनका अपहरण करते थे । अब वैसी परिस्थितियाँ नहीं रहीं तो पर्दा भी अनावश्यक हो गया । यदि उसे जरूरी ही समझा जाए तो स्त्रियों की तरह पुरुष भी घूँघट किया करे क्योंकि चारित्रिक पतन के संबंध में नारी की अपेक्षा नर ही अधिक दोषी पाए जाते हैं ।

(५) **अश्लीलता का प्रतिकार :** अश्लील साहित्य, अर्ध नग्न युवतियों के विकारोत्तेजक चित्र, गंदे उपन्यास, कामुकता भरी फिल्में, गंदे गीत, वेश्यावृत्ति, अमर्यादित कामचेष्टाएँ, नारी विद्यमान शील, संकोच, मर्यादा का व्यतिक्रम, दुराचारों की भौंड़े ढंग से चर्चा आदि अनेक बुराइयाँ अश्लीलता के अंतर्गत आती हैं । इनसे दांपत्य जीवन पर बुरा प्रभाव पड़ता है और शरीर एवं मस्तिष्क खोखला होता है । शारीरिक व्यभिचार की तरह यह मानसिक व्यभिचार भी मानसिक एवं चारित्रिक संतुलन को बिगाड़ने में दावाग्नि का काम करता है । उसका प्रतिकार किया जाना चाहिए । ऐसे चित्र, केलेण्डर, पुस्तकें, मूर्तियाँ, तथा अन्य उपकरण हमारे घरों में न रहें जो अपरिपक्व मस्तिष्कों में विकार पैदा करें । अश्लीलता का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विरोध करने के लिए अश्लीलता राक्षसी' का भयंकर पुतला बनाकर उसके हाथों, गले आदि में गंदे चित्र, पुस्तकें आदि लटका कर जुलूस निकाल कर नारे लगाते हुए निर्धारित स्थान पर पहुँचकर उसकी होली जलाई जाए ।

(६) **बाल विवाह, अनमेल विवाह** : बाल विवाहों की भर्त्सना की जाए और उनकी हानियाँ जनता को समझाई जाएँ । स्वास्थ्य, मानसिक संतुलन, आगामी पीढ़ी एवं जीवन विकास के प्रत्येक क्षेत्र पर इनका बुरा असर पड़ता है । लड़की–लड़के जब तक गृहस्थ का उत्तरदायित्व अपने कंधों पर संभालने लायक न हों तब तक उनके विवाह नहीं होने चाहिए । इस संबंध में जल्दी करना अपने बालकों का भारी अहित करना ही है । अशिक्षित और निम्न स्तर के लोगों में अभी भी बाल विवाह का बहुत प्रचलन है । उन्हें समझाने बुझाने या कानूनी भय बताकर इस बुराई से विरत करना चाहिए । अनमेल विवाहों को भी रोका जाना और उनके विरुद्ध वातावरण बनाना आवश्यक है ।

(७) **भिक्षा व्यवसाय की भर्त्सना** : समर्थ व्यक्ति के लिए भिक्षा माँगना उसके आत्म गौरव और स्वाभिमान के सर्वथा विरुद्ध है । आत्म गौरव खोकर मनुष्य पतन की ओर ही चलता है । खेद है कि भारतवर्ष में यह वृत्ति बुरी तरह बढ़ी है और उसके कारण असंख्य लोगों का मानसिक स्तर अधोगामी बना है ।

जो लोग सर्वथा अपंग असमर्थ हैं, जिनके परिजन या सहायक नहीं उनकी आजीविका का प्रबंध सरकार को या समाज के दान से संस्थानों को स्वयं करना चाहिए, जिससे इन अपंग लोगों को बार–बार हाथ पसार कर अपना स्वाभिमान न खोना पड़े और बचे हुए समय में वे कोई उपयोगी कार्य कर सकें । अच्छा हो ऐसी अपंग संस्थाएँ जगह–जगह खुल जाएँ और उदार लोग उन्हीं के माध्यम से वास्तविक दीन–दुखियों की सहायता करें ।

बहानेबाज समर्थ लोगों को भिक्षा नहीं देनी चाहिए । इससे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आलस और प्रमाद बढ़ता है, जनता को आवश्यक भार सहना पड़ता है । आडंबरी लोग दुर्गुणों से ग्रस्त होकर तरह–तरह से जनता को ठगते एवं परेशान करते हैं । भजन का उद्देश्य लेकर चलने वालों के लिए भी यही उचित है कि वे अपनी आजीविका स्वयं कमाएँ और बाकी समय में भजन करें ।

(८) **मृत्यु भोज की व्यर्थता :** किसी के मरने के बाद उस घर में दो सप्ताह के भीतर विवाह शादियों जैसी दावत का आयोजन होना दिवंगत व्यक्ति के प्रति अपमान है । दावतें तो खुशी में उड़ाई जाती हैं । मृत्यु को शोक चिह्न मानते हैं तो फिर दावतों का आयोजन किस उद्देश्य से ? मृतक के मित्रों और संबंधियों के लिए भी यही उचित है कि इस क्षतिग्रस्त परिवार की कोई सहायता न कर सकते हों तो कम से कम दावतों की सलाह देकर उसका आर्थिक अहित तो न करें ।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

मृतक की आत्मा को शांति देने के लिए धार्मिक कृत्य कराए जाएं । ऐसे शुभ कार्यों में, जिनसे मानवता की कोई सेवा होती हो, श्राद्ध के उपलक्ष में कितना ही बड़ा दान किया जा सकता है । वही सच्ची श्रद्धा का प्रतीक होने से सच्चा श्राद्ध कहा जा सकता है ।

(९) **जेवरों में धन की बर्बादी :** जेवरों में धन की बर्बादी प्रत्यक्ष है, जो पैसा किसी कारोवार में या बैंक में ब्याज पर लगने से बढ़ सकता था वह जेवरों में कैद पड़ा रहता है । टूट–फूट, मजदूरी, टाँका, बट्टा में काफी हानि सहनी पड़ती है । पहनने वाले का अहंकार बढ़ता है । दूसरों में ईर्ष्या जगती है । चोर लुटेरों को अवसर मिलता है । जिस अंग में उन्हें पहनते हैं वहाँ दबाव और अस्वच्छता बढ़ने से स्वास्थ्य को हानि पहुँचती है । चमड़ी कड़ी पड़ जाती है और पसीने के छेद बंद हो जाते हैं । नाक के जेवरों से तो सफाई में भी अड़चन पड़ती है ।

(१०) **भूत, पलीत और बलि प्रथा** भूत पलीतों का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मानसिक विभ्रम पैदा करके सयाने, दिवाने और ओझा लोग भोली जनता का मानसिक और आर्थिक शोषण बुरी तरह करते हैं। मानसिक रोगों, शारीरिक कष्टों एवं दैनिक जीवन में आती रहने वाली साधारण सी बातों को भूत की करतूत बनाकर व्यर्थ ही भोले लोगों को भ्रमित करते हैं। उस भ्रम का इतना घातक प्रभाव पड़ता है कि कई बार तो जीवन संकट तक उपस्थित हो जाते हैं।

धर्म ग्रंथों में जिन देवी देवताओं का वर्णन है उनकी संख्या भी पर्याप्त है, पर उतने से भी संतोष न करके लोगों ने जाति–जाति के वंश–वंश के, गाँव–गाँव के इतने अधिक देवता गढ़ लिए हैं कि आश्चर्य होता है। उन पर मुर्गे, अंडे, भैंसे, बकरे, सुअर आदि चढ़ाते हैं। यह कैसी विडंबना है कि दया और प्रेम के लिए बने हुए देवता अपने ही पुत्र पशु पक्षियों का खून पीएँ। हमें एक ही परमात्मा की उपासना करनी चाहिए और इन भूत–पलीतों के भ्रम जंजाल से सर्वथा दूर रहना चाहिए।

(११) **अन्न के अपव्यय को रोकना :** अपने देश में बड़ी दावतों का, उनमें अनेक प्रकार के व्यंजन परोसने का, आवश्यकता से अधिक खाने का बहुत रिवाज है। छोटे–छोटे हर्षोत्सवों में बड़े–बड़े प्रीतिभोज खड़े कर दिए जाते हैं। बड़ी दावतों में अन्न की बुरी तरह बर्बादी होती है। ड्यौढ़ा–दूना खाकर पेट भी खराब करते हैं और अनाज भी। इसके साथ–साथ एक बुरी प्रथा यह जुड़ी हुई कि दावतों की शान पत्तलों पर छोड़ी हुई जूठन से की जाती है। खाने वालों की अमीरी और खिलाने वाले की दिलेरी इससे आँकी जाती है कि जूठन कितनी छोड़ी गई। यह अन्न देवता के अपमान का बहुत ही बुरा पहलू है। एक ओर तो हम अन्न को देवता कहें और दूसरी ओर उसे इस प्रकार तिरस्कृत स्थिति में फेंक दें, यह कितनी बुरी बात है ?

(१२) **अशिक्षा का निराकरण :** राष्ट्रीय प्रगति के लिए नितांत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आवश्यक है । उसे दरिद्रता हटाने के लिए किए जाने वाले प्रयास के ही समतुल्य माना जाए और इसके लिए हर व्यक्ति का चिंतन काम करे, उत्साह की प्रत्येक उमंग सक्रिय प्रयास में बदले तभी काम चलेगा । इस प्रयोजन को पूरा करने में सरकारी और गैर सरकारी क्षेत्र पूरी तरह जुट जाएँ, एक दूसरे का भी पूरा सहयोग करें तो समय की अति महत्वपूर्ण आवश्यकता को सरलतापूर्वक पूरा किया जा सकता है ।

प्रौढ़ अशिक्षितों में से अधिकांश आजीविका उपार्जन में व्यस्त होते हैं । इसलिए उनके अवकाश के समय ही शिक्षा व्यवस्था की बात सोची जा सकती है । पुरुषों के लिए वह समय रात्रि का ही हो सकता है । उनके लिए प्रौढ़ रात्रि पाठशालाओं का प्रबंध होना चाहिए । महिलाओं के भोजन बनाने एवं अन्य गृह कार्यों से थोड़ी सी फुरसत पाने का समय तीसरे प्रहर का है । उनके लिए प्रौढ़ महिला पाठशालाएँ मध्याह्न में दो से पाँच बजे के बीच में तीन घंटे को चल सकती हैं । प्रौढ़ों के लिए रात्रि को ७ से १० बजे तक का समय उपयुक्त रह सकता है । जहाँ तीन घंटे का समय न निकले वहाँ उसे ढाई से दो घंटे का भी किया जा सकता है । सर्दियों और गर्मियों में दिन छोटे बड़े होते हैं, तदनुसार इन पाठशालाओं का समय भी आगे पीछे होता रह सकता है ।

(१३) **जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण** : अंधाधुंध बच्चे पैदा करने और परिवार बढ़ाने का सामूहिक दुष्परिणाम आज सबके सामने हैं । स्वास्थ्य की समस्या, शिक्षा की समस्या, निवास की समस्या से क्या व्यक्ति क्या समाज और क्या राष्ट्र अब अगणित समस्याओं से ग्रस्त हैं । चैन तो किसी को है ही नहीं । कोई बीमारी से परेशान, किसी का घर नहीं बना । बेरोकटोक बढ़ रही आबादी ने आज मनुष्य का संपूर्ण जीवन अस्तव्यस्त कर दिया है फिर भी आबादी उसी रफ्तार से बढ़ती जा रही है ।

अपने व्यक्तिगत, समाज, राष्ट्र और विश्व हित की दृष्टि से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जनसंख्या को सीमित एवं नियंत्रित रखा जाना आवश्यक है अन्यथा प्रकृति को विवश होकर ध्वंसात्मक कार्य करना पड़ेगा । भुखमरी, अकाल, मंहगाई, भ्रष्टाचार, युद्ध आदि उसी के अभिशाप हैं । संसार को नियमित रखने के लिए प्रकृति जोर मारती है तो उससे विनाश के ही लक्षण दिखाई देते हैं । इसलिए मनुष्य स्वयं उस समस्या को सुधारने का प्रयत्न करे यह सबसे अच्छी बात और फायदे की बात हो सकती है । आज की स्थिति में यह बहुत आवश्यक हो गया है कि जनसंख्या की वृद्धि रोकने के लिए कुछ किया जाए । अन्य जो भी साधन हैं उन्हें हम बुरा नहीं बताते, किंतु एक बात विश्वासपूर्वक कही जा सकती है कि जनसंख्या बढ़ाने के अपराधी हम स्वयं हैं परिस्थितियाँ नहीं, इसलिए यह प्रयत्न भी हमें ही करना होगा ।

समाज में अवांछनीयता कम और उत्कृष्टता अधिक हैं । तभी तो यह संसार अब तक जीवित है । यदि पाप अधिक और पुण्य स्वल्प रहा होता तो अब तक यह दुनिया श्मशान बन गई होती । तब यहाँ सत्य, शिव और सुन्दर इन तीनों में से एक का भी अस्तित्व जीवित न रहा होता । आग दुनिया में बहुत है, पर पानी से अधिक नहीं । इतने पर भी हम देखते हैं कि अनाचार घटता नहीं, बढ़ता ही जाता है । सरकारी प्रयत्न रोकथाम के लिए काफी बढ़ाए गए हैं, पर उनकी पकड़ में दुष्टता की पूँछ भर आती है । आश्चर्य इस बात का है कि सज्जनता का स्पष्ट बहुमत होते हुए भी दुष्टता क्यों पनपती और फलती फूलती चली जाती है ? रोकथाम की सर्वजनीन आकांक्षा क्यों फलवती नहीं होती ? असुरता की शक्ति क्यों अजेय बनती जा रही है ? देवत्व उसके आगे पराजित होता और हारता झक मारता क्यों दिखाई देता है ?

विचार करने पर स्पष्ट होता है कि पाप शक्ति स्वल्प है । बलवान चोर घर में घुसें और घर मालिकों में से कुछ स्त्री, बच्चे जग पड़ें, कुत्ते भौंकने लगें तो उन्हें तत्काल उलटे पैरों भागना पड़ता है ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

स्पष्ट है पाप अत्यंत दुर्बल होता है । प्रकारांतर से दुर्बलता ही निकृष्टता के रूप में परिणत होती है । सत्य में हजार हाथी के बराबर बल बताया गया है, जनमानस में से उस रोष आक्रोष का, शौर्य–साहस का अस्तित्व मिटा नहीं तो घट अवश्य गया है, जिसमें अनीति की चुनौती स्वीकार करने की तेजस्विता विद्यमान रहती है । इस कसौटी पर औसत आदमी बड़ा डरपोक, कायर, दब्बू, संकोची, पलायनवादी और कुछ कुछ वैसा ही बन जाता है, जैसा कि गीता का विषादग्रस्त अर्जुन था । उसमें रोष, आक्रोश उत्पन्न करने के लिए भगवान को गीता सुनानी पड़ी और अपने प्राण प्रिय मित्र को क्लीव, क्षुद्र, दुर्बल, अनार्य आदि एक से एक कड़ी गालियों की झड़ी लगाने की आवश्यकता अनुभव हुई ।

अर्जुन समझौतावादी, संतोषी प्रकृति का और सज्जन दीखता है । वह क्षमा करने, संतोष रखने की नीति अपनाना चाहता है और भीख आदि के सहारे संतुष्ट रहना चाहता है । युद्ध का कटु प्रसंग उसे अच्छा नहीं लगा । आज हम सब की मनःस्थिति ऐसी ही हो गई है कि झगड़े में न पड़ने, किसी तरह झंझट काट लेने, अनाचार से निगाह चुरा लेने की बात में ही भलाई देखते हैं । यह भलाई दिखाने वाली सज्जनता का आवरण ओढ़े हुए क्षमाशीलता वस्तुतः परले सिरे की कायरता होती है । इससे अपने को झंझट में न पड़ने से बचाने के अतिरिक्त किसी से दुश्मनी मोल न लेने और बदनामी से बचने जैसे ऐसे तत्व भी मिले रहते हैं । उन्हें प्रकारांतर से अनीति समर्थक और परिपोषक ही कहा जा सकता है ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

व्यसन मुक्ति आंदोलन

सभी जानते हैं कि नशेबाजी की दुष्प्रवृत्ति से व्यक्ति और समाज को असीम हानि उठानी पड़ती है । स्वास्थ्य बिगड़ता है । बुद्धिबल घटता है । क्रिया शक्ति क्षीण होती है । दरिद्रता बढ़ती है । निंदा होती है । परिवार में विक्षोभ पनपता है । बच्चे कुसंस्कारी परंपराएँ अपनाते हैं । ऐसी अनेक हानियों से भरपूर नशेबाजी को मिटाया ही जाना चाहिए । इन दिनों नशों में तमाखू और शराब अग्रणी है । इनके निमित्त लगने वाली भूमि, पूँजी, श्रम शक्ति का मूल्यांकन किया जाए तो प्रतीत होगा कि इतने धन से पूरे देश को सुशिक्षित बनाया जा सकता और मनुष्य का आयुष्य, आरोग्य एवं कौशल अनेक गुना अधिक बढ़ सकता है ।

नशेबाजी को मनुष्य की जीवन यात्रा का एक भटकाव माना जाए तो अत्युक्ति न होगी । दुर्व्यसनों में यों तो कई ऐसे हैं जो छिटपुट रूप में विभिन्न वर्गों में प्रचलित हैं, पर जन साधारण तक दो ही प्रमुखतः पहुँच पाए हैं । ये हैं—तमाखू और शराब । छिटपुट अफीम, गाँजा, चरस, हशीश, कोकीन, एल. एस. डी. एवं अन्य मादक औषधियों का दुरुपयोग किया जाता है । जितना अधिक विरोधी प्रचार एवं हानियों का वर्णन तमाखू व शराब सेवन का किया गया है, संभवतः अन्य किसी भी वस्तु का न किया गया होगा । फिर भी जनमानस में इसकी जड़ें कितनी गहरी हैं, इसका अनुमान आसानी से लगाया जा सकता है ।

यह सभी भलीभाँति जानते हैं कि नशे की वस्तुएँ न तो किसी प्रकार के पोषक टॉनिक हैं न ही मानसिक क्षमता बढ़ाने वाले हैं । वे एक प्रकार के हलके विष हैं जो तात्कालिक स्फूर्ति एवं क्षणिक मानसिक उत्तेजना मात्र देते हैं । इसी को आधार मानकर व इसी लाभ के गुण गाकर 'थकान मिटाने' 'बोरियत भगाने' के नाम पर इसका सेवन किया जाता है । यहाँ तक कि इसे प्रगतिशीलता का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चिह्न भी मान लिया गया है ।–जहाँ–जहाँ संपत्ति बढ़ी है एवं औद्योगीकरण, शहरीकरण बढ़ता चला गया है, वहाँ ये दुर्गुण भी कई गुने बढ़े हैं । नशेबाज धन खोता है, जीवनी शक्ति खोता है, दरिद्रता उससे आ लिपटती है एवं बीमारियाँ पीछा नहीं छोड़तीं । मनोबल, दूरदर्शिता, बुद्धिकौशल, धैर्य, साहस जैसी मानसिक विशेषताएँ बेतरह नष्ट होती चली जाती हैं, परिवार अस्तव्यस्त हो जाते हैं एवं इसका प्रभाव पूरे समाज व राष्ट्र पर पड़ता है । विकृत एवं गई गुजरी परिस्थितियों में पड़े व्यक्ति समाज में जो विग्रह उत्पन्न करते हैं, उससे अपराध अनाचारों की ही वृद्धि होती है । इसीलिए नशेबाजी जैसी समस्या से इस राष्ट्र का हर व्यक्ति परोक्ष रूप से जुड़ा है क्योंकि वह भी समाज का एक अंग है ।

प्रति वर्ष करीब १४ खरब रुपया तंबाखू के नशे की होली में फूँक दिया जाता है । इस राशि को यदि उपयोगी उद्योगों में लगा दिया गया होता तो देश में चारों ओर खुशहाली दिखाई देती । इस राशि से यदि भारत के पौने दो करोड़ बेरोजगारों के लिए काम के अवसर निकाल लिए गए होते तो इतनी बड़ी जनशक्ति का अपव्यय न हुआ होता । तंबाखू सेवन का स्वास्थ्य संबंधी एक पक्ष ऐसा भी है जो अपनी स्थूल प्रतिक्रियाओं के रूप में प्रत्यक्ष सामने दिखाई देता है । करीब डेढ़ लाख व्यक्ति प्रतिवर्ष धूम्रपान जन्य रोगों से ग्रसित हो जाते हैं । इनकी बीमारी पर यदि प्रति व्यक्ति चिकित्सा, आहार, सेवा सुश्रूषा का अन्दाज लगाया जाए तो करीब २० करोड़ रुपया राष्ट्र का प्रतिवर्ष इसी में नष्ट हो जाता है । बीमारियों के कारण १२ हज़ार पलंग अस्पतालों में हमेशा घिरे रहते हैं एवं सैकड़ों मजदूरों की व्याधि के कारण काम तथा कल कारखानों में अनुपस्थिति से देश को ३०० करोड़ रुपए प्रतिवर्ष हानि उठानी पड़ती है ।

इसी प्रकार टी. बी. (क्षय रोग), बर्जरडीसिज, दृष्टिदोष, हृदय रोग ऐसी व्याधियाँ है जो अंततः मारक ही सिद्ध होती हैं अथवा ऐसा अपंग, पराश्रित बनाकर छोड़ती हैं कि उसे प्रत्यक्ष नारकीय जीवन ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कहा जाना चाहिए । मात्र यही पक्ष नहीं, कुछ तथ्य और भी ऐसे हैं जो समाज को सीधे प्रभावित करते हैं । खेत से काटी गई तंबाकू की कच्ची पत्तियाँ पहले आग में सुखाकर कड़क बनाई जाती हैं । हर ३०० सिगरेटों की तंबाखू को पकाने के लिए एक भरापूरा पेड़ जलाकर राख कर दिया जाता है । १ एकड़ की तंबाखू की फसल को पकाने के लिए प्रतिवर्ष एक एकड़ हरा भरा जंगल जलाकर धुआँ कर दिया जाता है । एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका (१९८०) के अनुसार ३,६३,००० टन प्रतिवर्ष तंबाखू उत्पादन हेतु १२ लाख ८६ हजार एकड़ भूमि में विद्यमान जंगलों को मात्र भारत में वृक्ष विहीन कर दिया गया । जैसे-जैसे सिगरेटों की खपत एवं तदनुरूप उत्पादन बढ़ता जा रहा है, वैसे वैसे जंगल नष्ट किए जा रहे हैं, जिसका पर्यावरण पर बहुत ही प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है । इस प्रकार तंबाखू वर्तमान ऊर्जा संकट के समय में न केवल एक गरीब के चूल्हे की लकड़ी को चुराती है अपितु प्रदूषण वृद्धि पर्यावरण असंतुलन में योगदान देकर उसके स्वास्थ्य, धन एवं परिवार की प्रसन्नता को भी चौपट कर देती है ।

सिगरेट कंपनियों के एकमत विरोध व सरकार को तंबाकू व टैक्स से प्राप्त असीम आमदनी के बावजूद एक विशाल जनमत पिछले दिनों अमेरिका में तैयार किया गया । समाजसेवी संगठनों द्वारा संचालित इस आंदोलन ने ऐसा व्यापक स्वरूप लिया कि अंततः सरकार को झुकना पड़ा । वहाँ उत्पादन पर नियंत्रण लगा दिया गया है एवं इनके किसी भी प्रकार से विज्ञापन पर (टी. वी., सिनेमा, समाचार पत्र आदि) प्रतिबंध भी हैं । एक समय विशेष के अंदर धीरे-धीरे इसका उत्पादन कम होता चला जाएगा, ताकि नशेबाजों को यह उपलब्ध ही न हो । यह तो सरकार द्वारा उठाए गए कदमों का एक सशक्त स्वरूप हुआ । पर इसके लिए जनशक्ति को भी आगे आना होगा । मनुष्य को यह जानना होगा कि अर्थ, श्रम, कौशल, शिक्षा, स्वास्थ्य का एक समग्र स्वरूप ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

व्यक्ति की आंतरिक एवं बाह्य संपन्नता का निर्धारण करता है । यदि दुर्व्यसनों से मुक्ति न पाई गई तो ये सभी छिनते चले जाएँगे एवं अंत बुरा ही होगा ।

एक सिगरेट, पीने वाले की आयु में ५ मिनट कम कर देती है । २० सिगरेट अथवा १५ बीड़ी प्रतिदिन पीने वाला एवं करीब ५ ग्राम सुरती, खैनी आदि के रूप में तंबाखू खाने वाला व्यक्ति अपनी आयु में से १० वर्ष कम कर लेता है । जितने भी वर्ष वह जीता है, असंख्य व्याधियों से ग्रस्त होकर समाज के लिए एक भार बनकर ही जीता है ।

वायरल केपेसिटी, लंग रिजर्ववाल्यूम मैक्जीमम ब्रीदिंग केपेसिटी जैसे मापन ये बताते हैं कि प्राणवायु को अंदर ग्रहण करने की क्षमता ऐसे व्यक्तियों में क्रमशः कम होती जाती है, पर यह अपरिवर्तनीय नहीं है । प्रयोगों से यह भी ज्ञात हुआ है कि यदि धीरे–धीरे बीड़ी व सिगरेट छोड़ दी जाए तो लंग फंक्शन दो वर्ष के भीतर सामान्य स्थिति में आ जाते हैं । यह तथ्य अपने आप में महत्वपूर्ण विधेयात्मक एवं प्रेरणाप्रद हैं ।

धूम्रपान छोड़ने से प्रतिमाह बचत के अलावा खोए स्वास्थ्य की प्राप्ति, मानसिक प्रसन्नता कुछ ऐसे अनुदान हैं जिनकी जानकारी हर धूम्रपान प्रेमी को करानी चाहिए । नित्य प्रतिक्षण होने वाली हानि की जानकारी एवं इसके निवारण हेतु उठाए गए कदम व्यक्ति को किस प्रकार लाभ पहुँचा सकते हैं, यह जानना बहुत जरूरी है ।

वैज्ञानिक तथ्य एवं अर्थशास्त्रियों द्वारा प्रदत्त आँकड़े इस विष को किसी भी रूप में ग्रहण किए जाने के विरोध में आते हैं । फिर भी इस प्रचलन में कमी आना तो दूर, वृद्धि ही होती चली जा रही है । इसका कारण एक ही समझ में आता है–"जनमानस की नासमझी एवं अदूरदर्शिता ।"

महात्मा गाँधी ने अपने नवजीवन पत्र में लिखा था–तंबाखू से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पाचन शक्ति घट जाती है । मुँह का स्वाद चला जाता है । स्वाभाविक भोजन बुरा मालूम होता है । अतएव मसाले मिलाने पड़ते हैं । मुँह में बुरी बदबू आती है । उसके धुएँ से हवा खराब होती है । मुँह में छाले पड़ जाते हैं । दाँत काले, पीले और कुरूप हो जाते हैं । तंबाखू पीने, खाने वालों के पीछे अनेक भयंकर बीमारियाँ लग जाती हैं, फिर भी न जाने क्यों लोग तंबाखू के आदी होते चले जाते हैं ।

टाल्सटाय का कथन है—तंबाखू पीने से सद्बुद्धि नष्ट होकर अधर्म में प्रवृत्ति बढ़ती है । यह एक ऐसा नशा है जो कई बातों में शराब से भी बुरा है ।

विचारशीलों का अभिमत जानकर हम अपने पैरों आप कुल्हाड़ी मारने से, कैन्सर जैसे भयानक रोगों की यातनाओं को आमंत्रण देने से बचे रहें । जो इस कुटेब में फंस चुके हैं वे छोड़ दें तो यह एक बुद्धिमानी की बात ही होगी । नशे के रूप में अफीम का सेवन करने वालों को जब इसकी आदत पड़ जाती है तो अपनी आदत से विवश होकर प्रयोक्ता को इसकी मात्रा निरंतर बढ़ानी पड़ती है क्योंकि एक बार में अफीम का सेवन जितनी मात्रा में किया गया, दुबारा सेवन करने से वह उतनी उत्तेजना नहीं देती और अफीमची उसकी मात्रा बढ़ाने के लिए विवश हो जाता है । कहा जा चुका है कि अफीम स्नायुतंत्र पर अपना दुष्प्रभाव डालती है । इसका सेवन करने वाला व्यक्ति सुस्ती, भूख—प्यास की कमी, भयभीत और कमजोर होता जाता है और अंततः उसे काल कवलित होना पड़ता है ।

शरीर जब अफीम का अभ्यस्त हो जाता है और फिर कभी उसे खुराक नहीं मिलती तो अफीमची को दस्त, बेतहाशा पसीना, मांसपेशियों की ऐंठन आदि शिकायतें होने लगती हैं । इसकी दर्द निवारण क्षमता के संबंध में भी यह पता चला है कि वस्तुतः इससे दर्द दूर नहीं होता । मस्तिष्क को सर्वाधिक प्रभावित करने के कारण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसकी अनुभूति स्वरूप भय और चिंता भले ही न होती हो, पर दर्द तो होता ही है ।

भाँग की पत्तियों या उनके धुएँ को पेय के रूप में सेवन किया जाता है । इसका पहला प्रभाव मस्तिष्क पर होता है कि यह उसे संवेदना शून्य बनाती है और चित्त–भ्रम भी हो जाता है । जिससे मनुष्य कई अविवेकपूर्ण हरकत करने लगता है । आदमी को जो धुन लग जाती है, वह उसी में लगने लगता है । जैसे किसी ने भाँग पीकर हँसना शुरू किया तो वह हँसता ही जाता है । बातें करने में लग जाने वाले लोग बातें ही करते हैं । कुछ लोग ऐसा भी मानते हैं कि भाँग खाने से भूख बढ़ जाती है, परंतु वस्तुतः ऐसा नहीं है । हाँ इतना अवश्य होता है भाँग खाकर आदमी ज्यादा खाना खाने लगता है । यह भी धुन बन जाने और मस्ती बढ़ जाने के कारण ही होता है अन्यथा भाँग के नशे में ज्यादा खा लेने वाले व्यक्तियों को भी अपच, बदहजमी और गैस की शिकायत सामान्य लोगों की तरह ही पैदा हो जाती है ।

भाँग अधिक मात्रा में सेवन या आदतन इसकी दासता से व्यक्ति की अनुभूति, विवेक और स्मरण शक्ति का ह्रास होने लगता है । कुछ लोगों में भाँग का प्रभाव मानसिक मूर्च्छा के रूप में भी देखा गया है । इस कारण वे अपने विवेक और नैतिकता पर निष्ठा को कायम नहीं रख पाते तथा वे घबराहट हिंसा, आक्रामकता जैसी ऊलजलूल और अवांछनीय हरकतें करने लगते हैं । स्वास्थ्य और शरीर संतुलन की दृष्टि से इसको दुष्प्रभावशील ही माना गया है ।

मादक द्रव्यों से होने वाली हानियाँ सर्वविदित हैं । इधर हमारे देश की युवा पीढ़ी में, राष्ट्र के नव निर्माण का उत्तरदायित्व जिसके कंधों पर है, यह कुप्रवृत्ति तेजी से बढ़ती चली जा रही है । युवावस्था में जब शरीर के अंग–प्रत्यंग विकास कर रहे होते हैं, जीवनी शक्ति बढ़ रही होती है तभी मादक द्रव्यों का कुप्रभाव उन्हें निष्क्रिय और अशक्त करने लगता है । यह शोचनीय स्थिति है ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शराब, गाँजा, भाँग, चरस, मार्फिन, हशीश, एल. एस. डी., सिगरेट, तंबाखू जैसे नशे तो युवक युवतियों में इतने प्रिय हो चुके हैं जिन्हें न अपनाने वाले को रूढ़िवादी तथा पुराण पंथी समझा जाता है ।

नशे के प्रचार का कारण मुख्यतया मनुष्य की अनुकरण प्रवृत्ति है । युवावर्ग में नई चुनौतियों तथा एडवेन्चर का आकर्षण भी इसका प्रधान कारण है । यद्यपि नई चुनौतियों का सामना करने की प्रवृत्ति स्वाभाविक कही जा सकती है । वह लाभप्रद भी है परंतु जब तक कि उसे सही दिशा न दी जा सके दिशा बोध के अभाव में यह पतन की ओर ही धकेलने वाली ज्यादा लगती है । ऐसी स्थिति में होता यह है कि युवा पीढ़ी बिना हानि लाभ का विचार किए इस जोखिम को उठा लेती है । पढ़ा लिखा युवक विश्व के विभिन्न राष्ट्रों की गतिविधियाँ तथा वातावरण से परिचित होने लगता है । पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति की चकाचौंध उसे मुग्ध कर लेती है । यूरोपीय देशों में इन दिनों हिप्पी और बीटल्स जो नशेड़ी संस्कृति के प्रतीक बने हैं, उनका नयापन युवकों को निश्चित रूप से प्रभावित करता है ।

आरंभ में धनी, समृद्ध तथा संपन्न वर्ग के लोग भी देखादेखी आँख मूँदकर इसे अपनाने लगे, सुरापान की प्रवृत्ति तो इतनी बढ़ी है कि साधन संपन्न परिवारों में इसे बड़प्पन की निशानी समझा जाने लगा है । उनकी संतानों को भी इससे अप्रभावित नहीं रखा जा सकता । फलस्वरूप वे 'दम मारो दम' की पंरपरा में अपने मातापिता से भी एक कदम आगे ही निकल जाते हैं । पिछड़ी कही जाने वाली जातियों में शराब आदि का प्रचलन था परंतु सुसंस्कृत परिवार और सभ्य वर्ग के लोग इन प्रवृत्तियों को त्याज्य ही समझते थे । कुछ भी हो पहले नशे का सेवन बुरा माना जाता था परंतु आज खुले आम पीना पिलाना सभ्यता का चिह्न माना जाता है । यह स्थिति बड़ी खतरनाक है ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विद्यामंदिरों में जहाँ तमाम प्रकार के व्यसनों से मुक्त रह कर सरस्वती की आराधना होती थी, वहीं आज के समय में सिगरेट ही नहीं शराब और अन्य दूसरे मादक द्रव्यों का सेवन प्रगतिशीलता का प्रमाण माना जाता है । ऐसी सभ्यता भी किस काम की जो स्वास्थ्य, बुद्धि, शक्ति और चेतना सब कुछ चौपट कर दे ।

आज व्यसन की इस प्रवृत्ति के विधिपूर्वक विरोध की आवश्यकता है । हमें इस संबंध में लोगों को उपरोक्त तथ्यों की जानकारियों का ज्ञान कराना होगा और उन्हें बताना होगा कि यह कोई शौक या फैशन की चीज नहीं । अपने को सभ्य प्रदर्शित करने का भी यह कोई तरीका नहीं है । जब लोगों की विचारधाराएँ और मान्यताएँ बदलेंगी तो यह रोग स्वयं जड़ से दूर हो जाएगा । व्यसन मुक्ति हेतु सभी समाज सेवी संस्थानों को निम्नकार्यक्रम क्षेत्र में चलाकर इस असुर पर विजय पाने हेतु सशक्त एवं प्रबल प्रहार किया जाना चाहिए ।

(१) व्यसनों के विरोध में एक वातावरण बनाने के लिए व्यसनों से दूर रहने वाले भाई–बहिनों को संगठित प्रयास हेतु एकत्र करना एवं व्यसन मुक्ति कार्यक्रमों में सहयोग हेतु तैयार करना ।

(२) प्रतिष्ठित एवं लोकप्रिय व्यक्तियों द्वारा समय–समय पर बस्तियों में जाकर विचार गोष्ठियाँ आयोजित करना एवं व्यसन ग्रसित व्यक्तियों को हानियाँ समझाकर अपने व्यक्तित्व के प्रभाव से उन्हें व्यसन मुक्त कराना ।

(३) पुरोहितों द्वारा घर–घर में संपन्न होने वाले कथा, सत्संग, यज्ञ एव पर्वों पर उपस्थित व्यक्तियों को व्यसन छोड़कर सुखी जीवन जीने हेतु प्रेरित करना । देव शक्तियों की उपस्थिति में इस दुष्प्रवृत्ति से मुक्त होने का संकल्प भावना प्रधान वातावरण में कराना ।

(४) साधु, संत एवं महात्माओं के प्रवचनों में इस दुष्प्रवृत्ति को छोड़ने का आह्वान करना या करवाना । विभिन्न उदाहरणों एवं तर्कों द्वारा व्यसनों की हानियों से अवगत कराना ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

(५) योग्य एवं समाज सेवा की भावना रखने वाले डाक्टर, वैद्यों द्वारा समय–समय पर विचारगोष्ठियाँ लेकर तथा शिविर लगाकर जन साधारण को इन दुष्प्रवृत्तियों से होने वाली शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक एवं सामाजिक हानियों से परिचित कराना एवं औषधियों के सहयोग से नशा उन्मूलन में सहयोग करना ।

(६) परिवार के सदस्य, बच्चे, पत्नी एवं घनिष्ठ मित्र, व्यसन ग्रसित व्यक्ति पर लगातार दबाव डालते रहें तो सफलता की आशा की जा सकती है ।

(७) व्यसन मुक्ति आंदोलनकारियों द्वारा बैनर झण्डे लेकर जुलूस निकालना, सरकार को मादक द्रव्यों के उत्पादन एवं सेवन पर कानूनी रोक लगाने हेतु ज्ञापन देना । जन प्रतिनिधियों द्वारा सरकार पर दबाव डलवाना ।

(८) नशा सेवन से दिल दहलाने वाली दुर्घटनाओं का संकलन किया जाए और उन्हें पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से मोटे अक्षरों में प्रकाशित किया जाए ।

(९) स्थानीय परिस्थितियों एवं संगठन की शक्ति के अनुसार शराबखाने, शराब की दुकानों, अन्य नशीले पदार्थों के ठेकों पर धरना, अनशन, घेराव, धिक्कार आदि कार्यक्रमों के माध्यमों से सफलता मिलने की बहुत संभावनाएँ हैं ।

(१०) युग निर्माण योजना, मथुरा द्वारा प्रकाशित ''व्यसन मुक्ति आंदोलन'' सैट की पुस्तकों को झोला पुस्तकालय, ज्ञानमंदिर अथवा बिक्री द्वारा जन–जन तक पहुँचा कर व्यसन ग्रस्तों के चिंतन में परिवर्तन करने का प्रयास करना चाहिए ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विवाहोन्माद प्रतिरोध आंदोलन

समाज का निर्माण परिवार से होता है और परिवार का विवाह से । हर नया विवाह एक नए परिवार की रचना करता है । यदि सभ्य, सुविकिसित, सुसंस्कृत समाज का निर्माण करना हो तो उसके लिए परिवारों के निर्माण पर ध्यान देना होगा । इस संदर्भ में यह आवश्यक है कि विवाह का शुभारंभ—श्रीगणेश ऐसे वातावरण में हो जो अंत तक मंगलमय परिणाम ही उत्पन्न करता रहे । कहते हैं कि अच्छी शुरूआत में सफलता की आधी संभावना सन्निहित रहती है । जिसका आरंभ ही दुर्बुद्धि एवं दुर्भावना के साथ होगा उसका विकास भी असंतोष और संघर्षों के बीच होगा और यह क्रम अंततः उसे असफल ही बना देगा ।

समाज निर्माण की आवश्यकता सर्वत्र अनुभव की जा रही है । हर कोई जानता है कि व्यक्ति और समाज का उज्ज्वल भविष्य इसी बात पर निर्भर है कि समाज में श्रेष्ठ परंपराएँ प्रचलित हों । कोई मनस्वी अपनी प्रतिभा से समाज का वातावरण बदलने में भी सफल होते हैं पर अधिकतर होता यह है कि समाज की जैसी भी स्थिति एवं परंपरा होती है उसी के अनुरूप व्यक्तियों का बनना और ढलना जारी रहता है । तदनुसार ही उस देश, समाज या जाति का उत्थान एवं पतन होता रहता है । यदि हमें नए समाज का निर्माण वस्तुतः करना हो तो उसके मूल "विवाह" पर अत्यधिक ध्यान देना होगा । उसमें जो विषमता, विशृंखलता एवं विकृति उत्पन्न हो गई है उसे सुधारना होगा ।

आज जिस ढंग से, जिस आडंबर, अहंकार और तामसी वातावरण में विवाह शादियाँ होती हैं, उन्हें देखकर किसी भी प्रकार यह नहीं कहा जा सकता कि यह दो आत्माओं के आत्म समर्पण के लिए आयोजित सर्वमेध यज्ञ का धर्मानुष्ठान है । उन दिनों तमोगुण की ही घटाएँ छाई रहती हैं । अश्लील गीत, गंदे नाच, ओछे मखौल, पान, बीड़ी, भाँग, शराब की धूम देखकर उसकी संगति यज्ञ से कैसे बिठाई जाए ?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

यह हल्का फुल्का धर्म कृत्य मानव जीवन की एक साधारण सी आवश्यकता है, पर वह इतना खर्चीला और उलझन भरा कदापि नहीं होना चाहिए कि आर्थिक दृष्टि से दोनों पक्षों का कचूमर ही निकल जाए। बारातियों की सर्वथा अनावश्यक भीड़ को इधर से उधर ठेले फिरने, उनके ठहराने, अनेक तरह की सुविधाएँ जुटाने एवं कीमती प्रीतिभोजों का खर्चीला भार उठाने में किसका क्या लाभ होता है ? यह समझ में नहीं आता। बाराती यह समझते हैं कि हमने अपना वक्त बर्बाद कर के और इतनी किल्लत उठाकर बेटे वाले पर अहसान किया। बेटे वाला बारात में लाने, ले जाने की कष्टसाध्य व्यवस्था जुटाता है। बेटी वाले का तो उनकी आव–भगत में कचूमर ही निकल जाता है। इस मूर्खतापूर्ण हंगामें का उस पवित्र धर्मानुष्ठान के साथ कोई तुक नहीं बैठता।

समस्या तो और भी भयानक तब सिद्ध होती है जब वर पक्ष की ओर से मोटी रकम दहेज के रूप में माँगी जाती है, उसे अपनी प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाया जाता है। नकदी, जेवर, सामान के रूप में यह माँग आमतौर से इतनी बड़ी होती है कि औसत आर्थिक स्थिति का कोई कन्या का पिता छाती पर पत्थर रखकर ही उसकी पूर्ति कर सकता है। जिन्हें दो चार कन्याओं के लगातार विवाह करने पड़ें हैं और जिनके पास कहीं से अनाप–शनाप आमदनी नहीं होती वे जानते हैं कि दहेज किस पिशाच का नाम है और उस कोल्हू में पेले जाने पर लड़की के परिवार का तेल किस करुण क्रंदन के साथ निकलता है। आज जो लड़के वाला बनकर दहेज माँगता है कल उसे भी अपनी लड़की का विवाह करने पर उसी चक्की में पिसना पड़ता है। इस दुर्गति को जानते हुए भी न जाने क्यों हमारी आँखें नहीं खुलतीं और रोते कलपते उसी दुर्दशा के कुचक्र में पिलते–पिसते रहते हैं।

कन्या पक्ष वाले भी अपने ढंग से लगभग दहेज से मिलती–जुलती दूसरी घात चलाते रहते हैं। उनकी प्रत्यक्ष न सही परोक्ष रूप से यह माँग अवश्य रहती है कि जितने अधिक जेवर, जितने अधिक कीमती कपड़े उसकी बेटी पर चढ़ाए जाएँ उतना ही अच्छा है। उसके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दरवाजे पर बेटे वाले अपनी अमीरी का अच्छा प्रदर्शन करें ताकि उसे यह शेखी जताने का मौका मिले कि उसकी लड़की कितने अमीर घर में ब्याही गई है । लड़की वालों की यह माँगें पूरी करने के लिए लड़के वालों को अपनी आर्थिक बर्बादी करनी पड़ती है । इसका बदला वे दहेज की माँग को बढ़ा-चढ़ा कर करते रहते हैं । इस प्रकार दोनों ही पक्ष न्यूनाधिक मात्रा में इस पाप में हाथ साने रहते हैं और विवाह का स्वरूप सब मिलाकर एक प्रकार से सामाजिक उन्माद जैसा बन जाता है । जिसके हृदय में देश, धर्म, समाज एवं संस्कृति के प्रति तनिक भी दर्द है उसे यही सोचने को विवश होना पड़ता है कि इस उन्माद का जितनी जल्दी अंत हो उतना ही अच्छा है ।

अब समय आ गया है कि हमें इस दिशा में कुछ ठोस कदम उठाना चाहिए । गायत्री परिवार का उत्तरदायित्व इस संबंध में बहुत अधिक है । उन्होंने नव निर्माण की जो शपथ ली है उसके अनुसार विवाहोन्माद को चुपचाप सहते रहना, उसका प्रतिरोध न करना किसी प्रकार उचित न होगा । उन्हें आगे बढ़कर कदम उठाने ही चाहिए । ''विवाहोन्माद प्रतिरोध आंदोलन'' का विधिवत् उद्घाटन किया जा रहा है । अब इस प्राणघातक सामाजिक बीमारी से भारतीय समाज को छुड़ाने के लिए हम लोग भावनाशील स्वयं सेवकों की तरह एक जुट होकर काम करेंगे । कुरीतियों की जड़ें बेशक गहरी होती हैं और वे देर में समूल नष्ट हो पाती हैं, पर इससे क्या ? जब अटूट निष्ठा के साथ काम किया जाएगा तो आज न सही तो कल उसका सत्परिणाम प्रस्तुत होगा ही ।

क्या करें, कैसे करें ?

(१) **आंदोलन में छात्र-छात्राओं को शामिल करें :** आंदोलन को विचारशील छात्रों और छात्राओं में, युवक-युवतियों में भी फैलाया जाना चाहिए । उनके कानों तक विवेक, न्याय और औचित्य की यह माँग पहुँचाई जानी चाहिए और उनकी सहृदयता, सज्जनता एवं विवेकशीलता को जगाया जाना चाहिए । यदि उन्हें वस्तुस्थिति समझाई जा सके तो उनका नया रक्त और नया विवेक बूढ़ों की रुढ़िवादिता और मूढ़ता की तुलना में अधिक प्रगतिशील सिद्ध हो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सकता है । अब हमारा प्रचारतंत्र वयस्क छात्रों की ओर अग्रसर होना चाहिए । उनसे व्यक्तिगत संपर्क बनाना चाहिए, गोष्ठियाँ बुलाई जानी चाहिए और छात्र संघों के कार्यकर्ताओं से मिलकर इस समग्र क्रांति के संघर्षात्मक आंदोलन में, विवाहोंन्माद विरोधी अभियान में, सहयोग देने के लिए अनुरोध करना चाहिए यह एक बहुत बड़ा कार्य है । इसकी आवश्यकता, उपयोगिता एवं अनिवार्यता यदि समझाई जा सके तो कोई कारण नहीं कि हमारा जोशीला नवयुवक वर्ग, जो बात की बात में बड़ी–बड़ी तोड़फोड़ करने के लिए तुला बैठा रहता है, इस अन्यायमूलक अनैतिकता से जूझने के लिए कटिबद्ध न हो जाए । कमी केवल इतनी ही है कि इस वर्ग में अभी तक प्रवेश नहीं किया गया और इस अविवेकपूर्ण मूढ़ता के दुष्परिणामों को ठीक तरह समझाया नहीं गया । यदि ऐसा किया गया होता तो उस मूढ़ता की अब तक धज्जियाँ उड़ गई होतीं । अब समय आ गया है कि छात्र वर्ग में प्रवेश किया जाए और उन्हें वस्तुस्थिति समझाई जाए । तत्संबंधी साहित्य उन्हें पढ़ाया जाना तथा जो सहमत हों उनसे प्रतिज्ञा कराया जाना, अपने आंदोलन का सबसे महत्वपूर्ण अंग होना चाहिए । अध्यापक वर्ग यदि चाहे तो इस संबंध में इतनी महत्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत कर सकता है कि देखते–देखते सामाजिक कायाकल्प उपस्थित हो सके ।

प्रयत्न यह होना चाहिए कि हर विद्यालय में यह विचारधारा तेजी से फैले और हर अविवाहित नवयुवक उससे प्रभावित होकर विवाहोन्माद प्रतिरोध आंदोलन में सम्मिलित हो । अपना निज का विवाह आदर्श रीति से ही करने के लिए कटिबद्ध हो, फिर भले ही उसके लिए उसे घरवालों का कितना ही विरोध क्यों न करना पड़े । हर घर में ऐसे प्रह्लाद उत्पन्न किए जाने चाहिए जो साहसपूर्वक अपने अभिभावकों को भी सन्मार्ग पर चलाने का सत्याग्रह कर सकने का साहस प्रदर्शित कर सकें । यह आंदोलन छात्राओं तक भी पहुँचना चाहिए । वे विवाहोन्माद से ग्रसित पागलों के साथ विवाह करने या उनके घर जाने की अपेक्षा अविवाहित रहना श्रेयस्कर मानें तो यह उनकी आदर्शवादिता एवं गर्व–गौरव भरी प्रतिज्ञा ही होगी ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(२) प्रतिज्ञा आंदोलन : यह आंदोलन छात्रों तक ही सीमित नहीं रखा जाना चाहिए वरन् हर नर नारी तक उसकी पुकार पहुँचाई जानी चाहिए, इसके लिए घर–घर अलख जगाया जाना चाहिए । एक क्रांतिकारी आंदोलन 'दहेज विरोधी अभियान' के रूप में इसी संगठित प्रयास के साथ आरंभ किया गया है । सर्वविदित है कि दहेज, जेवर और धूमधाम वाली शादियाँ अपने समाज की आर्थिक कमर तोड़ कर रख दे रही हैं । जो कमाया जाता है शादियों के कुचक्र में बरबाद होता रहता है । प्रत्यक्ष है कि खर्चीली शादियाँ हमें दरिद्र और बेईमान बनाती हैं । सुयोग्य कन्याओं का बिना विवाह के रह जाना, उत्पीड़न सहना और आग में जलाया जाना जैसे अनाचार इस विवाहोन्माद की ही देन है । संगठित प्रज्ञा मंडलों को मिल–जुलकर दहेज विरोधी आंदोलन खड़ा करना चाहिए ।

इस हेतु एक प्रतिज्ञा आंदोलन चलाया जाना है । अभिभावक प्रतिज्ञा करें कि वे अपने पुत्रों का विवाह बिना दहेज जेवर के नितांत सादगी के साथ ही करेंगे । यही बात समझदार लड़की लड़कों पर लागू होनी चाहिए । उन्हें भी इस प्रकार की प्रतिज्ञा करने के लिए प्रभावित प्रोत्साहित किया जाना चाहिए । इस प्रकार एक बड़ा परिवार जैसा बन जाए जो आदर्शवादिता को महत्व दे और इस कमर तोड़ दुष्टता का भरपूर विरोध करे ।

(३) खर्चीली शादियों का बहिष्कार : विरोध का एक आसान तरीका यह है कि धूमधाम वाली शादियों में सम्मिलित होने का बहिष्कार किया जाए । भले ही वे अपने कुटुंबियों, संबंधियों के यहाँ ही क्यों न हो रही हों । यह विरोध भी चर्चा का विषय बनेगा और आगे चलकर अनेकों को नए सिरे से सोचने के लिए विवश करेगा ।

(४) उपजातियों की कट्टरता कम हो : इस संदर्भ में एक बात और भी सोची जा सकती है कि उपजातियों की कट्टरता को कम किया जाए और एक बड़ी जाति के अंतर्गत शादियाँ करने की छूट पंचायत स्तर पर घोषित की जाए । यह पहला कदम आगे चलकर अपना दायरा और भी विस्तृत करेगा । अभी तो उपजातियों का बंधन ही इतना बड़ा अवरोध बना हुआ है कि उस कारण योग्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लड़की लड़कों का जोड़ा मिलना ही कठिन-हो रहा है । उपजातियों की छोटी परिधि भी लड़कों की दहेज की बोली बढ़ाने का एक बहुत बड़ा कारण है । यदि यही दायरा बढ़कर बड़ी जाति की सीमा में भी विस्तृत हो जाए तो भी लड़की लड़कों के शादी संबंध इतने कठिन न रहें जितने अब हैं ।

(५) **स्वयंसेवी संस्थाओं का दायित्व** : संस्थाएँ अपने कार्यक्रमों का महत्वपूर्ण अंग यदि विवाहोन्माद के निराकरण को मान लें और अपनी गतिविधियों में इस प्रक्रिया को भी जोड़ लें और देश में बिखरे हुए अनेक धार्मिक, सामाजिक संगठन थोड़ा–थोड़ा भी प्रयत्न करें तो सब मिलाकर बहुत काम हो सकता है ।

(६) **प्रगतिशील जातीय संगठनों का दायित्व** जातीय पंचायतें फैसले करें, प्रस्ताव पास करें कि उनके वर्ग में विवाहों की खर्चीली प्रथा बंद की जाएगी और अगणित मूढ़ताओं भरे रीति रिवाजों का बहिष्कार कर अति सादगी और मितव्ययितापूर्वक विवाह शादी किए जाएँगे । हर वर्ग अपनी संकीर्णता को घटाए और विशालता को बढ़ाए तो उसे उपजातियों को मिलाकर एक बड़ी जाति मात्र रहने देने की उपयोगिता हर दृष्टि से विवेकपूर्ण एवं हितकर दिखाई देगी । जातीय पंचायतें यदि यह सुधारात्मक कार्य हाथ में लें और पूरा करने में जुट पड़ें तो वे अपने अस्तित्व की उपयोगिता सिद्ध कर सकती हैं अन्यथा संकीर्णता एवं विभेद की खाई चौड़ी करने वाली विडंबनाओं में ही उनकी गणना होती रहेगी ।

(७) **प्रेस का दायित्व** : देश में अनेक पत्र पत्रिकाएँ निकलती हैं और उसमें से सभी सुधारवाद, विवेक एवं औचित्य का समर्थन करती हैं । अच्छा हो सभी एक न्यूनतम संयुक्त कार्यक्रम बनाकर उसमें विवाहोन्माद के प्रतिरोध एवं आदर्श विवाहों की परिपाटी चलाने को प्राथमिकता देने लगें । सभी पत्र इस संदर्भ में लोकमत जागृत करें और प्रचलित रूढ़िवादिता को हटाने के लिए एक व्यवस्थित आंदोलन खड़ा कर दें । मूढ़ता की हानियाँ और दूरदर्शिता की आवश्यकता को यदि कहानी, कविता, समाचार, लेख आदि माध्यमों से प्रस्तुत करना आरंभ कर दें तो इस दिशा में लोकमत जगाया जा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सकता है और प्रचलित लोगों के मस्तिष्क पर विवाहोन्माद का चढ़ा हुआ नशा उतारा जा सकता है ।

लेखक, कवि एवं प्रकाशक ऐसे साहित्य का सृजन एवं प्रसारण कर सकते हैं जो विवाह व्यवसाय के रोमांचकारी दुष्परिणामों से परिचित कराएँ और इस पद्धति के विरुद्ध घृणा एवं रोष उत्पन्न करें । वक्ता और गायक अपनी वाणी से समाज की इस भ्रष्ट प्रणाली पर तीखे प्रहार कर सकते हैं और जनमानस में यह तथ्य एवं तर्क प्रतिष्ठित कर सकते हैं कि बिना दहेज, बिना जेवर, बिना धूमधाम के अति सरल और सादा विवाह उत्सवों का प्रचलन ही अनीति की कमाई करने एवं दिन-दिन दरिद्र बनते जाने की विभीषिका से छुड़ा सकता है ।

(८) **धर्मतंत्र का दायित्व** : मंदिरों, मठों, पंडित, पुरोहितों एवं धर्म संप्रदायों के केन्द्र यदि इस प्रकार की प्रतिष्ठा को ही धर्म की सच्ची सेवा मान लें और इस संदर्भ में अपने प्रभाव का उपयोग करें तो भी बहुत कुछ सत्परिणाम की आशा की जा सकती है । इस प्रकार के आदर्श उपस्थित करने वालों का सार्वजनिक अभिनंदन एवं पत्र पत्रिकाओं में सराहना छापने से भी विचारशील लोगों को प्रभावित किया जा सकता है । दुराग्रहियों की निंदा एवं भर्त्सना का कुछ क्रम चलता रहे, उन पर धिक्कार पड़ती रहे और आलोचना होती रहे तो भी इस गलित कुष्ठ जैसी महामारी के निवारण का बहुत कुछ प्रबंध हो सकता है ।

(९) **मैरिज ब्यूरो खोले जाएँ** युग निर्माण योजना के जिलास्तरीय संगठन द्वारा मैरिज ब्यूरो की स्थापना की जाए । यहाँ विवाह योग्य लड़के व लड़कियों का पूर्ण विवरण अन्य जिलों के संगठनों को भी भेजा जाए ताकि उपयुक्त संबंध खोजने में सभी परिजनों को सुविधा हो ।

(१०) **खर्चीली शादियों का आंदोलनात्मक प्रतिरोध** सामूहिक सबल संगठन 'युग सेना' का गठन कर खर्चीली शादियों का प्रतिरोध सत्याग्रह, जुलूस, नारेबाजी आदि के द्वारा भी किया जाए । स्थानीय परिस्थितियों को ध्यान में रखकर प्रतिरोध के कार्यक्रम बनाए जाएँ । सभी प्रयासों एवं उपलब्धियों से केन्द्र को भी अवगत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कराया जाए ताकि सफलता के समाचारों से अन्य परिजनों को भी आगे आने की प्रेरणा मिले ।

(११) **खर्चीली शादियों एवं दहेज के विरोध में जनमत तैयार करना** : इस हेतु युग निर्माण योजना द्वारा प्रकाशित 'विवाहोन्माद प्रतिरोध आंदोलन' सैट की पॉकेट बुक्स झोला पुस्तकालय, ज्ञान मंदिर अथवा बिक्री द्वारा जन–जन को स्वाध्याय हेतु उपलब्ध कराई जाए ताकि जनमत स्वयं आदर्श विवाहों का समर्थन हेतु तैयार हो सके । समस्या का स्थायी हल तब ही होगा जब जन मानस इसे हृदय से स्वीकार करेगा ।

(१२) **युवक युवती सम्मेलन** : प्रगतिशील जातीय संगठनों को समय–समय पर विवाह योग्य युवकों एवं युवतियों के सम्मेलन कराने चाहिए ताकि संबंध मिलने में आसानी हो । आयोजकों एवं अन्य सम्मानित व्यक्तियों को भी इसमें अपने परिवार के बच्चों सहित भाग लेना चाहिए ।

(१३) **सामूहिक विवाह आयोजन** : विवाहों में होने वाली फिजूलखर्ची को रोकने का एक सशक्त माध्यम सामूहिक विवाह है । सम्मानित व्यक्तियों को ऐसे आयोजनों में अपने बच्चों की शादियाँ कराकर आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए ताकि अन्य समाज के व्यक्ति भी उनका अनुकरण करें ।

उपाय अनेक हैं । रास्ते बहुत हैं । आवश्यकता उन पर चलने के लिए प्रयास करने की और ऐसे उदाहरण प्रस्तुत करने की है जिनका अनुकरण करने के लिए सर्वसाधारण का उत्साह जगाया जा सके । प्रबुद्ध वर्ग का उत्तरदायित्व एवं कर्तव्य है कि अपने समय की दुष्प्रवृत्तियों से जूझने और सत्प्रवृत्तियों की प्रतिष्ठापना करने के लिए समय निकाला जाए और अपने प्रभाव एवं चातुर्य का ऐसा उपयोग करें जिससे अपने समय की इस सबसे अधिक कष्टकारक दुष्प्रवृत्ति का उन्मूलन संभव हो सके । इस दिशा में युग निर्माण योजना के प्रबुद्ध परिजनों को आगे बढ़कर नेतृत्व करना चाहिए और समय की माँग को पूरा करने के लिए जो भी प्रयत्न संभव हो उसे कार्यान्वित करने के लिए आगे आना चाहिए ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

युग निर्माण योजना के परिजन इस पुनीत प्रक्रिया को अपने घर परिवार से आरंभ करके उसे समाजव्यापी, देशव्यापी बना सकते हैं । पहल लड़के वालों को करनी चाहिए । यों हर घर में कन्याएँ भी विवाह के लिए होती हैं और लड़के भी, पर जिनके लड़के विवाह योग्य हो गए हैं, पहल उन्हीं के हाथ में है । वह यदि अपने सुयोग्य लड़के का विवाह बिना दहेज करने को तैयार हों तो लड़की वाले उसका सहज ही स्वागत करेंगे और जिनकी आर्थिक स्थिति दुर्बल है वे इस सुविधा के लिए अपना भाग्य सराहेंगे, उस उदार व्यक्ति के कृतज्ञ रहेंगे तथा ईश्वर को धन्यवाद देंगे । लड़के वाले पहल करके इस अनाचार को मिटाने में महत्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत कर सकते हैं । उन्हें यही करना भी चाहिए । अपने परिवार में जितने भी लड़के विवाह योग्य हैं उन सबके अभिभावकों तथा स्वयं उन लड़कों का कर्तव्य है कि वर्तमान अनाचार को मिटाने के लिए साहसपूर्ण कदम बढ़ाएँ और पहल करें ।

जहाँ आदर्श रीति से विवाह हों उनका अधिकाधिक प्रचार किया जाए और ऐसे आदर्शवादियों का सार्वजनिक अभिनंदन पूरे उत्साह के साथ किया जाए । जो भी अन्य तरीके सूझ पड़ें उन्हें सोचा जाना चाहिए और अपने–अपने ढंग से सर्वत्र विवाहोन्माद विरोधी आंदोलन को पनपाने के लिए भूमिका तैयार करनी चाहिए । युग की यह माँग और पुकार आज की घड़ी में अत्यंत महत्वपूर्ण एवं आवश्यक है, उसे पूरा करने के लिए हम में से हर एक को पूरी तत्परता और निष्ठा के साथ प्रयत्न करना चाहिए ।

विवाहोन्माद प्रतिरोध आंदोलन आज के हिन्दू समाज की सबसे बड़ी एवं सबसे प्रमुख आवश्यकता है जिसकी पूर्ति के लिए हमें अगले दिनों बहुत कुछ करना होगा । हमारा यह प्रयत्न निश्चित रूप से सफल होगा । अगले दिनों हवा बदलेगी और आज की खर्चीली वैवाहिक कुरीतियाँ अगली पीढ़ी वालों के लिए एक कौतूहल की बात रह जाएँगी । कुछ वर्षों बाद भावी संतान को यह खोज करनी पड़ेगी कि हमारे पूर्वज थे तो बुद्धिमान पर ऐसी मूर्खतापूर्ण रीति रिवाज के जंजाल में फँसकर इतना कमर तोड़ अपव्यय आखिर करते क्यों थे ? ▣

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परिजन, प्रामाणिकता सिद्ध करें

विश्व शांति की समस्त संभावनाएँ मानव जाति के भावनात्मक नव निर्माण पर अवलंबित हैं । एकमात्र कारण यह है कि जन मानस में स्वार्थपरता की पूर्ति के लिए निकृष्ट दुष्कर्म करने पर उतारू हो गए । विचारणा का स्तर गिर जाने से व्यक्ति अनीति अपनाने लगता है और जहाँ कुकर्मों की वृद्धि हुई—अवांछनीयता पनपी कि अगणित विपत्तियाँ सर्वनाशी संकट उत्पन्न करने दौड़ीं । आज भी ऐसा ही कुछ हो रहा है ।

प्रस्तुत अवांन्छनीयता को बदलने का एक ही उपाय है कि जनमानस में उत्कृष्ट विचारणा का अभिवर्धन किया जाए और आदर्शवादिता अपनाने की प्राचीनकाल जैसी स्वस्थ प्रतिस्पर्द्धा पैदा की जाए । जहाँ सत्प्रवृत्तियाँ पनपीं, सद्भावनाएँ बढ़ीं वहाँ सर्वतोमुखी सुख शांति, प्रगति और समृद्धि का वातावरण सहज ही उत्पन्न होने लगेगा । उत्कृष्ट विचारणा और आदर्शवादी रीतिनीति के अपनाने के लिए जनमानस को तैयार करना अपने समस्त प्रयत्नों का एक मात्र उद्देश्य है । इन प्रयत्नों में आशाजनक सफलता, सेवाभावी सज्जनों के सक्रिय संगठन द्वारा प्राप्त की जा सकती है ।

युग निर्माणर आंदोलन का अंतिम सोपान—संघर्ष

पूज्यवर ने मई ७१ में लिखा है—"हमारा तीसरा प्रत्यक्ष आंदोलनात्मक, संगठनात्मक, सृजनात्मक एवं संघर्षात्मक कार्यक्रम गायत्री तपोभूमि से चलेगा । अब हम अपने पीछे सृजनात्मक और संघर्षात्मक कार्यक्रमों को चलाते रहने के लिए एक टीम गायत्री तपोभूमि में छोड़े जा रहे हैं । इस टीम का नेतृत्व करने के लिए हमने श्री लीलापत शर्मा को नियुक्त कर दिया है । तपोभूमि की व्यवस्था, शाखाओं का संगठन तथा क्षेत्रीय कार्यक्रमों को भी वे ही संभालेंगे । उन्हें हमारा प्रतिनिधि माना जाए । यह फैसला हमने बहुत सोच समझकर किया है । हमें आशा है कि सर्वत्र उन्हें बड़े भाई की तरह हमारे संगठनात्मक उत्तराधिकारी की तरह ही स्वीकारा जाएगा और व्यवस्थात्मक अनुशासन रखा जाएगा ।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पूज्य गुरुदेव द्वारा सौंपे गए उत्तरदायित्वों के अनुपालन में हम सर्वप्रथम इस संघर्ष की वेला में अपने सभी वरिष्ठ और कनिष्ठ भाई बहिनों को एकता एवं आत्मीयता के सूत्र में संघ बद्ध होने का आह्वान करना चाहते हैं । सामान्य समय होता तो स्नेहवश उनकी अवांछनीय गतिविधियों को अनेदेखा किया जा सकता था, लेकिन इस असामान्य आपातकालीन वेला में सभी भाई–बहिनों को अपने अहं, पदलिप्सा, ईर्ष्या, द्वेष, मनोमालिन्य, मनमुटाव आदि को त्याग कर एकजुटता का परिचय देना चाहिए । यह समय शिकवे शिकायत अथवा वादविवाद करने का नहीं है । इस समय तो बस एकमात्र अभिलाषा यही होनी चाहिए कि हम अपने आराध्यदेव पूज्य गुरुदेव के आदेशों का पालन करने में सबसे आगे रहें और प्रामाणिकता की कसौटी पर खरे उतरें । संघर्ष तो लंबा चलेगा लेकिन बीच–बीच में संघर्ष की उपलब्धि, समालोचना, पुनिर्विचार, नवीन मोर्चों पर चिंतन एवं शक्ति अर्जित करने हेतु विश्राम भी मिलता रहेगा । इन विश्राम की घड़ियों में परिजन उन तथाकथित वरिष्ठ युग सैनिकों को अवश्य याद करेंगे जो गत कई दशाब्दियों से इक्कीसवीं सदी उज्ज्वल भविष्य का स्वप्न तो दिखाते रहे लेकिन जब संघर्ष की वेला आई तो सौ बहाने बनाकर अपने बिल में घुस गए । उस वक्त ऐसे लोग कहीं मुँह दिखाने लायक भी नहीं रह जाएँगे । पूज्य गुरुदेव ने हमें शानदार जीवन जीना सिखाया, त्याग और बलिदान का जीवन जीना सिखाया, आदर्शों और सिद्धांतों पर जीना और मरना सिखाया । अनीति से लोहा लेने का संकल्प हमसे कराया । हम उस युग पुरुष, क्रांतिकारी सिंह के बच्चे उनके आदर्शों पर चलकर आत्म गौरव अनुभव करेंगे । हम उनके बताए मार्ग से मुँह मोड़ कर कायर नहीं कहलाएँगे । जो आश्वासन हमने अपने इष्ट पूज्य गुरुदेव को दिया है, जो उत्तरदायित्व उन्होंने हमें सौंपे हैं उनको पूरा करने में किसी भी त्याग और बलिदान से पीछे नहीं हटेंगे ।

अपने परिवार में सम्मिलित व्यक्तियों की संख्या करोड़ों तक पहुँच गई है, लेकिन उनमें से वास्तविक और दिखावटी की परख ठीक तरह नहीं हो सकी और यह पता नहीं लग सका कि इनमें से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कितने कर्मठ और निष्ठावान व्यक्ति हैं और कितने वाक्शूर । समय आ गया है कि ऐसी छाँट कर ली जाए और सजीव कर्मठों की संख्या के आधार पर ही भावी आंदोलनात्मक कदम उठाए जाएँ । पूज्य गुरुदेव की प्रेरणा से गायत्री जयंती (पूज्यवर का महाप्रयाण दिवस) से अपने आराध्य देव के चरणों में श्रद्धांजलि स्वरूप सात सूत्रीय रचनात्मक एवं संघर्षात्मक कार्यक्रम निम्नलिखित तीन चरणों में प्रारंभ किया जा रहा है । प्रथम चरण–कुरीति उन्मूलन के लिए मानसिक तैयारियाँ, द्वितीय चरण–प्राणवान परिजनों का संगठन तथा तृतीय चरण–संघर्ष । इन कार्यक्रमों की विस्तृत एवं प्रारंभिक रूपरेखा इस पुस्तक में दी जा रही है । इस पुस्तक को आप पूर्ण मनोयोग से चिंतन मनन के साथ तीन बार पढ़ें तथा अन्य भाई बहिनों को भी पढ़ाएँ । अब समय कुछ कर गुजरने का आ गया है । अवांछनीयता के निवारण हेतु गाँधी जी के सत्याग्रह, मजदूरों के घिराव, चीनी कम्युनिस्टों की सांस्कृतिक क्रांति के कडुए अनुभवों को ध्यान में रखते हुए एक ऐसी समग्र योजना पूज्य गुरुदेव ने दी है जिससे अराजकता भी न फैले और अवांछनीय तत्वों को बदलने के लिए विवश किया जा सके । यह संघर्ष महामानवों, लोकसेवियों और युग निर्माणियों द्वारा लड़ा जाएगा । इसके लिए सैनिकों को नैतिक, चारित्रिक प्रामाणिकता सिद्ध करनी होगी । इन आंदोलनों को चलाने के लिए हमें युग ऋषि के आदर्शों में निष्ठा प्रमाणित कर सकने वाले शूरवीरों की आवश्यकता होगी । भीड़ का जुगाड़ बेकार सिद्ध होगा । मुर्दों का पहाड़ इकट्ठा करने पर तो बदबू ही फैलेगी । जो स्वयं ही तप त्याग कर सकने में असमर्थ होंगे वे आखिर दूसरों से त्याग बलिदान करने की बात किस मुँह से कह सकेंगे । अब गाल बजाने वालों का जमाना चला गया । बढ़–चढ़कर बोलने और लिखने से जनता का मनोरंजन मात्र ही हो सकता है । प्रभाव उनका पड़ता है जो कुछ स्वयं करते हैं । जनमानस को त्याग बलिदान की प्रेरणा दे सकने की आवश्यकता केवल वे ही लोग पूरी कर सकेंगे जो पहले अपने जीवन में वैसा कुछ कर सकने की अपनी प्रामाणिकता सिद्ध कर चुके होंगे ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पूज्य गुरुदेव ने हमें आश्वस्त करते हुए लिखा है, ''अगले वर्षों में वर्तमान परिस्थितियों में आमूल–चूल नहीं तो आकाश–पाताल जैसा अंतर हो जाएगा । अनैतिकता, असामाजिकता और अदूरदर्शिता से भरी वर्तमान परिस्थितियाँ देर तक न टिक सकेंगी । युग निर्माण का महान आंदोलन प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से संसार के हर व्यक्ति को प्रभावित करेगा, झकझोरेगा, उठाकर खड़ा करेगा और जो उचित वांछनीय और विवेकपूर्ण है उसे ही अपनाने को बाध्य करेगा । सन् २००० तक वह सब कुछ दीखने लगेगा जिसके अनुसार युग परिवर्तन को प्रत्यक्ष अनुभव किया जा सके । इस बीच महती घटनाएँ घटेंगी, भारी संघर्ष होंगे, पाप बढ़ेगा और उसकी प्रतिक्रिया नए सिरे से सोचने और नई रीति–नीति अपनाने के लिए जन जागरण को विवश करेगी । बदलाव के अतिरिक्त और कोई मार्ग न रहेगा । मनुष्य को अपने तौर तरीके बदलने होंगे । युग निर्माण की वर्तमान चिनगारियाँ विश्वव्यापी दावानल की तरह प्रचंड होंगी और उसमें आज की अनीति एवं अवांछनीयता जलकर होलिकादहन की तरह नष्ट हो जाएगी ।''

रचनात्मक और संघर्षात्मक अभियानों का जो दायित्व युग सैनिकों पर आ पड़ा है उसे सहर्ष पूरा करने को तत्पर रहना होगा । कोई भी सच्चा युग सैनिक इस महाभारत में भागीदार बने बिना बच नहीं सकता । यदि इस स्तर के सैनिक कृपणता बरतेंगे तो उन्हें बहुत मँहगी पड़ेगी । लड़ाई के मैदान से भाग खड़े होने वाले भगोड़े सैनिकों की जो दुर्दशा होती है, उनकी भी उससे कम न होगी । चिरकाल बाद युग परिवर्तन की पुनरावृत्ति हो रही है । रिजर्व फोर्स के सैनिक मुद्दतों से मौज मजा करते रहे । कठिन प्रसंग सामने आया तो कतराने लगे, यह अनुचित है । परिजन एकांत में बैठकर अपनी वस्तुस्थिति पर विचार करें कि वे अन्नकीट और भोग कीटों की पंक्ति में बैठने के लिए नहीं जन्मे हैं । उनके पास जो आध्यात्मिक संपदा है वह निष्प्रयोजन नहीं है । अब उसे अभीष्ट विनियोग में लगाने का सही समय आ गया है, सो उसके लिए अग्रसर होना ही चाहिए ।

युग निर्माण आंदोलन का कार्यक्षेत्र समस्त विश्व है और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

परिवर्तन सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक सभी क्षेत्रों में करने हैं । इसके लिए कितने सृजनात्मक और संघर्षात्मक मोर्चे खोलने की आवश्यकता पड़ेगी इसकी कल्पना करके सिर चकरा सकता है । वर्तमान की अस्तव्यस्तता को सुव्यवस्थित करना, समस्त पृथ्वीवासी ६ अरब व्यक्तियों के चिंतन में उत्कृष्टता भरना एक निस्संदेह बहुत बड़ा ऐतिहासिक काम है लेकिन यह एक अवश्यंभावी प्रक्रिया है जिसे महाकाल अपने ढंग से नियोजित कर रहे हैं । यह एक सपना नहीं सचाई है जिसे अगले दिनों हर कोई मूर्तिमान होते हुए देख सकेगा । इसे भविष्यवाणी न समझें । यह वस्तुस्थिति है जिसे दूरदृष्टा अपनी आँखों पर चढ़ी दूरबीन से प्रत्यक्ष देख रहे हैं । कल वह निकट आ पहुँचेगी और हर कोई प्रत्यक्ष देख सकेगा । अगले दिनों समग्र परिवर्तन का एक तूफान बढ़ता चला आ रहा है जो इस सड़ी दुनिया को समुन्नत बना कर ही शांत होगा ।

कसौटी पर खरे उतरें :

परीक्षा का समय कभी–कभी आता है जिसमें यह सिद्ध हो जाता है कि सिद्धांतों और आदर्शों के प्रति आपकी आस्था कितनी वास्तविक थी । कोई आदर्शवादी धर्म एवं अध्यात्म की बात तो बहुत करे पर परीक्षा का समय आने पर इधर–उधर छिपा रहे तो उसकी आस्था संदिग्ध ही मानी जाएगी । अपने लिए धन–दौलत और बेटा–पोता की कामना से माला घुमाते रहने का नाम भजन नहीं है । भक्ति का प्रमुख चिह्न यह है कि जिसे ईश्वर से प्रेम हो वह उसकी दुनिया को अधिक सुन्दर, व्यवस्थित और विकसित बनाने में बड़ा योगदान करे । इस दिशा में किया गया त्याग–बलिदान ही किसी व्यक्ति के प्रबुद्ध, जागृत, आदर्शवादी, ईश्वर भक्त एवं धर्मात्मा होने का चिह्न हो सकता है, चिरकाल बाद ऐसा समय आया है । जब जन साधारण की भीड़ में छिपे हुए नर रत्नों, महामानवों एवं अध्यात्मवादियों को आगे आने और चमकने का अवसर मिलेगा । जो पूजा पाठ की थोड़ी चिह्न पूजा करके ही स्वर्ग, मुक्ति और ईश्वर दर्शन के सपने देखते रहे अब उनकी सचाई और आस्था अग्नि परीक्षा की कसौटी पर कसी जा रही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

है । यदि वे कष्ट साधना–कर्तव्यों से कतराते हैं तो मुलम्मा चढ़े सोने की तरह इस परख में उनकी कलई जनता जनार्दन के सामने उतर जाएगी ।

एक आह्वान :

युग निर्माण के आंदोलनात्मक कदम सफलतापूर्वक उठाए जा सकें इसके लिए पूज्य गुरुदेव ने एक ऐसे समर्थ संगठन की नींव रखी जिसमें सजीव और सक्रिय स्तर के कार्यकर्ताओं का वर्ग ही सम्मिलित रहे । इन दिनों हम इस संगठन को पुनः सक्रिय कर इस का पुनर्गठन करने लगे हैं । अपने परिवार एवं मिशन के प्रभाव क्षेत्र से जुड़े करोड़ों व्यक्तियों में से उन्हें छाँटना चाहते हैं जिन्हें धर्म और अध्यात्म के, लोकमंगल और कर्तव्य निष्ठा के आदर्शों पर आस्था हो । जो मानव जाति को वर्तमान दुर्दशा से उबारने और धरती पर स्वर्ग अवतरित करने को ऐतिहासिक नव निर्माण अभियान में भाग लेना चाहते हों, ऐसे युग सैनिकों को युग सेना का अंग अवश्य बनना चाहिए । ऐसे युग सैनिकों को मथुरा से शपथ पत्र मँगाकर, भरकर अवश्य भेजना चाहिए । लेकिन शपथ पत्र सोच समझकर ही भरें । जिनके हृदय में पूज्य गुरुदेव के सपनों को साकार करने की टीस हो, वे ही शपथ पत्र भरें अन्यथा गायत्री माता और पूज्य गुरुदेव को धोखा देने का अपराध न करें । शपथ पत्र भरने वाले सभी युग सैनिकों को चाहिए कि गाँव–गाँव, मुहल्ले–मुहल्ले में गोष्ठियाँ आयोजित कर योजना प्राणवानों को समझाएँ तथा इन आंदोलनों में आस्था रखने एवं सहयोग देने हेतु तत्पर व्यक्तियों के शपथ पत्र भरवा कर अपना स्थानीय संगठन मजबूत करें । यों संगठन बाद में विस्तृत होता रहेगा लेकिन आधारभूत संगठन जिलास्तर पर युग सेना का गठन शीघ्र पूरा कर लिया जाए ।

एक अनुरोध :

युग सैनिकों से यह अनुरोध है कि वे अपने क्षेत्र के साहित्यकारों, कवियों, कलाकारों, पत्रकारों, समाजसेवियों, विचारशील परिजनों के साथ गोष्ठियाँ करें, उन्हें पुस्तक पढ़ाकर उनके सुझाव, विचार एवं मार्गदर्शन इन आंदोलनों की सफलता हेतु हमें भेजने का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रयास करें । इन्हीं सुझावों के आधार पर हम आगामी आंदोलन की रूपरेखा परिजनों को भेजते रहेंगे ।

विशेष ज्ञातव्य :

परिजनों से बड़े स्पष्ट शब्दों में अनुरोध किया जा रहा है कि आंदोलन पूर्णरूपेण अहिंसात्मक होना चाहिए । हमारा उद्देश्य अवांछनीयता का उन्मूलन है । किसी के प्रति द्वेष, ईर्ष्या, दुश्मनी अथवा कलह मोल लेकर अपने प्रतिद्वन्द्वी तैयार करने से यथाशक्ति बचा जाए । प्रतिरोध, घेराव, अनशन, प्रदर्शन आदि स्थानीय परिस्थितियों एवं संगठन की शक्ति को देखकर ही किए जाएँ । असहयोगात्मक, कार्यक्रमों को प्रमुखता दी जाए । स्थानीय स्तर पर अन्य समाज सेवी एवं समाज सुधारक संस्थाओं के साथ मिलकर स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप आंदोलन की रूपरेखा बना कर कार्य किया जाए ।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा (उ.प्र.)

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।
- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्दघोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्‌बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्‌भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar
Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org